राजस्थान-भारती प्रकाशन

दळपत विलास

सपादक

रावत सारस्वत



प्रकाशक

सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट

बीकानेर

प्रकाशक
सादूळ राजस्थानी रिसर्च इंस्टीट्यूट
बीकानेर (राजस्थान)

प्रथम संस्करण
सन् १९६० ई.
मूल्य — ३.२५ न.पै.

मुद्रक
अजन्ता प्रिंटर्स, जयपुर

अनुक्रमणिका

प्रकाशकीय

श्री सादूल राजस्थानी रिसर्च-इन्स्टीट्यूट बीकानेर की स्थापना सन् १९४४ में बीकानेर राज्य के तत्कालीन प्रधान मन्त्री श्री के० एम० पणिक्कर महोदय की प्रेरणा से, साहित्यानुरागी बीकानेर-नरेश स्वर्गीय महाराजा श्री सादूलसिंहजी बहादुर द्वारा संस्कृत हिन्दी एवं विशेषतः राजस्थानी साहित्य की सेवा तथा राजस्थानी भाषा के सर्वाङ्गीण विकास के लिये की गई थी।

भारतवर्ष के सुप्रसिद्ध विद्वानों एवं भाषाशास्त्रियों का सहयोग प्राप्त करने का सौभाग्य हमें प्रारम्भ से ही मिलता रहा है।

संस्था द्वारा विगत १६ वर्षों से बीकानेर में विभिन्न साहित्यिक प्रवृत्तियां चलाई जा रही हैं, जिनमें से निम्न प्रमुख हैं—

१ विशाल राजस्थानी हिन्दी शब्दकोश

इस सम्बन्ध में विभिन्न स्रोतों से संस्था लगभग दो लाख से अधिक शब्दों का संकलन कर चुकी है। इसका सम्पादन आधुनिक कोशों के ढंग पर, लंबे समय से प्रारम्भ कर दिया गया है और अब तक लगभग तीस हजार शब्द सम्पादित हो चुके हैं। कोश में शब्द, व्याकरण, व्युत्पत्ति, उसके अर्थ और उदाहरण आदि अनेक महत्वपूर्ण सूचनाएं दी गई हैं। यह एक अत्यन्त विशाल योजना है, जिसकी सन्तोषजनक क्रियान्विति के लिये प्रचुर द्रव्य और श्रम की आवश्यकता है। आशा है राजस्थान सरकार की ओर से, प्रार्थित द्रव्य-साहाय्य उपलब्ध होते ही निकट भविष्य में इसका प्रकाशन प्रारम्भ करना सम्भव हो सकेगा।

२ विशाल राजस्थानी मुहावरा कोश

राजस्थानी भाषा अपने विशाल शब्द भंडार के साथ मुहावरों से भी समृद्ध है। अनुमानतः पचास हजार से भी अधिक मुहावरे दैनिक प्रयोग में लाये जाते हैं। हमने लगभग दस हजार मुहावरों का, हिन्दी में अर्थ और राजस्थानी में उदाहरणों सहित प्रयोग देकर सम्पादन करवा लिया है और शीघ्र ही इसे प्रकाशित करने का प्रबन्ध किया जा रहा है। यह भी प्रचुर द्रव्य और श्रम-साध्य कार्य है।

यदि हम यह विशाल संग्रह साहित्य-जगत को दे सके तो यह संस्था के लिये ही नहीं किन्तु राजस्थानी और हिन्दी जगत के लिये भी एक गौरव की बात होगी।

३. आधुनिक राजस्थानी रचनाओं का प्रकाशन

इसके अंतर्गत निम्नलिखित पुस्तकें प्रकाशित हो चुकी हैं:—

१. **कळायण,** ऋतु काव्य। ले० श्री नानूराम संस्कर्ता।
२. **आभै पटकी,** प्रथम सामाजिक उपन्यास। ले० श्री श्रीलाल जोशी।
३. **वरस गांठ,** मौलिक कहानी संग्रह। ले० श्री मुरलीधर व्यास।

'राजस्थान-भारती' मे भी आधुनिक राजस्थानी रचनाओ का एक अलग स्तम्भ है, जिसमें भी राजस्थानी कवितायें. कहानियां और रेखाचित्र आदि छपते रहते हैं।

४. 'राजस्थान-भारती' का प्रकाशन

इस विख्यात शोधपत्रिका का प्रकाशन संस्था के लिये गौरव की वस्तु है। गत १४ वर्षों से प्रकाशित इस पत्रिका की विद्वानों ने मुक्त कंठ से प्रशंसा की है। बहुत चाहते हुए भी द्रव्याभाव, प्रेस की एवं अन्य कठिनाइयो के कारण, त्रैमासिक रूप से इसका प्रकाशन संभव नही हो सका है। इसका भाग ५ अंक ३-४ **'डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी विशेषांक'** बहुत ही महत्वपूर्ण एवं उपयोगी सामग्री से परिपूर्ण है। यह अंक एक विदेशी विद्वान की राजस्थानी साहित्य सेवा का एक बहुमूल्य सचित्र कोश है। पत्रिका का अगला ७वां भाग शीघ्र ही प्रकाशित होने जा रहा हैं। इसका अंक १-२ राजस्थानी के सर्वश्रेष्ठ महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ का सचित्र और वृहत् विशेपाक हैं। अपने ढंग का यह एक ही प्रयत्न है।

पत्रिका की उपयोगिता और महत्व के सबंध में इतना ही कहना पर्याप्त होगा कि इसके परिवर्तन मे भारत एवं विदेशों से लगभग ८० पत्र-पत्रिकाएं हमें प्राप्त होती हैं। भारत के अतिरिक्त पाश्चात्य देशों मे भी इसकी मांग है व इसके ग्राहक हैं। शोधकर्त्ताओं के लिये 'राजस्थान-भारती' अनिवार्यत: संग्रहणीय शोध-पत्रिका है। इसमे राजस्थानी भापा, साहित्य, पुरातत्व, इतिहास, कला आदि पर लेखों के अतिरिक्त संस्था के तीन विशिष्ट सदस्य डा० दशरथ शर्मा, श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री अगरचंद नाहटा की वृहत् लेख सूची भी प्रकाशित की गई है।

५ राजस्थानी साहित्य के प्राचीन और महत्वपूर्ण ग्रन्थों का अनुसधान, सम्पादन एव प्रकाशन

हमारी साहित्य निधि की प्राचीन, महत्वपूर्ण और श्रेष्ठ साहित्यिक कृतियां को सुरक्षित रखने एव सवसुलभ कराने के लिये सुसम्पादित एव शुद्ध रूप में मुद्रित करवा कर उचित मूल्य मे वितरित करने की हमारी एक विशाल योजना है। सस्कृत, हिंदी और राजस्थानी के महत्वपूर्ण ग्रथो का अनुसधान और प्रकाशन सस्था के सदस्यों की ओर से निरतर होता रहा है, जिसका सक्षिप्त विवरण नीचे दिया जा रहा है—

६ पृथ्वीराज रासो

पृथ्वीराज रासो के कई सस्करण प्रकाश मे लाये गये हैं और उनमे से लघुतम सस्करण का सम्पादन करवा कर उसका कुछ अश 'राजस्थान भारती' म प्रकाशित किया गया है। रासो के विविध सस्करण और उसके ऐतिहासिक महत्व पर कई लेख राजस्थान-भारती मे प्रकाशित हुए हैं।

७ राजस्थान के अज्ञात कवि जान (न्यामतखा) की ७५ रचनाओ की खोज की गई। जिसकी सवप्रथम जानकारी 'राजस्थान भारती' के प्रथम अक मे प्रकाशित हुई है। उनका महत्वपूर्ण ऐतिहासिक काव्य क्यामरासा' तो प्रकाशित भी करवाया जा चुका है।

८ राजस्थान के जैन सस्कृत साहित्य का परिचय नामक एक निबध राजस्थान भारती म प्रकाशित किया जा चुका है।

९ मारवाड क्षेत्र के ५०० लोकगीतो का सग्रह किया जा चुका है। बीकानेर एव जैसलमेर क्षेत्र के सैकडो लोकगीत घूमर के लोकगीत, बाल लोकगीत, लोरियां, और लगभग ७०० लोक कथाएँ सग्रहीत की गई हैं। राजस्थानी कहावतो के दो भाग प्रकाशित किये जा चुके हैं। जीणमाता के गीत, पाबूजी के पवाडे और राजा भरथरी आदि लोक काव्य सवप्रथम 'राजस्थान भारती' म प्रकाशित किए गए हैं।

१० बीकानेर राज्य के और जैसलमेर के अप्रकाशित अभिलेखो का विशाल सग्रह 'बीकानेर जैन लेख सग्रह' नामक बृहत् पुस्तक के रूप मे प्रकाशित हो चुका है।

११. जसवंत उद्योत, मुंहता नैणसी री ख्यात और अनोखी आन जैसे महत्वपूर्ण ऐतिहासिक ग्रंथों का सम्पादन एवं प्रकाशन हो चुका है।

१२. जोधपुर के महाराजा मानसिंहजी के सचिव कविवर उदयचन्द भंडारी की ४० रचनाओं का अनुसन्धान किया गया है और महाराजा मानसिंहजी की काव्य-साधना के सम्बन्ध मे भी सबसे प्रथम 'राजस्थान भारती' में लेख प्रकाशित हुआ है।

१३. जैसलमेर के अप्रकाशित १०० शिलालेखों और 'भट्टि वंश प्रशस्ति' आदि अनेक अप्राप्य और अप्रकाशित ग्रंथ खोज-यात्रा करके प्राप्त किये गये हैं।

१४. बीकानेर के मस्तयोगी कवि ज्ञानसारजी के ग्रंथों का अनुसन्धान किया गया और ज्ञानसागर ग्रंथावली के नाम से एक ग्रंथ भी प्रकाशित हो चुका है। इसी प्रकार राजस्थान के महान विद्वान महोपाध्याय समयसुन्दर की ५६२ लघु रचनाओं का संग्रह प्रकाशित किया गया है।

१५. इसके अतिरिक्त संस्था द्वारा—

(१) डा० लुइजि पिओ तैस्सितोरी, समयसुन्दर, पृथ्वीराज और लोकमान्य तिलक आदि साहित्य-सेवियों के निर्वाण-दिवस और जयन्तियां मनाई जाती हैं।

(२) साप्ताहिक साहित्य गोष्ठियों का आयोजन बहुत समय से किया जा रहा है, इसमें अनेकों महत्वपूर्ण निबंध, लेख, कविताएं और कहानियां आदि पढ़ी जाती हैं, जिससे अनेक विध नवीन साहित्य का निर्माण होता रहता है। विचार विमर्श के लिये गोष्ठियों तथा भाषणमालाओं आदि के भी समय-समय पर आयोजन किये जाते रहे हैं।

१६. बाहर से ख्याति प्राप्त विद्वानों को बुलाकर उनके भाषण करवाने का आयोजन भी किया जाता है। डा० वासुदेवशरण अग्रवाल, डा० कैलाशनाथ काटजू, राय श्रीकृष्णदास, डा० जी० रामचन्द्रम्, डा० सत्यप्रकाश, डा० डब्लू० एलेन, डा० सुनीतिकुमार चाटुर्ज्या, डा० तिबेरिओ-तिबेरी आदि अनेक अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त विद्वानों के इस कार्यक्रम के अन्तर्गत भाषण हो चुके हैं।

गत दो वर्षों से महाकवि पृथ्वीराज राठोड़ आसन की स्थापना की गई है। दोनों वर्षों के आसन-अधिवेशनों के अभिभाषक क्रमशः राजस्थानी भाषा के प्रकाण्ड

विद्वान् श्री मनोहर शर्मा एम० ए०, बिसाऊ और प० श्रीलालजी मिश्र एम० ए०, हूडलोद थे।

इस प्रकार संस्था अपने १६ वर्षो के जीवनकाल मे, संस्कृत, हिन्दी और राजस्थानी साहित्य की निरंतर सेवा करती रही है। आर्थिक संकट से ग्रस्त इस संस्था के लिये यह सम्भव नही हो सका कि यह अपने कार्यक्रम को नियमित रूप से पूरा कर सकती, फिर भी यदा कदा लडखडा कर गिरते पडते इसके कार्यकर्त्ताओ ने 'राजस्थान भारती' का सम्पादन एवं प्रकाशन जारी रखा और यह प्रयास किया कि नाना प्रकार की बाधाओ के बावजूद भी साहित्य सेवा का कार्य निरंतर चलता रहे। यह ठीक है कि संस्था के पास अपना निजी भवन नही है, न अच्छा संदर्भ पुस्तकालय है, और न कार्यालय को सुचारु रूप से सम्पादित करने के समुचित साधन ही हैं, परन्तु साधनो के अभाव मे भी संस्था के कार्यकर्त्ताओ ने साहित्य की जो मौन और एकान्त साधना की है वह प्रकाश में आने पर संस्था के गौरव को निश्चित ही बढा सकने वाली होगी।

राजस्थानी साहित्य भंडार अत्यन्त विशाल है। अब तक इसका अत्यल्प अंश ही प्रकाश में आया है। प्राचीन भारतीय वाङ्मय के अलभ्य एवं अनर्घ रत्नों को प्रकाशित करके विद्वज्जनो और साहित्यिकों के समक्ष प्रस्तुत करना एवं उन्हें सुगमता से प्राप्त कराना संस्था का लक्ष्य रहा है। हम अपनी इस लक्ष्य पूर्ति की ओर धीरे-धीरे किन्तु दृढता के साथ अग्रसर हो रहे हैं।

यद्यपि अब तक पत्रिका तथा कतिपय पुस्तकों के अतिरिक्त अन्वेषण द्वारा प्राप्त अन्य महत्वपूर्ण सामग्री का प्रकाशन करा देना भी अभीष्ट था, परन्तु अर्थाभाव के कारण ऐसा किया जाना सम्भव नहीं हो सका। हर्ष की बात है कि भारत सरकार के वैज्ञानिक संशोध एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम मन्त्रालय (Ministry of scientific Research and Cultural Affairs) ने अपनी आधुनिक भारतीय भाषाओ के विकास की योजना के अन्तर्गत हमारे कार्यक्रम को स्वीकृत कर प्रकाशन के लिये १५०००) रु० इस मद मे राजस्थान सरकार को दिये तथा राजस्थान सरकार द्वारा उतनी ही राशि अपनी ओर से मिलाकर कुल ३००००) तीस हजार की सहायता, राजस्थानी साहित्य के सम्पादन प्रकाशन

हेतु इस संस्था को इस वित्तीय वर्ष में प्रदान की गई है; जिससे इस वर्ष निम्नोक्त ३१ पुस्तकों का प्रकाशन किया जा रहा है।

१. राजस्थानी व्याकरण—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२. राजस्थानी गद्य का विकास (शोध प्रबंध)	डा० शिवस्वरूप शर्मा अचल
३. अचलदास खीची री वचनिका—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
४. हमीरायण—	श्री भंवरलाल नाहटा
५. पद्मिनी चरित्र चौपई—	" " "
६. दलपत विलास—	श्री रावत सारस्वत
७. डिंगल गीत—	" " "
८. पंवार वंश दर्पण—	डा० दशरथ शर्मा
९. पृथ्वीराज राठोड़ ग्रंथावली—	श्री नरोत्तमदास स्वामी और श्री बदरीप्रसाद साकरिया
१०. हरिरस—	श्री बदरीप्रसाद साकरिया
११. पीरदान लालस ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१२. महादेव पार्वती वेलि—	श्री रावत सारस्वत
१३. सीताराम चौपई—	श्री अगरचंद नाहटा
१४. जैन रासादि संग्रह—	श्री अगरचंद नाहटा और डा० हरिवल्लभ भायाणी
१५. सदयवत्स वीर प्रबंध—	प्रो० मंजुलाल मजूमदार
१६. जिनराजसूरि कृतिकुसुमांजलि—	श्री भंवरलाल नाहटा
१७. विनयचंद कृतिकुसुमांजलि—	" " "
१८. कविवर धर्मवर्द्धन ग्रंथावली—	श्री अगरचंद नाहटा
१९. राजस्थान रा दूहा—	श्री नरोत्तमदास स्वामी
२०. वीर रस रा दूहा—	" " "
२१. राजस्थान के नीति दोहे—	श्री मोहनलाल पुरोहित
२२. राजस्थानी व्रत कथाएं—	" " "
२३. राजस्थानी प्रेम कथाएं—	" " "
२४. चंदायन—	श्री रावत सारस्वत

२५. गहुली—	श्री अगरचद नहाटा और म विनय सागर
२६ जिनहृप ग्र थावली	श्री अगरचद नाहटा
२७ राजस्थानी हस्त लिखित ग्र थो का विवरण	,, ,,
२८ दम्पति विनोद	,, ,,
२९ हीयाली—राजस्थान का बुद्धिवधक साहित्य	,, ,,
३० समयसुन्दर रासत्रय	श्री भवरलाल नाहटा
३१ दुरसा आढा ग्र थावली	श्री बदरीप्रसाद साकरिया

जसलमेर ऐतिहासिक साधन सग्रह (सपा० डा० दशरथ शर्मा), ईशरदास ग्रथावली (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया), रामरासो (प्रो० गोवद्ध न शर्मा), राजस्थानी जैन साहित्य (ले० श्री अगरचद नाहटा), नागदमण (सपा० बदरीप्रसाद साकरिया) मुहावरा कोश (मुरलीधर व्यास) आदि ग्रथो का सपादन हो चुका है परन्तु अर्थाभाव के कारण इनका प्रकाशन इस वर्ष नहीं हो रहा है।

हम आशा करते हैं कि काय की महत्ता एव गुरुता को लक्ष्य मे रखते हुए अगले वर्ष इससे भी अधिक सहायता हमें अवश्य प्राप्त हो सकेगी जिससे उपरोक्त सपादित तथा अन्य महत्वपूर्ण ग्रथो का प्रकाशन सभव हो सकेगा।

इस सहायता के लिये हम भारत सरकार के शिक्षा विकास सचिवालय के आभारी हैं, जिन्होंने कृपा करके हमारी योजना को स्वीकृत किया और ग्रान्ट इन-एड की रकम मजूर की।

राजस्थान के मुख्य मन्त्री माननीय मोहनलालजी सुखाडिया, जो सौभाग्य से शिक्षा मन्त्री भी हैं और जो साहित्य की प्रगति एव पुनरुद्धार के लिये पूर्ण सचेष्ट हैं, का भी इस सहायता के प्राप्त कराने मे पूरा-पूरा योगदान रहा है। अत हम उनके प्रति अपनी कृतज्ञता सादर प्रगट करते हैं।

राजस्थान के प्राथमिक और माध्यमिक शिक्षाध्यक्ष महोदय श्री जगन्नाथसिंहजी मेहता का भी हम आभार प्रगट करते हैं, जिन्होंने अपनी ओर से पूरी-पूरी दिलचस्पी लेकर हमारा उत्साहवद्ध न किया, जिससे हम इस बृहद् काय को सम्पन्न करने में समर्थ हो सके। सस्था उनकी सदव ऋणी रहेगी।

इतने थोडे समय मे इतने महत्वपूर्ण ग्रन्थों का संपादन करके संस्था के प्रकाशन-कार्य मे जो सराहनीय सहयोग दिया है, इसके लिये हम सभी ग्रन्थ सम्पादकों व लेखकों के अत्यन्त आभारी है।

अनूप संस्कृत लाइब्रेरी और अभय जैन ग्रन्थालय बीकानेर, स्व० पूर्णचन्द्र नाहर सग्रहालय कलकत्ता, जैन भवन संग्रह कलकत्ता, महावीर तीर्थक्षेत्र अनुसंधान समिति जयपुर, ओरियंटल इन्स्टीट्यूट बड़ोदा, भांडारकर रिसर्च इन्स्टीट्यूट पूना, खरतरगच्छ वृहद् ज्ञान भण्डार बीकानेर, एशियाटिक सोसाइटी बंबई, आत्माराम जैन ज्ञानभंडार बड़ोदा, मुनि पुण्यविजयजी, मुनि रमणिक विजयजी, श्री सीताराम लालस, श्री रविशंकर देराश्री, पं० हरिदत्तजी गोविंद व्यास जैसलमेर आदि अनेक संस्थाओं और व्यक्तियो से हस्तलिखित प्रतियां प्राप्त होने से ही उपरोक्त ग्रंथों का संपादन सम्भव हो सका है। अतएव हम इन सबके प्रति आभार प्रदर्शन करना अपना परम कर्त्तव्य समझते है।

ऐसे प्राचीन ग्रन्थो का सम्पादन श्रमसाध्य है एव पर्याप्त समय की अपेक्षा रखता है। हमने अल्प समय में ही इतने ग्रन्थ प्रकाशित करने का प्रयत्न किया इसलिये त्रुटियो का रह जाना स्वाभाविक है। गच्छतः स्खलनंक्वपि भवत्येव प्रमादतः, हसन्ति दुर्जनास्तत्र समादधति साधवः।

आशा है विद्वद्वृन्द हमारे इन प्रकाशनों का अवलोकन करके साहित्य का रसास्वादन करेंगे और अपने सुझावो द्वारा हमे लाभान्वित करेंगे जिससे हम अपने प्रयास को सफल मानकर कृतार्थ हो सकेंगे और पुनः मां भारती के चरण कमलों में विनम्रतापूर्वक अपनी पुष्पांजलि समर्पित करने के हेतु पुनः उपस्थित होने का साहस बटोर सकेंगे।

निवेदक
लालचन्द कोठारी
प्रधान-मन्त्री
सादूल राजस्थानी-इन्स्टीट्यूट
बीकानेर

बीकानेर,
मार्गशीर्ष शुक्ला १५
संवत् २०१७
दिसम्बर ३, १९६०

दलपतविलास

भूमिका

ई सन् १६४२ में, जब मैं बीकानेर स्थित अनूप संस्कृत लाइब्रेरी मे राजस्थानी भाषा के हस्तलिखित ग्रंथो का सूचीपत्र बनाने के उद्देश्य से उनकी छानबीन कर रहा था, मुझे 'दलपतविलास' नामक इस इतिहास ग्रंथ की प्रति मिली। उस समय प्राचीन राजस्थानी गद्य मे मेरी रुचि अधिक थी इसलिए मैं सतरहवीं शताब्दी के मध्य काल में लिखित इस समसामयिक रचना की ओर आकृष्ट हुआ। पुस्तक में आये हुए एकाध रोचक प्रसग की चर्चा को लेकर मैंने इस ग्रंथ के प्राप्त होने का उल्लेख माननीय डाक्टर दशरथ शर्मा से किया। उनकी प्रेरणा से मैंने तभी तत्कालीन सादूल प्राच्य ग्रंथमाला मे प्रकाशित करवाने के लिए सपादित करने की दृष्टि से इसकी प्रतिलिपि करवाली थी। पर अनूप संस्कृत लाइब्रेरी से मेरा सबंध विच्छेद हो जाने के कारण यह कार्य उस समय पूरा न किया जा सका।

सन् १६५३ म जब 'मरवाणी' मासिक पत्र का प्रकाशन प्रारभ हुआ तो मैंने इस ग्रंथ के मूल पाठ को प्राचीन राजस्थानी गद्य के नमूने की तरह धारावाहिक रूप मे छापना प्रारभ किया। अधिकांश भाग छप चुकने के बाद यह सिलसिला भी बंद होगया। पिछले दिनों श्री अगरचद नाहटा ने सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीट्यूट की ओर से इसे प्रकाशित करने की इच्छा प्रकट की तो मैं तुरत इसे सपादित कर देने को राजी हो गया। यह मैं अपना सौभाग्य मानता हूँ कि आज से १८ वर्ष पहले जिस ग्रंथ को मैंने खोजा था वह मेरे द्वारा ही सपादित करवाया जाकर प्रकाशित किया जा रहा है।

'दलपतविलास' ४६ पन्नों का एक छोटा सा इतिहास ग्रंथ है। इसका आकार १० ४"X४ ३" है। पुस्तक के ऊपर–"पु महाराजकुमार अनूपसिंघजी रो छै"–

अंकित है। इसका उल्लेख मैंने 'Catalogue of Rajasthani Mss. in the Anup Sanskrit Library' के नामक सूचीपत्र मे भी किया है। इससे अनुमान होता है कि प्रस्तुत रूप में यह ग्रंथ किसी प्राचीन हस्तप्रति की प्रातिलिपि है जिसे या तो प्रतिलिपिकार ने अथवा स्वयं लेखक ने ही लिखते लिखते बीच मे ही छोड़ दिया है। संभव है यह प्रतिलिपि महाराजकुमार अनूपसिह ने अपने निजी पुस्तकालय के लिये करवाई हो। इस प्रकार से अकित सैकडों हस्तप्रतियाँ अनूप संस्कृत लाइब्रेरी में मिलती है जिनसे महाराजकुमार अनूपसिह के निजी पुस्तकालय का होना पाया जाता है। पुस्तक के अंत मे जिस अचानक ढंग से कथा-प्रसंग टूटता है उससे यह अनुमान करने का जी चाहता है कि लेखक ने अवश्य ही इसके आगे लिखा होगा और संभवत: प्रतिलिपिकार ने ही बीच मे छोड़ दिया है। पर ये सब सभावनाये ही हैं क्योकि ऐसे विपयो में निश्चित रूप से कुछ कहना वहुत कठिन है। महाराजकुमार अनूपसिंह का समय सं. १७२५ तक का है क्योकि १७२६ मे ये गद्दी पर वैठे थे। अत: प्रतिलिपि का समय रचना के लगभग ७० वर्ष वाद का वैठता है जो असंगत प्रतीत नही होना चाहिए।

'दलपतविलास' दो दृष्टियो से महत्वपूर्ण है—एक ऐतिहासिक और दूसरी साहित्यिक। ऐतिहासिक दृष्टि से इसका महत्व अकवरकालीन एक समसामयिक रचना होने तथा ऐसे अनेक महत्वपूर्ण प्रसंगों के समावेश के कारण है जिनका उल्लेख मुसलमानी तवारीखो में भी इतना सही व स्पप्ट प्रतीत नही होता। दूसरे, यह केवल इतिहास ही नही अपितु एक ऐतिहासिक व्यक्ति का जीवन-चरित्र भी है, जिससे उसके व्यक्तित्व को निकट से समझने में तो सहायता मिलती ही है पर साथ ही उन अनेक घटनाओ की सूक्ष्म जानकारी भी मिलती है, जिनका उल्लेख लेखक ने प्रसंगानुसार किया है, तथा जो मुगलकालीन इतिहासज्ञो द्वारा महत्वपूर्ण भी समझी गई हैं।

साहित्यिक दृष्टि से इसका महत्व सतरहवी शताव्दी के संपुष्ट राजस्थानी गद्य की एक प्रौढ़ रचना के रूप मे माना जाना चाहिए। वैसे इससे पहिले के अनेक गद्य-प्रकरण राजस्थानी ग्रथो-विशेपत: जैन ग्रंथों-मे प्राप्य है पर प्रवंध रूप मे धारावाहिक ढंग से लिखा दूसरा विशुद्ध गद्य ग्रथ देखने में नही आया।

ग्रंथ की महत्ता को और अधिक प्रतिपादित करने की चेष्टा करने के स्थान पर मैं राजस्थान के अन्धकारयुगीन इतिहास के उद्धारक डा० दशरथ शर्मा द्वारा लिखित उन पंक्तियों को उद्धृत करने का लोभ संवरण नहीं कर सकता जो उन्होंने स्वयं द्वारा संपादित 'दयालदास री ख्यात' भाग २ की भूमिका में प्रस्तुत ग्रंथ के विषय में निम्न प्रकार लिखी हैं। यह सौभाग्य की बात है कि ग्रंथ का ऐतिहासिक दृष्टि से विस्तृत समीक्षण भी डाक्टर साहब ने लिख दिया है जो अविकल रूप में प्रकाशित कर दिया गया है।

"But of all the prose chronicles in Raisinghji's reign perhaps none is so important as the 'Dalpat Vilas' (The work was first brought to my notice by Mr Rawat Saraswat of the Anoop Sanskrit Library) The only pity is that it is fragmentary Other wise it might have rivalled in utility as well as interest, much better known histories like the 'Akbarnama', the 'Muntakhabut tawarikh', and the 'Tabaqat i Akbari' × × × ×

On the Moghal Court also the sidelights are extremely interesting and help us in correcting many mistakes of the writers on Moghal History We find that Hemu was never killed by Akbar himself, he was too kind hearted to commit the deed Dr V A Smith's contention that a boy of Akbar's age and mentality could hardly be expected to entertain such feelings inspite of Abul Fazl's positive assertion to this effect, is an example of the biassed way history has been written so far × × × ×

राजस्थानी इतिहास लेखन की परम्परा

राजस्थानी भाषा में दो प्रकार के इतिहास ग्रंथ मिलते हैं। एक तो संस्कृत इतिहास ग्रंथों की परम्परा में लिखे गए पद्यबद्ध ग्रंथ और दूसरे फारसी तवारीखों की शैली में लिखे गए गद्य ग्रंथ। पहली श्रेणी के ग्रंथों में मोटे रूप में चरित्रनायक

Pages 5-6 (Introduction)—Dayaldas Ri Khyat Part II—Dr Dashrath Sharma -Sadul Oriental Series Vol II - Anoop Sanskrit Library Bikaner

का वंशवर्णन तथा उसके द्वारा किए गए युद्धो और अन्य स्तुतियोग्य कृत्यो का प्रशस्तिगान मात्र ही अधिकाश मे मिलता है, जब कि दूसरी श्रेणी के ग्रंथों मे घटनाओ के विस्तृत वर्णनात्मक प्रसंग रहते हैं। पद्य और गद्य के भेदो के कारण ही यह अंतर स्वाभाविक है। राजस्थानी गद्य मे लिखे गए दूसरे प्रकार के ग्रंथ भी दो रूपो मे मिलते हैं—'वात' और 'ख्यात'। 'वात' केवल एकाध प्रसंग के गद्य मे किए गए वर्णन को कहते है जब कि ख्यात अधिकतर प्रबन्ध रूप मे लिखा गया क्रमानुगत वर्णन होता है। ऐसी भी वाते मिलती है जिनमे शताब्दियो के जातीय इतिहास को सिकोड़ कर सूक्ष्म रूप से लिख दिया गया है, जैसे—बूंदेलां री वात, खीचिया री वात आदि। पर मोटे तौर से लिखी रहने के कारण इन वातों को ख्यात नही कहा जा सकता।

ख्यात आवश्यक रूप से एक प्रबंध है जिसमे क्रमानुगत वर्णन 'वात' की अपेक्षा विस्तृत रूप से मिलता है। 'वात' की ही श्रेणी की अन्य ऐतिहासिक रचनायें भी होती है जिन्हे हाल, हकीगत, वृत्तात, विगत, पीढी, पिरियावली, पट्टावली आदि अनेक नामो से पुकारा जाता है। इन सभी नामो के अनुसार रचनाओ मे तनिक भेद होता है पर सार रूप मे सभी ख्यात से भिन्न फुटकर ऐतिहासिक कृतिया ही समझनी चाहिए। इन्ही ख्यात और वात आदि के विभेदो के बीच एक तीसरा विभेद वह है जिसमे प्रधानतः एक व्यक्ति के जीवन से संबंधित घटनाओं का विस्तृत वर्णन तथा अन्य प्रासंगिक उल्लेख भी रहते है। फारसी मे बाबरनामा, हुमायूं-नामा, अकबरनामा, जहाँगीरनामा आदि ग्रंथ इसी श्रेणी मे आते है। यद्यपि सस्कृत ग्रंथो की परंपरा मे लिखे गए राजस्थानी चरित्रग्रंथ भी चरित्रनायक के जीवन से ही संबंधित होने के कारण मोटे तौर पर इसी प्रकार के ग्रंथ कहे जाने चाहिए पर एक तो पद्य मे लिखे जाने और दूसरे प्रशस्तिगायन का उद्देश्य मुख्य होने के कारण उनमे ऊपर बताये गए 'नामा' नामक ग्रंथो का सा घटनाओ का विस्तार और वर्णनो की बारीकी नही आने पाती। इन दूसरे प्रकार के ग्रंथो मे भी चरित्रनायक की अतिरंजित प्रशंसाये अवश्य है पर प्रसगानुसार आये हुए व्यक्तियो और घटनाओं का भी विस्तृत और रोचक वर्णन मिलता है। 'दलपत-विलास' को भी दूसरी श्रेणी के फारसी ग्रंथो की शैली मे लिखा गया चरित्रग्रंथ

ही समझना चाहिए क्योंकि इसमें प्रधानतः दलपतसिंह के जीवन से संबंधित विस्तृत वर्णन तथा प्रसंगवश अन्य घटनाओं का उल्लेख किया गया है। स्पष्ट ही इस ग्रंथ को लिखने की प्रेरणा फारसी जीवन चरित्रों से मिली होगी। लेकिन इस इस ग्रंथ के अतिरिक्त राजस्थानी गद्य में दूसरा कोई चरित्र ग्रंथ देखने में नहीं आया। इसके दो कारण हो सकते हैं। एक तो यह कि इस प्रकार का चरित्र ग्रंथ या तो चरित्रनायक स्वयं ही लिख सकता है अथवा हर समय उसके सन्निकट रहने वाला व्यक्ति ही। अन्य किसी व्यक्ति के लिए उन सभी बातों व घटनाओं की सूक्ष्म जानकारी देना संभव नहीं है जिनका चरित्रनायक से गहरा संबंध हो सकता है। चूंकि उपयुक्त दोनों प्रकार के संयोग दुर्लभ होते हैं अतः इस प्रकार के ग्रंथों का लेखन भी दुष्कर ही होता है।

दूसरा मुख्य कारण गद्य की अपेक्षा पद्य के अधिक प्रचलन का भी है। प्रायः राज दरबारों आदि में भी गीतकारों व काव्यकारों का ही आदर होता था। राजाओं और वीरों की प्रशस्ति गाने वाले कवियों को लाखपसाव और कोड़पसाव मिलते थे। कहीं भी किसी गद्यलेखक को उसकी गद्य रचना के लिए पुरस्कृत किये जाने की उल्लेखनीय घटना सुनने में नहीं आई। असल में ऐतिहासिक गद्य रचनाओं का प्रचलन भी अकबर के समय से ही राजस्थानी में आया—इसमें कोई दो राय नहीं होनी चाहिए। सभी रजवाड़ों ने उन इतिहास ग्रंथों की देखादेखी अपने अपने घरों की ख्यातें लिखवाईं। इसलिए ख्यातों का प्रचलन तो बढ़ा पर चरित्र ग्रंथों की रचना प्राचीन परिपाटी के अनुसार केवल पद्य तक ही सीमित रही। इसलिए राजस्थानी गद्य में दलपतविलास अकेला ही चरित्रग्रंथ रह जाता है और वह भी अधूरा।

ग्रन्थ का रचनाकाल

फारसी ग्रंथों की तरह दलपतविलास में भी दलपतजी के जन्म से लेकर क्रमानुसार सारी घटनाओं का उल्लेख किया गया है, और जब उनकी अवस्था केवल १२-१४ वर्ष की ही थी तभी ग्रंथ का अचानक अन्त हो जाता है। ग्रंथलेखन के समय दलपतजी महाराजकुमार ही थे और उनके तीन पुत्र थे। यदि उस समय उनकी अवस्था तीन सन्तानों के लिए आवश्यक समय ६ वर्ष मानते हुए कम से कम

२४ (१८+६) वर्ष भी मान ली जाय तो ग्रंथ का रचनाकाल १६४५ के वाद का ही ठहरता है, क्योंकि दलपतजी का जन्म संवत् १६२१ में हुआ था। १६६८ में रायसिंहजी की मृत्यु के वाद ये गद्दी पर वैठे थे, इसलिए मोटे तौर पर संवत् १६४५ से १६६८ तक के २३ वर्षों मे ग्रंथ का रचनाकाल निश्चित है।

प्रस्तुत ग्रंथ में जहां जहां वादशाह अकवर का उल्लेख किया गया है उसमें उसे 'श्रीजी' आदि वहुत सम्मानसूचक शब्दों से अभिहित किया है। इससे यह आभास भी होता है कि पुस्तक की रचना अकवर के जीवन काल मे ही की गई होगी। इस प्रकार रचना की अंतिम सीमा को हम सं. १६६८ के स्थान पर सं. १६६२ तक खींच कर ला सकते हैं क्योंकि इसी वर्ष वादशाह अकवर की मृत्यु हुई थी।

ग्रंथ के प्रारंभ मे दिए हुए महाराजकुमार दलपतसिंह के पुत्रों के उल्लेख से यह स्पष्ट हो जाता है कि लेखक ने ग्रंथ की रचना उसी समय की थी, चाहे वह उसके द्वारा समय समय पर लिये गये नोटों के आधार पर हो अथवा याददास्त से। इस प्रकार यह प्रकट है कि लेखक ने पहिले की घटनाओं को भी उसी दृष्टिकोण से लिखा है जो ग्रंथ की रचना के समय उसके मस्तिष्क मे रहा होगा। कर्मचंद्र वच्छावत के प्रति जो दृष्टिकोण उसने अपनाया है वह सभी घटनाओं में एक समान है। अन्य अनेक व्यक्तियों में रामसिंह कल्याणमलोत, भोपतजी, गोवलजी पहोड़ आदि व्यक्तियों के प्रति उसकी सहानुभूति तथा कर्मचंद्र वच्छावत, तेजसी क्याल, सिरचंद मुंहतो, मदनो पाताउत और केशव आदि के लिए उसके पूर्वाग्रह से यह प्रकट हो जाता है कि उसने अपनी वैयक्तिक भावनाओं को इतिहासकार के निष्पक्ष दृष्टिकोण पर हावी हो जाने दिया है। इस तथ्य से हमें उन ध्वनियों को खोज निकालने मे मदद मिल सकती है जो रचना के समय ग्रंथकार के अन्तर्मन को व्याप्त किए हुए रही होगी और जो स्वभावतः उसके चरित्रनायक के हित व अहित से संववित भी रही होगी।

दयालदास कृत "वीकानेर रै राठौड़ां री ख्यात" में लिखा है कि संवत् १६५२ मे कर्मचन्द, दलपतजी और रामसिंह ने रायसिंहजी पर चूक करने की योजना वनाई थी। यदि इसे सत्य मान लिया जाय तो दलपतजी के हित मे होने के कारण कर्मचन्द

के प्रति लेखक के दृष्टिकोण में परिवर्तन होना चाहिए था। फिर ऐसा नहीं होने से यह अनुमान लगालें कि ग्रंथ की रचना संवत् १६५२ से पहिले हुई होगी तो कोई हर्ज नहीं। पर दयालदास की सवर्ते कोई बहुत अधिक विश्वसनीय नहीं है क्योंकि अनेक स्थानों पर उनमें स्पष्ट अन्तर पाए गए हैं।

डा गौ ही ओझा ने लिखा है कि बादशाह अकबर ने दलपतजी को संवत् १६५४ में भटनेर और चुरूर की जागीर दी थी (पृष्ठ १६४, बीकानेर राज्य का इतिहास, भाग १)। इससे पहिले किसी जागीर के दिए जाने का उल्लेख नहीं मिलता। इस बात से यह अनुमान हो सकता है कि जागीर मिलने के बाद ही दलपतजी के व्यक्तित्व में निखार आया होगा तथा तभी लेखक ने उन्हें 'सभा शृंगार' कह कर संबोधित करना समीचीन समझा होगा। ग्रंथ के नामकरण में 'विलास' शब्द रखने से भी यह आभास हो सकता है कि चरित्रनायक प्रभुत्वसंपन्न व्यक्ति रहा होगा। इन सब दलीलों के आधार पर ग्रंथ का रचना काल सं १६५४ के आस पास भी ठहर सकता है, जिस समय दलपतजी की अवस्था ३३ वर्ष के लगभग थी। ग्रंथ के अन्त में बादशाह अकबर के प्रसंग में लेखक ने दलपतजी के प्रति बादशाह की कृपा का उल्लेख दो स्थानों पर किया है। एक तो भोपतजी की मृत्यु के बाद बादशाह के द्वारा दलपतजी को दिये गए ढाढस के रूप में तथा दूसरे विक्षिप्तावस्था में पगड़ी के टुकड़े बांटते समय दलपतजी के प्रति प्रदर्शित स्नेहभाव में। इन बातों से लेखक की उस प्रतिक्रिया का आभास मिलता है जो अकबर द्वारा दलपतजी को जागीर प्रदान करने पर उसके मन में हुई होगी।

रायसिंहजी और दलपतजी में आगे जाकर पैदा होने वाले विरोध की पूर्वछाया के रूप में उन एकाध प्रसंगों को भी हम नहीं भुला सकते जिनमें लेखक ने रायसिंहजी द्वारा कुंवर दलपतजी पर रखी जाने वाली कड़ाई का उल्लेख किया है। पिता के प्रति पुत्र का यह विरोध संवत् १६५७ में प्रकट हुआ था जब दलपतजी ने बीकानेर आकर विद्रोह किया। इसलिए ग्रंथ की रचना के समय इस विरोध का प्रच्छन्न रहना असंगत नहीं प्रतीत होता। इन सभी अनुमानों के आधार पर ग्रंथ की रचना १६५२ से १६५७ के बीच में होने की कल्पना उचित प्रतीत होती है।

चरित्रनायक का वृत्तांत

चूंकि प्रस्तुत ग्रंथ में दलपतजी की बाल्यावस्था तक की ही कुछ घटनायें आ पाई है अतः उनके बाद के जीवन को संक्षिप्त रूप मे पाठकों के सामने प्रस्तुत करना ठीक होगा।

दलपतजी का जन्म संवत् १६२१ की फाल्गुन कृष्णा ८ को महाराणा उदयसिंह की पुत्री जसमादे के उदर से हुआ था। संवत् १६६८ मे महाराजा रायसिंह की मृत्यु के बाद ये राजसिंहासन पर बैठे थे। इससे पहिले इनके जीवन की कोई विशेष उल्लेखनीय घटनायें ज्ञात नही है। बादशाह अकबर ने इन्हें पांच सदी मनसब और संवत् १६५४ में भटनेर और कुमूर की जागीर प्रदान की। बादशाह ने ठट्ठा की लड़ाई में खानखाना की सहायतार्थ इन्हे भेजा, पर कहते है ये खडे तमाशा देखते रहे। संवत् १६५७ में बिना आज्ञा दक्षिण से लौटकर इन्होंने बीकानेर मे विद्रोह किया और संवत् १६५६ में रायसिहजी के राजपूतों से नागौर छीन लिया।

रायसिहजी अपनी रानी गंगादे भटियाणी पर विशेष अनुरक्त रहने के कारण उसके पुत्र सूरसिंह को राज्याधिकार दिलाना चाहते थे। बुरहानपुर में उनकी मृत्यु के समय सूरसिंह ही उनके पास थे। जब सूरसिंह ने जहांगीर के सामने आकर कहा कि मेरे पिता ने मुझे राज्याधिकार दिया है तो जहांगीर ने ताव में आकर कहा कि तुम्हें तुम्हारे पिता ने राजा बनाया है तो हम दलपत को राजा बनाते हैं। पर दलपतजी जहांगीर की इस कृपा को निभा न पाये और बादशाह की हाजरी में न जाने के कारण वह दलपतजी से रुष्ट हो गया। खानेजहां लोदी की कृपा से जहांगीर ने इन्हें क्षमा प्रदान की थी।

दयालदास ने अपने ग्रंथ 'देसदरपण' में लिखा है कि महाराजा रायसिहजी दलपतजी से नाराज रहते थे इसलिए मुहता करमचंद बच्छावत के नायकत्व में कुछ मुसाहिबो ने दिल्ली जाकर बादशाह से अर्ज कर रायसिहजी की सब जागीर जब्त करवा कर दलपतजी को बीकानेर का मनसब दिलवाया। इस षड्यन्त्र में शामिल होने वाले मुख्य व्यक्तियों मे कर्मचन्द, उसके बेटे लिखमीचंद व भागचन्द,

गाव तोलियासर के पुरोहित सोवड मान तथा महेश, गांव राजासर (इस समय निवमीनारणसर) का चौधरी सहारण भरथा तथा उसका भाई ईसर, गाव नाल का वाघोड खवास गोपाल, तथा गाव खु डिया का बारठ एलचाहडोन चोथजी थे। इन्होंने नसीरखा से मिल कर बादशाह से रायसिहजी की शिकायत की। नसीरखा भटनेर मे हुए अपने अपमान से रायसिहजी से पहिले ही नाराज था। इसलिए इन सबके कहने पर बादशाह ने बीकानेर दलपतजी को दे दिया। पर सवत् १६६७ में दलपतजी से लेकर पुन रायसिहजी को दे दिया। इसी वप महाराजा दलपतजी को मना कर बीकानेर लाये और बडी खातरी की। दलपतजी बहुत सा सामान और घोडे बीकानेर से लेकर नागोर गये। महाराजा भी फौज लेकर उनके पीछे गए। लडाई हुई जिसमे दलपतजी की विजय हुई। महाराजा ने इस वृत्तांतकी सूचना बादशाह को दी तो दिल्ली से फौज भेजी गई और दलपतजी का गिरफ्तार करने का हुकम दिया। दलपतजी नागोर से मरोट आ गए पर फौज भी पीछे आई। दलपतजी मरोट से निकलकर भटनेर आ गए। चार महीने तक युद्ध होता रहा पर अन्त मे सामान समाप्त हो जाने के कारण गढ़ के दरवाजे खोल कर दलपतजी ने बादशाही फौज पर हमला किया। दोनों ओर के बहुत लोग मारे गए। दलपतजी को गिरफ्तार कर दिल्ली ले जाया गया जहा कई दिन कैद मे रहने के बाद वे छूट पाये।

सवत् १६६८ मे जहागीर की कृपा से राज्य प्राप्ति होने पर वे एक वप बादशाह की ही हाजरी मे रहे। संवत् १६६६ मे जहागीर न इन्हे दो हजार का मनसब देकर ठट्टा भेजा पर वे बीकानेर चले आए और बादशाह के बुलाने पर भी दरबार नही गए जिस पर बादशाह नाराज हुए।

इधर सूरसिहजी को दिया गया फलोदी का ८४ गावो का पट्टा उन्होंने पुरोहित मान महेश के कहने पर खालसे कर लिया। सवत् १६६६ मे गाव चूरेहर मे दलपतजी ने गढ़ बनवाने के लिए नींव खुदवाई पर भाटी तजमाल विगनावत ने विरोध किया और नींव ढहादी।

इसी वष माजी साहब गगादेजी ने सोरमजी की तीर्थयात्रा के लिए अर्ज करवाई तो दलपतजी न दो हजार आदमी देकर सूरसिहजी को उनके साथ भेजा।

मार्ग मे सागानेर (जयपुर) के पास डेरा पड़ा जहा गंगादेजी अपनी वहिन, मानसिंह राजावत की स्त्री, से मिली। सौरंभजी पहुँचने पर सूरसिंहजी माजीसाहव से आज्ञा लेकर दिल्ली आए। उनके आदमी पहिले ही वहां पहुच चुके थे। वादशाह दलपतजी से नाराज थे ही इसलिए उनके अर्ज करने पर वादशाह ने वीकानेर का मनसव दलपतजी से लेकर सूरसिंहजी को दे दिया।

इधर सरसे मे जोइयों व भाटियो को मार कर जावदीखा ने उस पर अधिकार कर लिया, जिसकी खवर दलपतजी को होने पर उन्होने जावदीखां पर आक्रमण किया। जावदीखां भाग गया। वह दिल्ली से ८० हजार फौज लेकर सूरसिंहजी के साथ लौटा और छापर मे डेरा डाला। दलपतजी ने वादशाही फौज पर आक्रमण कर उसे भगा दिया, जिसने छापर से १० कोस दूर जा डेरा डाला। उन्होने वादशाह से अर्ज करवा कर और फौज मंगवाई पर दलपतजी से डर कर उसकी लडने की हिम्मत नही हुई। इस पर माजी साहव गंगादेजी ने उन्हें ढाढस वंधवाया और वीकानेर के अनेक सरदारो को लालच देकर अपनी ओर कर लिया। इस विश्वासघात मे सम्मिलित होने वाले व्यक्तियो मे किसनसिंघ रायसिंघोत–साखू, मुंद्रसेण प्रिथीराजोत–दद्रेवा, किसनसिंघ अमरसिंघोत–हरदेसर, किसनसिंघ रायसिंघोत–गारवदेसर तथा महाजन, भूकरका व चूरू के ठाकुर थे। तेजपाल भाटी को भी उसकी लड़की की शादी सूरसिंहजी से कर शामिल कर लिया गया। भटनेर का वैद ठाकुरसी स्वामिभक्त रहा और षड़यन्त्र मे शामिल नही हुआ। लडाई हुई। दलपतजी हाथी पर थे। चूरू ठाकुर भीमसिंघ वलभद्रोत ने, जो खवासी मे वैठा था, दलपतजी को पकड़ लिया और कैद करवा दिया। इस युद्ध मे वीदासर का स्वामी दलपतजी की ओर से लडकर काम आया। राठ वैराड़ी भी दलपतजी की महायतार्थ आए हुए थे पर वीकानेर के विश्वासघाती उमरावो ने उन्हे भगा दिया। ५० आदमियो के साथ इन्हे कैद कर हिसार भेज दिया गया जहां से हिसार के नवाव ने अजमेर भिजवा दिया। अजमेर मे ये जनाने समेत अनासागर की पाल पर के जहांगीरी महलो में कैद कर दिये गए। १०० आदमियो की चौकी रखी गई। चार महीनो तक ये यहां कैद रहे।

चापावत हाथीसिंह गोपालदासोत ३०० सवारों के साथ ससुराल जाते हुए अजमेर ठहरे। उन्हें जब दलपतसिंहजी के कैद होने का समाचार मिला तो उन्होंने दलपतजी को जुहार मालूम करवाई, जिस पर दलपतजी ने उन्हें कुछ समाचार कहने के लिए बुलवाया। इस पर हाथीसिंह ने कहा कि ससुराल से वापिस आते हुए समाचार सुनेंगे। दलपतजी ने उन्हें फिर कहलवाया कि जो ससुराल जा रहे हैं वे हमारे समाचार क्या सुनेंगे। तब हाथीसिंहजी ने कहलवाया कि हम जैसे भी हैं आपकी सेवा में तैयार हैं, और ग्यारस के दिन आने का संकेत दिया। इसके बाद सभी चापावतों ने केसरिया वस्त्र धारण किए और लोगों के पूछने पर बरात बना कर विवाह के लिए जाने की बात बनादी। ग्यारस के दिन धर्म पुण्य करके इन्होंने मिल कर विचार किया कि बीकानेर के राजा ने कोई जागीर-पट्टा तो अपने को दे नहीं रखा है पर जैसे जोधपुर के राजा हैं वैसे ही हमारे लिए बीकानेर के राजा हैं। इसलिए इस अनित्य शरीर को खटिया पर पड़ कर छोड़ने के स्थान पर यश की मौत मरना अच्छा है। तब ४० घुड़सवार तो साथ छोड़कर चले गए और बाकी २६० ने मिलकर कसूंभा पिया और आदमी भेज कर दलपतजी को हमले की सूचना भेजी। चौकी के सिपाहियों को मार काट कर अन्दर गए और दलपतजी की हथकड़ी बेड़ी काट कर उन्हें मुक्त किया। अजमेर के थानेदार को जब इस घटना का पता लगा तो वह २००० आदमियों को लेकर चढ़ आया। दलपतजी तथा हाथीसिंहजी दोनों संवत् १६७० की फागुन वदी ११ को लड़कर व सारा कबीला काट कर काम आए। हाथीसिंहजी बलूजी चापावत के सगे भाई थे। हाथीसिंहजी तो निस्सन्तान ही मर गए पर बलूजी चापावत के वंशज तथा चापावत जाति के सभी व्यक्ति इस चाकरी के उपलक्ष्य में बीकानेर दुर्ग में सूरजपोल (कुछ के अनुसार हाथीपोल) तक सवारी पर चढ़े आने के सम्मान के अधिकारी हैं। दलपतजी की मृत्यु का समाचार फागुन सुदी ५ को भटनेर पहुंचा तो उनकी ६ रानियां उनकी पाग के साथ सती हुईं, जिनके नाम—भटियाणी जादमदेजी, भटियाणी नौरंगदेजी, सोनगरी सतोगदेजी, भटियाणी कनकदेजी, भटियाणी सदाकंवरजी तथा निरवाण मदनकंवरजी हैं। इनके सवन् भटनेर दुर्ग में पाषाण पर अंकित हैं। दलपतजी संवत् १६६८ की चैत वदी ५ को राजगद्दी पर बैठे और बाईस महीने राज्य किया। इनके तीन पुत्रों

के नाम ज्ञात हैं—सवलसिंह, उदयसिंह और तुलसीदास। उदयसिंह के पुत्र अजवसिंह थे।

दलपतजी बड़े बहादुर और स्वाभिमानी राजपूत थे। जावदीखा की ८० हजार फौज को उन्होने वडी वीरता से लडकर भगा दिया जिसकी प्रशंसा में राजस्थानी के विख्यात कवि राठौड़राज प्रिथीराज ने निम्नलिखित गीत कहा है—

दला दियती ओळंभा जैतमाल दिसा
निस अरध जागवी थाट नमियो।
साहिजादी तणै महल नवसाहसो
रासउत दोपहर तेण रमियो॥ १॥
रौद्रघड़ राव रावळ रमै आधरत
भाग सोभागणी कमध भीनो।
मुंगलण आंगणै पेमरस मांणवा
दले दीहां भलो मोहत दीन्हो॥ २॥
हार सिणगार गजमीर खंडत हुआ
उर अरध चूरिया लोह आडै।
सैत संभमर तणौ तखत रायसिंघ सूअ
लोद्र घड़ भोगवी भांजि लाडै॥ ३॥
जोर जोवण चढी अणी नख जोड़ली
पिलंग पाधर पड़ा दलै पाली।
जावदी तणी घड़ पूंगड़ी जीव ले
होड ग्रहणाह सक छोड़ हाली॥ ४॥

दलपतजी के कैद होने पर वीकों और कांधलोतो सहित वीकानेर के सरदारो को फटकारते हुए चरण कवि ने कहा है—

फिट वीकां फिट कांधळां, (फिट) जंगळधर लेडांह।
दळपत हुड़ ज्यूं पकड़ियो, भाज गई भेडांह॥

चापावत हाथीसिंह की वीरतापूर्ण मृत्यु की सराहना करते हुए भी चारण कवियों ने गीत कहे हैं। ऐसे दो गीत निम्न प्रकार हैं—

(१)

धरा जद लीध किसन री कामण, पाण्डा गृहे देखता पाथ।
दिलमा तणा दलै री कामण, हाथी थका न पडिया हाथ ॥ १ ॥

मथरापुरी महल ली मेछा, आगै हथणापुरे अनाड।
नीके तणी न लीधो नैरा, जोधपुरे ऊभे जमजाड ॥ २ ॥

जो हरि तणी त्रिया ली जवना, अरजन नह आयाँ अरसाण।
सिंध-सुतन तरणी विलगा सत्र, पाळ-सुतन पडियै पीढाण ॥ ३ ॥

जादम नार सत्रा ली जोरै, पाडव कर नह सके पहार।
कमधज करनै सरस कमधज रै, सिर पडिया लेग्या सेलार ॥ ४ ॥

(२)

दूठ पाथ देखता, लूट काबा त्रिय लीनी।
सालणसेन त्रिय नीय, भवर लेग्यो रंग भीनी ॥ १ ॥

पडवेम देखता, चीर खचत पचाळी।
अखैराज त्रिय असुर, निहट लेग्यो नह वाळी ॥ २ ॥

कर जुहर खेत अजमेर रै, कमधज जूझे जुहर करि।
पड़िया न मरण दळपत्त रै, हाथी थका न हत्थ अरि ॥ ३ ॥

राजनैतिक व सामाजिक परिस्थितियाँ

"दलपतविलास" का प्रारम्भ उन दिनों हुआ जब भारत की अस्थिर राजनीतिक अवस्था को अकबर के शासनकाल में कुछ स्थिरता प्राप्त हो रही थी और मुसलमानों के आतंक से पीडित हिन्दू समाज को भी अकबर के सहिष्णु व धार्मिक विचारों के कारण कुछ राहत मिल रही थी। पारस्परिक वैमनस्य और आक्रमणों के डर से राजस्थान और शेष भारत के रजवाडे भी एक शक्तिशाली सम्राट का आश्रय लेकर अपने प्रतिद्वन्दियों से निश्चिन्त हो जाना चाहते थे।

राजस्थान के राजाओ ने अपनी वहिन-वेटियो को मुगल अन्तःपुर में भेज कर मुगलों की अवीनता स्वीकार कर लेने के तथ्य पर जैसे छाप लगा दी थी। इस अधीनता का दूसरा लाभ उन्होंने अपने शत्रुओ से वदला लेने में भी उठाया। वीकानेर घराने की जोधपुर और सिरोही से हुई शत्रुता का वदला उन दोनों राज्यो को मुगलो के अधीन कर, उन पर शासन करके उन्हें नीचा दिखा कर लिया गया। राजस्थान के राजा लोग मुगल सम्राट् के रिश्तेदार होने के नाते तो नही पर लड़ाइयो मे प्रदर्शित अपनी वीरता और स्वामिभक्ति के कारण सम्राट् के कृपापात्र अवश्य होगए थे। लेकिन उसकी टेढी भृकुटि से उनके प्राण सूखते रहते थे। दरवार मे हाजिर न होने पर अथवा अन्य छोटे-मोटे कुसूरो पर भी राजपूत सरदार कोड़ो से पीटे जाते तथा हाथी के पैरो तले रौंव दिये जाते थे। सामरिक अभियानों में उनकी सफलता पर उन्हे नई जागीरें देकर खुश किया जाता था, पर तनिक असफलता पर वे मुसलमान सेनापतियो के अधीन रह कर काम करने पर भी विवश किये जाते थे। एक प्रकार से उनकी स्थिति मुगल दरवार के किसी मध्यस्थिति के चाकर से अधिक नही थी। जहां पचासो राजा दासता में एक दूसरे से होड़ लगा कर झुक रहे हों वहां ऐसा होना स्वाभाविक है।

रजवाडों की भीतरी परिस्थिति भी अच्छी नही कही जा सकती। वणिक् दीवान दिन पर दिन शक्तिशाली हो रहे थे और राजा लोग न केवल राज-काज में वल्कि घरू कार्यों में भी उनके इशारों पर चलते थे। मुगलो की चाकरी मे राज्य से वाहर रहने के कारण उन्हें विवश होकर अपने इन देशी दीवानों पर विश्वास करना पड़ता था। दीवानगिरी का ओहदा इसी कारण परम्परागत वपौती की सी चीज हो गई थी। राज्य के भीतर तो उनका प्रभुत्व सर्वाधिक था ही पर मुगल दरवार तक भी उनकी पहुँच होने लगी थी, जहाँ वे अपने राजा के मुख्य सलाहकार के रूप में पहुँच पाते थे। अपनी स्थिति को संभाले रखने और मार्ग की वाधाओं को दूर करने के लिए वे हर प्रकार के षड़यन्त्र रचते थे तथा राजाओ को उनके भाई-वन्धुओं और लड़कों तक से विमुख करने का प्रयत्न करते थे।

राजाओं के निजी भाइयों की स्थिति भी वड़ी दयनीय थी। यदि वे राजा से वना कर नही रख पाते तो उन्हे आजीविका के लिए लूट-खसोट का धन्धा अपनाना

पड़ता था। अपना आत्म सम्मान बनाये रखने के लिए उनका जीवन निर्वाह बड़ा कठिन था। सामरिक दृष्टि से वे राजा की सेना तथा मुगलो के आश्रय मे रहने के कारण उनके साधनो से मुकाबला करने मे असमर्थ थे। इसी दुविधा म या तो वे राजा की अकृपा अर्जित कर उसके आदमियो से लड मरते थे अथवा उसके अधीन रह कर अपना गुजारा करते थे। मुगल दरबार मे उनकी पहुँच भी बहुत कुछ राजा की कृपा पर निभर थी। हाँ, अपनी निजी विशेष योग्यता के बल पर वे वहा अपना स्थान बना सकते थे।

पारिवारिक दृष्टि से भी राजघरानो मे शाति नही थी। राजा लोग अनेक विवाह करते थे और सौतिया डाह के कारण अन्त पुर षडयन्त्रों और कुचक्रों के गढ बने रहते थे। विलासप्रियता के कारण राजा प्राय नई उम्र की रानियो पर कृपा रखते थे और उनके प्रेम के वशीभूत हो उचित अनुचित का ध्यान नही रखते थे।

राजाओ के सामत जागीरदार बडे प्रभावशाली थे। लेकिन तत्कालीन राजनैतिक स्थिति के अनुसार उनके विभिन्न दल होते थे। राजा लोग इन दलो को चाहते हुए भी छिन्न नही कर सकते थे। दल विशेष के व्यक्ति पर राजा की अकृपा होन पर भी वह सुरक्षित रह पाता था। बल्कि अधिक शक्तिशाली हो जान पर ऐस दल राजा को राज्यच्युत भी करने मे समर्थ थे।

लडाइयो का मुख्य कारण राज्य लिप्सा के साथ साथ पारस्परिक वैमनस्य होता था। छोटी मोटी शत्रुता बडे बडे युद्धो का कारण बन जाती थी। असुरक्षा के डर से लोग गुट्ट बना कर रहते थे और लडाई के समय सभी साथ देते थे। किसी भी विशेष हैसियत के व्यक्ति के लिए बिना अनेक व्यक्तियो को पास मे रखे निडर होकर रहना समभव नहीं था। घोडा, शस्त्र और सैनिक की बडी माग थी।

पारस्परिक द्वेष, परम्परागत वैर भाव, लूट-खसोट, बहु विवाह, जातपात, मद्यपान आदि बातें सवसाधारण थी, पर साथ ही वीरता, स्वाभिमान दानशीलता, कष्टसहिष्णुता आदि वैयक्तिक गुण भी सुलभ थे। मुसलमानो के अधीन रह कर भी धार्मिकता कूट-कूट कर भरी थी।

ऐतिहासिक पक्ष

ऐतिहासिक दृष्टि से दलपतविलास में वर्णित सभी घटनायें मुगल इतिहासों से मेल खाती है। जहां कही तनिक अन्तर है वह घटनाओ की तिथियों मे न होकर उन पर लेखकों द्वारा की गई टीकाओ मे है। मुसलमान इतिहासकारो ने किसी घटना विशेष को जिस दृष्टिकोण से प्रस्तुत किया है उसे हमारे लेखक ने अपने भिन्न दृष्टिकोण से समुपस्थित किया है। सिवाने पर महाराजा रायसिंह द्वारा किये गए अभियान की असफलता अब्बुलफज्ल ने घोड़ों के लिए दाने-चारे की कमी आदि के कारण बतलाई है, पर हमारे लेखक ने इसका कारण मुहता कर्मचन्द द्वारा बेईमानी से दुर्ग के अन्दर सामान जाने देना बताया है। दलपतविलास का लेखक बीकानेर की राजनीति से भली भांति परिचित था और पूर्वाग्रहो के होते हुए भी उसने अवश्य ही उस दृष्टिकोण को प्रतिध्वनित किया है जो मुहता कर्मचन्द के विरोधी मुहता की कमजोरियो को ढूंढ निकालने में रखते होंगे। ऐसा करने मे हमारे लेखक ने निस्संदेह निडरता का परिचय भी दिया है क्योंकि मुहता उस समय बीकानेर राजघराने मे बहुत शक्तिशाली व्यक्ति समझा जाता था, जैसा कि पुस्तक मे भी अनेक स्थलो पर लेखक ने स्पष्ट कर दिया है।

जिन घटनाओं का विस्तृत उल्लेख पुस्तक में किया गया है उनसे यह भी स्पष्ट है कि लेखक ने या तो अपनी आंखो देखा हाल लिखा है अथवा किसी बहुत विश्वस्त व्यक्ति द्वारा दी गई ब्यौरेवार जानकारी के आधार पर लिखा है। इतिहास-लेखक की दृष्टि से उसका यह प्रयास निस्सदेह स्तुत्य कहा जाना चाहिए। कही भी ऐसा आभास नही प्रतीत होता कि वह किसी घटना विशेष को अपना रंग देने का प्रयत्न कर रहा है। जो कुछ उसने लिखा है उसे पढ कर यदि हम किसी व्यक्ति विशेष के प्रति कोई धारणा बना लेते हैं, जो लेखक का अभीष्ट भी है, तो उससे घटना को झूठा मानने का कोई कारण नही उपस्थित होता। यह मानी हुई बात है कि राजनीति मे बुरे से बुरे काम भी किये जाते है। अत. मुहता कर्मचन्द ने राजकुमारो को वश में करने के लिए यदि कुछ कुकृत्य किये हों तो कोई आश्चर्य की बात नही होनी चाहिए।

दूसरे, किसी भी इतिहास लेखक की ईमानदारी को हम किसी घटना विशेष को अलग रखकर नहीं जाच सकते। हम उसकी सचाई की परीक्षा उन सभी घटनाओं की साधारण जाच से करेंगे जिनका वर्णन उसने किया है। यह हो सकता है कि जो जानकारी उसकी पहुँच के बाहर थी उसका सुना-सुनाया उल्लेख उसने कर दिया हो, और उसमे सचाई का उतना अश न हो, पर इससे अधिक वह कर भी क्या सकता था। उस समय के साधनो और परिस्थितियों को देखते हुए उसने वही किया जो किया जा सकता था। और फिर हमारे लेखक की पहुँच यदि बहुत ऊंची नहीं तो बहुत नीची भी नही थी। वह बीकानेर राज्य के राजकुमार का निकटतम व्यक्ति होने के कारण तत्कालीन उच्च समाज की घटनाओ की जानकारी रख सकता था, और ऐसे स्थानों पर जा भी सकता था जहां ऐसी घटनायें घटित होती थी। अकबर के पागलपन का जो वर्णन उसने किया है उसके सूक्ष्म वर्णन को देखते हुए यह निश्चित हो जाता है कि वह स्वय वहा विद्यमान था।

चूंकि पुस्तक का ऐतिहासिक समीक्षण भारतीय इतिहास के अधिकारी विद्वान डा० दशरथ शर्मा ने पृथक् रूप से लिख देने की कृपा की है अत मेरे लिये इस विषय पर कुछ और लिखना समीचीन नही जान पडता। लेकिन तत्कालीन इतिहास के अन्य स्रोतो को पढ कर मै इस निष्कर्ष पर पहुँचा हूँ कि दलपतविलास अपने सीमित क्षेत्र मे उन इतिहासो मे से किसी से भी किसी कदर घट कर नही है। उसे हम राजस्थानी भाषा के अत्यंत विश्वस्त इतिहास ग्रथो का अग्रणी मान सकते हैं।

भाषा

दलपतविलास की भाषा प्रौढ राजस्थानी गद्य का उत्तम उदाहरण है। इसे टैसीटोरी की 'प्राचीन पश्चिमी राजस्थानी' युग की उत्तरकालीन भाषा मानते हुए मध्ययुगीन राजस्थानी की प्रारंभिक अवस्था भी माना जाना चाहिए। सज्ञा व क्रिया रूपों में अउ, अइ का सरलीकरण ओ, अ आदि रूपो मे हो चुका था। कही कही 'कयउ' 'आवउ' आदि रूप भी हैं जो सक्रान्तिकाल की सूचना देते हैं। 'पातावत' और 'सकतावत' शब्दों म भी दोनो अवस्थाओ के प्रयोग मिलते हैं। अपभ्रशकालीन द्वित्त वर्णो को भी पूर्ववर्ती आकार मे समन्वित कर लिया

गया था। पर दूसरी ओर संस्कृत की कारक विभक्तियो का पूरा प्रचलन था। सप्तमी-अधिकरण-का रूप 'कितरे हेके दिने गए' मे अपने मूल रूप में विद्यमान हैं। तृतीय पुरुष बहुवचन में रजपूते, हरामखोरे, ठाकुरे आदि प्रयोग प्राप्य हैं।

कही कहीं शब्दों और वाक्यांशों की पुनरावृत्ति मे आई हुई शिथिलता को छोड दें तो शेष सभी सुगठित और व्याकरणसम्मत ही है। सूक्ष्म वर्णन के लोभ ने भी कही कही भाषा में ढिलाई ला दी है। तत्कालीन फारसी तद्भव शब्दों का जी खोल कर प्रयोग किया गया है। दूसरी ओर ऐसे संस्कृत तत्सम और तद्भव शब्द भी है जो आज की राजस्थानी मे दिखाई भी नही देते।

दलपतविलास से पहिले का लिखा राजस्थानी गद्य प्राप्य होते हुए भी वह न तो स्वतंत्र गद्य ग्रथों में मिलता है और न इतने पुष्ट रूप में ही। इसलिए दलपतविलास को हम राजस्थानी का पहला प्रबंध गद्य ग्रंथ मान लें तो भी कोई हर्ज नहीं। इस प्रकार यह ऐतिहासिक दृष्टि से जितना महत्वपूर्ण है उतना ही भाषा की दृष्टि से भी हो जाता है।

इसके गुण-दोषो का विवेचन सुविज्ञ पाठको और विद्वानो द्वारा ही किया जा सकता है। मुझे तो केवल यही संतोष है कि इसे प्रकाशित करने मे मेरा भी यत्किंचित् सहयोग है। वास्तविक श्रेय तो श्री अगरचंदजी नाहटा तथा सादूल राजस्थानी रिसर्च इन्स्टीटयूट को है जिनकी प्रेरणा और सद्प्रयत्नो से यह प्रकाश में आ रहा है। डा० दशरथ शर्मा ने इसे ऐतिहासिक दृष्टि से जांच कर विवेचन प्रस्तुत किया इसके लिए मैं उनका भी कृतज्ञ हूँ।

नववर्ष दिवस १९६१
मीरां मार्ग
बनीपार्क, जयपुर।

रावत सारस्वत

दलपत
विलास
२

॥ श्रीगणेशाय नमः ॥ श्रीसूर्याय नमः ॥ प्रथम जल न जला कार कछु तो ति
हां निरंजन निराकार ब्रह्म तमाहि पोदी या कछु ता तदा मन माहि इच्छा
पनी जु सृष्टि उपाई सु तदा मन सा देवी माया तें उपनी। माया थकी थोक
डइ रूप नां। आत्मा एक। द्वितीयो परमात्मा। तादृशं माया से तीजु जीव सो ते
जीवात्मा माया थकी जु लिन रह्यो ते परमात्मा। जादृश परमात्मा माया दि
सि देष्या ति वारी थी महतत्व नीपनां। महतत्व थकी अहंकार नीपनो। अहंका
र त्रिकु प्रकार कह्यो है। एक सात्विक। बीजो राजस। तीजो तामस। सात्विक
अहंकार थी मन अरु देवता इन्द्रिया का अधिष्ठाता नीपना। राजस अहंकार तें
दस १० इन्द्री नीपनां। पांच ज्ञानेन्द्री। पांच कर्मेन्द्री। एवं १० तामस अहंकार ते पांच

"दळपतविलास" की पाण्डुलिपि के प्रथम पृष्ठ की फोटो प्रति

चह्नालक्रु परि राजा लगवान दास नुं अर मांन सिंघजी नुं समगति की। असे राजवी
के। उथिबी जावा कुरत्तगति रेख्याल बेकाम का डक्कै बे अर कुंवर मांन सिंघजी
कुंवर श्री दलपतजी रावड़ रगे पक्का बेगा बे। तिस डेपके रड़ अ तक सूं तो पायो क्रतो
अर कुंवरजी मांन सिंघजी रे वास ते आ इ अर सोवक सिअ स्कटारे का ढि अर जिसडो
मांन सिंघजी नुं वाहण हारो क्यो वास्ते वादे तिसडा इस्यो। तारां कुंवर श्री दलपतिजी
री दृष्टि पडीया। दलपत कुंवर देखि अर रावड़ रगे नुं कहीयो जु औ कटारो वादे मां
न सिंघजी नुं देषो का संभालो ता दरां रावड़ रगो दाथ्या कालीयो।

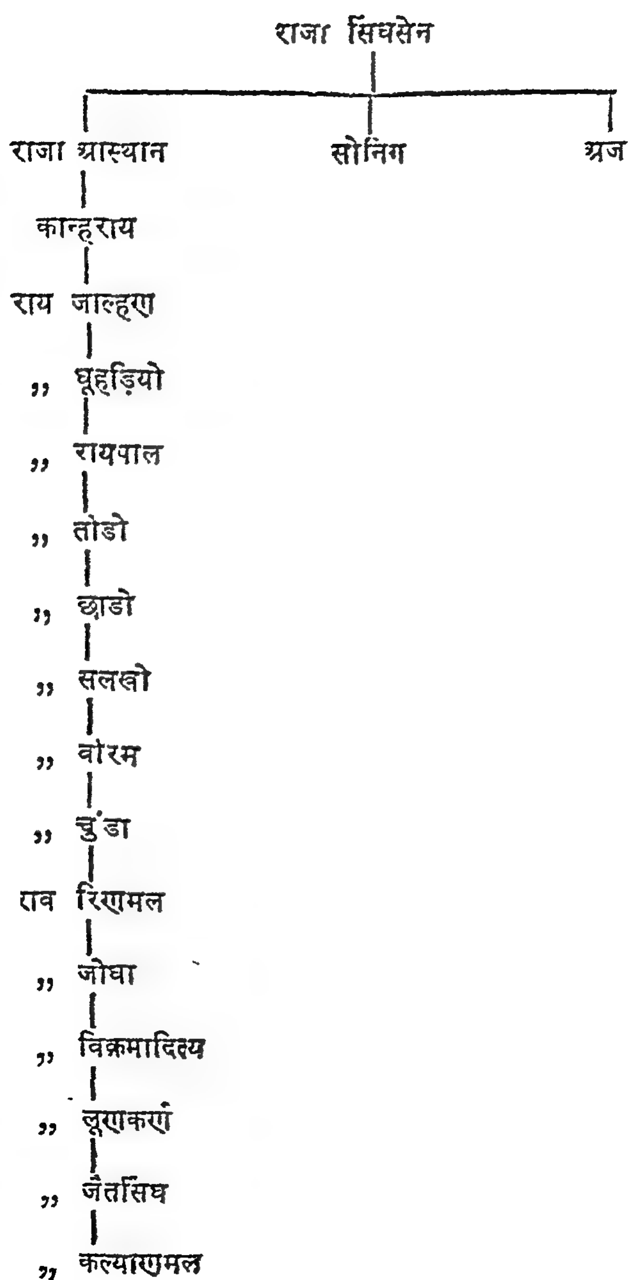
"दळपतविलास" की पाण्डुलिपि के अन्तिम पृष्ठ की फोटोप्रति

दलपतविलास

(इतिहास की दृष्टि से समीक्षण)

दलपतविलास भारतीय इतिहास का अमूल्य साधन है। खेद यही है कि इसकी समग्र प्रति अप्राप्य है । रचयिता ने अनेकशः लिखा है कि 'इस घटना का वर्णन विस्तार से किया जाएगा', जिससे प्रतीत होता है कि उसने दलपत-विलास की घटनावली पर अन्यत्र बहुत कुछ और भी लिखा है । किन्तु इस सम्पूर्णाङ्ग वर्णन के प्राप्त होने की आशा कम ही है। ग्रन्थ के रचयिता का नाम भी सम्भवतः सदा अज्ञात ही रहेगा। इसकी संस्कृत मिश्रित पदावली, केशवराय (विष्णु) के कई बार भक्तिपूर्वक उल्लेख (पृ० २६, ४०, ६० आदि) और चारणी-शक्तियों के विषय में प्रायः मौन से कुछ ऐसा आभास अवश्य होता है कि रचयिता सम्भवतः चारण-जातीय न था। किन्तु यह अनुमान मात्र ही है, निश्चित तथ्य नहीं । कुछ चारण भी संस्कृत प्रेमी रहे होंगे। यह भी सम्भव है कि सोलहवीं शताब्दी में उनमें शक्ति-पूजा का इतना प्रसार न रहा हो जितना अब है ।

दलपतविलास ने राठोड़ों को सूर्यवंशी माना है। आजकल राठोड़ प्रायः अपने आपको कन्नौज के राजा जयचन्द्र के वंशज मानते हैं । दलपतविलास ने जयचन्द्र और कन्नौज से राठोड़ों के सम्बन्ध का बिना उल्लेख किये ही, राजा सिंघसेन (सीहोजी) से इनकी वंशावली आरम्भ की है । वंशक्रम इस प्रकार है --


राजा सिंघसेन
राजा आस्थान
सोनिग
अज
कान्हराय
राय जाल्हण
,, धूहड़ियो
,, रायपाल
,, तोडो
,, छाडो
,, सलखो
,, वीरम
,, चुंडा
राव रिणमल
,, जोधा
,, विक्रमादित्य
,, लूणकर्ण
,, जैतसिंघ
,, कल्याणमल

महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंघ (विद्यमान)

महाराजकुमार दलपतजी

सभाशृंगारहार कुंवर उदयसिंघ	कुंवर सबलसिंघ	कुंवर तुलसीदास

दयालदास ने दलपतजी का जन्म सं० १६२१ (सन् १५६४ ई) में रखा है। इनके छः रानियां भी थीं। किन्तु इनके तीनों पुत्रों का जन्म जिनके नाम ऊपर की वंशावली में हैं संभवतः सं० १६४५ (सन् १५८८ ई०) से पूर्व न हुआ होगा। रायसिंहजी का देहान्त सं० १६६८ में हुआ। ये दलपतविलास की रचना के समय विद्यमान थे। अतः इस ग्रंथ की रचना का समय संवत् १६४५ और १६६८ (सन् १५८८ और सन् १६११ ई०) के बीच में होना चाहिए। ग्रंथ के नाम को देखते हुए यह भी सम्भव है कि इसमें दलपतजी द्वारा शाही सेना की पराजय का उल्लेख रहा हो। यह अनुमान ठीक हो तो ग्रंथ का रचना-काल सन् १६०० के आस पास होना चाहिये। उपलब्ध भाग दलपतजी के १३ वें १४ वें वर्ष तक की घटनाओं से ही सम्बद्ध है।

ग्रंथ की कथा का आरम्भ कल्याणमलजी के राज्य से है। इनके पिता जैतसिंघ जोधपुर के राव मालदेव से युद्ध करते मारे गये और कल्याणमल के राज्यारोहण के समय जोधपुर की सेना का बीकानेर पर अधिकार था। दिल्ली के बादशाह शेरशाह ने इन्हें राज्य वापस लेने में सहायता दी। ग्रंथकार ने यह भी कहा है कि अपनी आपत्ति के समय में शेरशाह और उसके पुत्र इस्लामशाह ने जैतसिंह की नौकरी की थी। इसी ऋण से उऋण होने के लिए शेरशाह ने मालदेव पर आक्रमण किया। बीकानेरी राजा को इस प्रकार परोपकार से उऋण करने की कथा सम्भवतः कल्पनाप्रसूत है। किन्तु ऐसी छोटी मोटी कल्पनाएं तो ख्यातकार करते ही रहे हैं। इससे उनके मुख्य कथानक की सत्यता में कुछ कमी नहीं आती। ग्रंथ में मालदेव की पराजय और कालिंजर के सामने बारूद से जल कर शेरशाह की मृत्यु का वर्णन सर्वथा इतिहाससम्मत

है । किन्तु शेरशाह और सलेमशाह (इस्लामशाह) का राज्यकाल कुछ अशुद्ध है । शेरशाह ने आठ वर्ष नही, केवल पांच वर्ष दिल्ली पर राज्य किया । इस्लामशाह का राज्यकाल भी सात वर्ष नही आठ वर्ष, आठ महीने और दो दिन है । अपने भानजे को मार कर ममरेजखान[१] (मुहम्मद आदिलशाह) के राज्य हड़पने और हेमू के सर्वाधिकारी बनने की कथा प्रायः ठीक ठीक और संक्षेप मे हमे दी गई है । किन्तु हुमायूं ने पंजाब मुहम्मद आदिलशाह को नही, अपितु सिकन्दरसूर को हरा कर हस्तगत किया था ।

हुमायूं की मृत्यु के बाद अकबर के कलानौर में सिंहासनारूढ होने और हेमू से लड़ने का वर्णन कुछ अधिक विस्तृत है । किन्तु हेमू ने कालिंजर से नही चुनार से बढ कर दिल्ली पर आक्रमण किया था । इस ग्रंथ मे लिखा है कि जब तुरतीबेग (तर्दीबेग खान) युद्ध मे हार कर भाग निकला और अकबर के पास पहुँचा तो भैरवबेग (बारबेगी अली दोस्त ?) और वलीबेग ने उसे कायरता के लिए बुरा भला कहा और बादशाह की आज्ञा से मार कर गाड़ दिया । अकबर-नामे के अनुसार तर्दीबेग की हत्या इन उमराओं ने स्वयं की; बादशाह ने ऐसी कोई आज्ञा न दी थी । पानीपत के पास एक गहरे नाले को पार करती समय एक हजार सवारों के डूबने की कथा भी उसमें नही है । इस ग्रंथ मे लिखा है कि हेमू ने अपने हवाई हाथी पर चढ कर युद्ध का सञ्चालन किया था; किन्तु उसकी आंख में तीर लगते ही पठान सेना भागने लगी । हेमू का हाथी भी उनके साथ था । पकड़े जाने पर महावत ने शाह कुलीखान और वलीबेग से कहा, 'बसंतराय (हिमू) तो यही है ।' तब वे उसे पकड़ कर बादशाह के सामने गये । खानखाना ने उसे मार कर बादशाह को ग़ाजी की पदवी प्राप्त करने की सलाह दी किन्तु बादशाह ने ऐसा न किया । तब एक तरफ से बैराम खान ने और दूसरी तरफ से वलीबेग[२] ने उसे पकड़ कर मार डाला । अकबरनामे और मुंतखब-

---

१. वास्तविक नाम मुबारिजखान है ।

२. बैराम खां के आपत्तिकाल में वलीबेग ने उसका साथ दिया (अकबरनामा, भाग २, पृ० १५७) आइने अकबरी में यह २५० के मनसबदारों में गणित है ।

उद्-तवारीख की कथा भी प्राय ऐसी ही है। किन्तु व्हो ए स्मिथ आदि कुछ इतिहासलेखक यह सिद्ध करने पर तुले हैं कि अकबर ने ही हेमू की हत्या की थी।

अकबर और बैरमखान मे मनोमालिन्य किस कारण से उत्पन्न हुआ इसका वर्णन दलपतविलास मे नहीं है। किन्तु दलपतविलास का यह कथन सत्य है कि अन्यत्र शरण न मिलने पर बैरमखान बीकानेर कल्याणमलजी की शरण में पहुँचा। अकबरनामे मे भी बीकानेर म उसके कई दिन तक सानन्द ठहरने का उल्लेख है। (भ ग २ पृ० १५६)

चित्तौड म रायसिंहजी के विवाह का वर्णन अन्य स्थानो और गीतो में भी प्राप्त है। इस विवाह से उनके दो पुत्र हुए, भोपत और इस ग्रथ के चरित्रनायक दलपत। जब अकबर को राज्य करते बारह वर्ष हुए, कल्याणमलजी ने बीकानेर कुल की दो राजकुमारिया अकबर को विवाह दी। इनमे एक भीमराज की पुत्री भाणमती (भानुमती) और दूसरी कान्हजी की पुत्री राजकुवारि (राजकुमारी) थी, सवत् १६२७ मगसिर सुदि ६ के दिन बादशाह ने कल्याणमलजी को बीकानेर से बुलवा भेजा। कल्याणमलजी को उसने कुछ समय बाद वापस बीकानेर भेजा और रायसिंहजी को अपने पास रख लिया। अकबरनामे मे भी कान्हजी की पुत्री से अकबर के विवाह और कल्याणमलजी के अकबरी दरबार में पहुँचने का उल्लेख है।

1 "इसके एक साल बाद गुजरात पर आक्रमण करने से पूर्व अकबर ने योधपुर (जोधपुर) कल्याणमलजी को दिया और कल्याणमलजी रायसिंहजी को जोधपुर में रखकर वापस चले गए।" दलपतविलास मे वर्णित इस तथ्य को इतिहासकारों ने अनेक रूप में लिखा है। "मन्त्रि कर्मचन्द्र वशावली प्रबन्ध" ने कल्याणमल को जोधपुर दिलवाने का श्रेय कर्मचन्द्र बच्छावत को दिया है। इसके बदले म कल्याणमल ने कर्मचन्द्र की अनेक धार्मिक मागें पूर्ण कीं और उसे चार गाव इनाम में दिये (श्लोक २७१–२८६)। बदायूनी के कथनानुसार अकबर ने रायसिंह को जोधपुर का सूबेदार बनाया। लक्ष्य यह था कि गुजरात पर आक्रमण के समय राणा कीका (महाराणा प्रताप) किसी तरह की हानि न पहुँचाए। वास्तविक तथ्य यही रहा होगा।

सिरोही के राव मान और रायसिंह के वैमनस्य का कारण दलपतविलास ने स्पष्ट रूप में दिया है। जिसकी बहन को राव मान ने मरवा दिया हो उससे मैत्री किस तरह हो सकती थी ? दलपतविलास मे लिखा है कि इसी वैर के बदले मे कंवर रायसिंह ने सिरोही पर आक्रमण किया और उसे लूटा। अकबरनामे मे इस घटना की तिथि १७ अबान (२४ अक्टूबर सन् १५७२) दी गई है। सिरोही भी रायसिंहजी की देखरेख में रखी गई (खण्ड ३, पृ० ७-८)।

ग्रंथ मे मुसलमानी नामो के राजस्थानीकरण से कभी कभी उनका ठीक स्वरूप जानने में कठिनता होती है। अकबर की गुजरात पर पहली चढाई का वर्णन करते हुए हमारे ग्रंथ मे लिखा है कि जब बादशाह गुजरात पहुँचे तो 'तमतखान आया और उसने बादशाह को गुजरात पेश की।' 'तमतखान' वास्तव मे इतिमादखान है जो गुजरात के सुल्तान मुजफ्फरशाह का प्रबन्ध मन्त्री ही नहीं, अपितु गुजरात राज्य का सर्वेसर्वा भी था। किन्तु तत्कालीन राजनीतिक स्थिति मे वह अकबर को अहमदाबाद की चाबियां ही पेश कर सका। सब गुजरात पेश करना उसके लिए सम्भव न था क्योकि अकबर के विरुद्ध विद्रोह करके सम्बल से भागे हुए मिर्जाबन्धुओं ने समुद्र के तटवर्ती प्रान्त को अधिकृत कर सूरत के दुर्ग को अपना मुख्य केन्द्र बना लिया था। अकबर को उसे हस्तगत करने में पर्याप्त प्रयत्न करना पडा।

दलपतविलास ने मिर्जाबन्धुओं को उलक के पुत्र मानने में कुछ भूल की है। उसका यह कथन भी कि सूरत को जब बादशाह ने जीता, दोनों भाई झूझारखान और उलूखान वहां थे, कुछ भ्रान्ति उत्पन्न कर सकता है। इनके विषय में दलपतविलास मे लिखा है कि (गुजरात के बादशाह) महमूद के मरने पर ये चंगसखां के नौकर हुए। किन्तु कुछ समय बाद इन्होने चंगसखा को मारा इस लिये चंगसखां की स्त्री ने अकबर के पास पुकार की। बादशाह ने उन्हें हाथी के पैर मे बन्धवा कर मरवा दिया और चगस की स्त्री को अपने महल मे रखा। उपर्युक्त कथन अंशतः ठीक है। सभी मिर्जा बन्धु उलक (उलूग खां) के पुत्र न थे। इनमे से कई वास्तव में उसके भाई मुहम्मद सुल्तान मिर्जा की संतान थे। मुहम्मद सुल्तान मिर्जा सरकार सम्बल मे जागीरदार था और उसके चार पुत्र थे, इब्राहीम

हुसैन, मुहम्मद हुसैन, मासूद हुसैन और आकिल हुसैन। इन्होंने सन् १५६७ मे अकबर के विरुद्ध विद्रोह किया और मालवे के कुछ भाग पर अधिकार कर लिया। जब अकबर ने महाराणा उदयसिंह पर चढ़ाई की तो उसने एक सेना मालवे भी भेजी। मिर्जा बन्धु उज्जैन छोड कर माण्डू आ पहुँचे और वहीं मिर्जा उलूग खा की मृत्यु हुई। माण्डू से निकल कर शेष मिर्जाओ ने चगेज खा की शरण ली जिसने अपने स्वामी सुल्तान महमूद गुजराती की मृत्यु के बाद चापानेर, भरोच और सूरत आदि अनेक स्थानों पर अधिकार कर लिया था। अहमदाबाद हस्तगत करने मे मिर्जाओ ने उसे सहायता दी। इसलिये चगेजखा ने उन्हे अच्छी जागीरें दी। किन्तु कुछ दिन बाद मिर्जा बन्धु चगेज खा के भी विरुद्ध हो गए, और जब चगेज खा को जुझार खा हब्शी ने[1] धोखे से मार डाला, तो वे फिर गुजरात जा पहुँचे और चाम्पानेर और सूरत के स्वामी बन गए। भरोच भी कुछ समय के बाद उनके हाथ लगा। गुजरात के मन्त्री इतिमादखा और उसके मित्रो ने अकबर की सेना के आने पर शाही अधीनता स्वीकार करने का ढोंग किया था। अब उनमे से कई ने विद्रोह किया, और अकबर को तुर्फानी आक्रमण का सामना करना पडा।

इब्राहीम हुसैन मिर्जा उस समय बरोच मे था। अकबर ने सर्वप्रथम उस पर आक्रमण करने का निश्चय किया। इब्राहीम हुसैन बादशाह के समीप होकर निकला। यह भी सम्भव है कि दलपतविलास का यह भी कथन सत्य हो कि उसने बादशाह के उर्दू बाजार (कैम्प) से खाने पीने का सामान लिया था। बदायूनी ने लिखा है (२, १४६) कि वह शाही कैम्प से लगभग आठ कोस की दूरी पर था। बादशाह के साथ कम आदमी थे। तो भी उसने मिर्जा का पीछा किया। महीन्द्री नदी के किनारे जब बादशाह पहुचा केवल दो घंटे दिन बाकी था। सभी हिन्दू सरदारो ने अकबर को कुछ समय ठहरने की राय दी जिससे बाकी सेना आ मिले (द० वि० १६) किन्तु अकबर आगे बढ़ता ही गया और अपनी छोटी सी टुकडी की सहायता से इब्राहीम पर आक्रमण कर दिया। भारमल का लडका भोपत इस सग्राम मे काम आया (द० वि० २०)।

---

१ इसका साथी उलुगखां भी हब्शी था, और मिर्जा उलुगखां से भिन्न है।

उसे भगवंतदास का भाई बतलाते हुए उसकी वीर गति का अबुलफज्ल ने भी उल्लेख किया है (खण्ड तीन पृष्ठ २०)। इब्राहीम हुसैन मिर्ज़ा वहां से भाग निकला। सोजत और सिरियारी होता हुआ वह नागोर पहुंचा और उसे घेर लिया (द० वि० २१)। कलाखां (खान किलान)[1] का लड़का फर्रुखखान नागोर का अधिकारी था। रायसिंह के वहां पहुंचते ही इब्राहीम नागोर शहर छोड़ कर आगे निकल गया (द० वि० २१)। अबुलफज्ल का विवरण दलपतविलास से कुछ अधिक विस्तृत है। उसने बताया है कि नागोर की स्थिति उस समय दुसाध्य थी और रायसिंह एवं उनके साथियों को नागोर बचाने का पूरा श्रेय दिया है (२, ४६)। उसने यह भी लिखा है कि अधिकारिवर्ग मिर्ज़ा का पीछा करने का विशेष इच्छुक न था, किन्तु रायसिंह के जोर देने पर उन्होंने दूसरे दिन अपनी सेनाएं बढ़ाईं। नागोर के गांव कठोती में[2] उन्होंने मिर्ज़ा को जा पकड़ा। रायसिंह ने सेना के मध्य भाग की कमान अपने हाथ में ली। मुगल सेना का एक भाग विचलित हो उठा। रायसिंह उसकी सहायता के लिये जा पहुंचे और शत्रु को मैदान छोड़ कर भागना पड़ा।[3] दलपतविलास में लिखा है (पृ० २१) कि बादशाह 'किलचखान' को सूरत सौंप कर फतहपुर सीकरी लौटे। इस उमराव का सही नाम कुलीजखान है। यह आगे जाकर ६,५०० सवार का मनसबदार बना और टोडरमल की मृत्यु के बाद अकबर का दीवान भी रहा। अजीज खान कोका गुजरात का सूबेदार नियत हुआ। यह अकबर का धाभाई था।

---

१. इसकी मृत्यु दिसम्बर, १७७५ में पट्टन (गुजरात) में हुई (अकबरनामा, ३, २३१)। दलपतविलास ने खान किलान को कलाखान बना दिया है।

२. दलपतविलास में कठोती नाम दिया है। अकबरनामे की फारसी कलम में गांव का नाम कहतोनी, कहलोती और कठोली में परिवर्तित हो गया है। प्रशस्ति में गांव का नाम काठी है।

३. मन्त्रि कर्मचन्द वंशावली प्रबन्ध (२८७-२८६) और बीकानेर दुर्ग की प्रशस्ति ने भी इब्राहीम की पराजय को रायसिंह के जीवन की एक मुख्य घटना माना है

इधर दूसरे मिर्जा बन्धु मुहम्मदहुसैन ने गुजरात मे गडबड शुरू की। दलपतविलास में (पृ० २२) यह ठीक ही लिखा है कि खान आजम (अजीज खान कोका) ने अहमदाबाद के दुर्ग मे आश्रय लेकर शत्रु का सामना किया और बादशाह से सहायता मागी, किन्तु उसका यह कथन अत्युक्तिपूर्ण है कि रायसिंह के सिवाय कोई उमराव गुजरात पर फौज लेकर बढ़ने के लिए तैयार न हुआ। वास्तव मे अकबर के अनेक मनसबदार गुजरात के इस द्वितीय अभियान मे सम्मिलित हुए। बादशाह स्वय उनका अग्रणी था। अकबर की सेना इतनी शीघ्रता से गुजरात पहुँची थी कि मुहम्मद हुसैन मिर्जा आश्चर्य-चकित रह गया। रायसिंह ने अपने शौर्य का अहमदाबाद के युद्ध मे अच्छा परिचय दिया और युद्ध के बाद बादशाह ने रायसिंह की निगरानी में ही मिर्जा को रखा (अकबरनामा, ३, ८१-५)। जब विद्रोही इख्तियारुल मुल्क की सेना अकस्मात् मदान में दिखाई पडी रायसिंह के आदमियो ने बादशाह की आज्ञा से मिर्जा की समाप्ति करदी। इसी युद्ध का निर्देश करते हुए बीकानेर दुर्ग की प्रशस्ति मे भी लिखा है —

यश्चाजौ निजधाम गौर्ज्जरधरा विध्वस्पूलूकात्मज ।
बद्ध्‌वानीय च तद्‌बलात्सुविपुलात् श्रीरायसिंह कृती ॥

दलपतविलास ने इन सब बातो की समाप्ति 'इएा बात रो विस्तार आगै कहीजसी' कह कर दी है। किन्तु इस सेवा के बदले रायसिंह को जोधपुर के अतिरिक्त नागोर, सरसा, भरोट आदि के परगने मिले उनके विषय मे अवश्य लिखा है।[1]

इसके बाद दो एक छोटी-मोटी घटनाओ के बाद हमारे ग्रथ में कल्याणमल की मृत्यु का वर्णन है। उसी साल (जयपुर के) राज भारमल की मृत्यु हुई। दोनो के मृत्यु के समय मे केवल आठ दिन का अन्तर था (पृ० २४) कुछ समय के बाद महाराज रायसिंह को सिवाणे के विरुद्ध भेजा गया (द० वि० २४)। अन्य ग्रथो से हमे ज्ञात है कि सिवाणा उस समय जोधपुर

१. दयालदास ने इस युद्ध में काम आने वाले बीकानेरी सरदारों की पूरी सूची दी है—देखें दयालदास री ख्यात, (भाग २, पृ० १०४)।

के राव चन्द्रसेन के अधिकार मे था। अकबर के अधीन होना चन्द्रसेन जैसे स्वाधीन वृत्ति के व्यक्तियो को अखरने लगा था। किन्तु रायसिंह तो अकबर के पक्के नौकर थे। जो व्यक्ति रायसिंह के साथ थे उनके नाम अकबरनामे और दलपतविलास में भी दर्ज हैं। दलपतविलास का जगतमणि धर्मचन्द का पुत्र जगतराय है। मुविहाणकुली शायद (तुर्क) सुभान कुली हो, यद्यपि उसका नाम अकबरनामे में नही है। अलहदी अहदी का भ्रष्ट रूप हो सकता है जो अकबरकालीन कुछ विशिष्ट सैनिक अधिकारियों की पदवी थी।

कर्मचन्द्र बच्छावत ने किस प्रकार महाराज रायसिंह को राजमाता और राजकुमार भोपत के विरुद्ध किया उसका उल्लेख करने के बाद द० वि० (दलपतविलास) ने फिर सिवाणे के घेरे का वर्णन दिया है। उसमें लिखा है कि कर्मचन्द बेईमानी से गढ़ मे रसद न जाने देता तो गढ़ टूट जाता। किन्तु यह बात विशेष विश्वस्य प्रतीत नही होती। सोजत की लड़ाई का और जोधपुर प्रदेश मे रायसिंह की विजयों का वर्णन अकबरनामे में भी है (३, ११३)। अकबर के अजमेर पहुँचने पर रायसिंह ने जो नई सेना के लिए अर्ज की थी उसके बारे में भी अबुलफज्ल ने लिखा है कि अकबर को रायसिंह की राय पसन्द आई और उसने रायसिंह को वापस अपने काम पर भेजा। किन्तु नई भेजी हुई फौज भी अंशतः ही सफल हुई। इससे अकबर नाराज हुआ (३, १५५)। रायसिंह के भाई सुल्तानसिंह और रामसिंह ने भी मेड़ते से सहायता के लिये प्रार्थना की (३, २२४)। अकबर सन् १५७६ में अजमेर पहुँचा और रायसिंह को अपने पास बुला लिया। अन्ततः जैसा द० वि० ने लिखा है अकबर ने शाहबाजखां को भेजा और उसने सिवाने का दुर्ग हस्तगत किया, किन्तु हम उसके इस कथन से सहमत नही है कि सिवाने के इससे पूर्व न टूटने का सब दोष कर्मचन्द्र बच्छावत की बेईमानी थी। वास्तविक बात तो यह है कि शाहबाजखां मुहासरे की कला मे अधिक कुशल था, रायसिंह मुख्यतः मैदानी लड़ाई लड़ने वाले थे। अकबरनामे में लिखा है कि शाहकुली महराम और राय रायसिंह ने सेना का अच्छी तरह प्रबन्ध न किया था। घोड़े कमजोर हो गए और

जो और चारे की कमी से सिपाही पीड़ित हुए (३, २३७)। यही प्रबंध की कमी रायसिंह के तबादले का कारण बनी होगी।[1]

दलपतविलास में इससे आगे दिया हुआ वर्णन कुछ अधिक रोचक है। संवत् १६३२ (सन् १५७५-६ ई०) में जब अकबर के करोड़ी बीकानेर पहुँचे तो रायसिंह के ज्येष्ठ पुत्र भोपत ने उन्हें ऐसा धमकाया कि वे बीकानेर से निकल गए (द० वि० ३३)।[2] भोपत स्वयं ऐश करने लगे। इससे रायसिंह नाराज हुए और अपने पास बुलाकर राजकुमार को दण्ड दिया। कनिष्ठ पुत्र दलपत पर विशेष स्नेह दिखाकर उन्होंने बीकानेर भेजा और भोपतजी को साथ लाकर बादशाह के पास अजमेर पहुँचे। भूख न लगने पर दलपतजी के पेट पर दाग लगाये गये। इनके लिए भी ग्रंथकार ने कर्मचन्द्र बच्छावत को दोष दिया है (द० वि० ३५-४१)।

जब कर्मचन्द्र और रायसिंहजी ने अकबर से अर्ज करके जोधपुर छोड़ दिया तो अकबर ने संवत् १६३४ (सन् १५७७) में उन्हें मेड़ता देकर सिरोही के विरुद्ध भेजा। उनके साथ में सय्यद हाशिम व कासिम थे। तुरसमखान को बादशाह ने गुजरात के लिए नियुक्त किया किन्तु सिरोही की विजय के लिये उसे भी रायसिंह के साथ कर दिया। राजाजी ने बासोर, चोटीला और रोहीस आदि स्थानों पर विजय प्राप्त की (द० वि० पृ० ४१-४३)।[3] कुछ समय बाद सिरोही का राव सुरतान रायसिंह से आकर मिला। बादशाह की अधीनता स्वीकार करने के लिए रायसिंह ने उसे भोपत के पास भेजा।

---

१ कर्मचन्द्र वंशावली प्रबन्ध में सोजत और समियाना आदि स्थानों में विजय का श्रेय कर्मचन्द्र को दिया है (श्लोक २६२) जो सत्य न होते हुए भी कविप्रथा के अनुकूल है।

२ अकबरनामा (३, १७७) से निश्चित है कि इसी समय अकबर ने पहले पहल करोड़ियों की नियुक्ति की थी। इनके अत्याचारों का वर्णन बदायूनी में किया है (मुन्तखब-उत्-तवारीख (पृ० २, १९२)।

३ द० वि० = दलपतविलास।

अकबरनामे में इनमें से कुछ घटनाओं का वर्णन अधिक विस्तृत है, किन्तु मुख्य बातें यही हैं। रायसिंह ने सिरोही के राजा सुरतान देवडे पर सिरोही मे घेरा डाला। बीकानेर से उसने अपने घरवालो को भी बुला भेजा। सिरोही के राव ने काफिले पर विफल आक्रमण किया और कुछ समय बाद सिरोही छोड़कर आबूगढ़ चला गया। सिरोही का इलाका बादशाही साम्राज्य में सम्मिलित कर लिया गया। जब बादशाही फौज आबू पहुँची तो सुरतान शाही अफसरो से आ मिला और रायसिंह उसे लेकर शाही दरबार के लिए रवाना हुए (३, २७८-९)।

दलपतविलास ने इसी बीच में बीकानेर की कुछ घटनाओ का भी वर्णन किया हैं, जिनका अपना अलग महत्व है। नवे के जाटों से महेश नाम के राजपूत का झगड़ा हुआ। इस पर रामसिहजी के राजपूत केशव ने नवे के जाटो को मारा, पीटा और बांध दिया। राजकुमार दलपतजी ने यह सुनते ही उन पर चढाई की, तो केशव अपना सब सामान लेकर रामसिहजी के पास कल्याणपुर चला गया। जब रायसिंह के भाई रामसिंह, सुरताण, प्रिथीराज आदि सिरोही जाने को तैयार हुए तो केशव भी साथ हो लिया और रामसिंह को उसे साथ में लेना पड़ा। रामसिंह ने यह भी प्रयत्न किया कि केशव कुंभलमेर पर चला जाए, किन्तु केशव इस पर राजी न हुआ। उसने रामसिंह से कहा कि वह कोई जानवर तो था ही नहीं जो वे उसे हर किसी को सम्भलवादें। रामसिंह को फिर उसे साथ में रखना पड़ा। सामन्तशाही युग की प्रथाओ का यह अच्छा नमूना है।

दूसरा नमूना भी इसी ग्रंथ में है। महाराजा रायसिंह के भाई प्रिथीराज और रामसिंह जब सिरोही पहुँचे तो उन्होने देवड़े बीजे के यहा भोजन किया। देवड़ा बीजा सुरतान का विरोधी था। इसलिये रायसिंह इस बात से नाराज हुए। किन्तु रामसिंह ने उनसे कहा, 'हम यह जानते न थे। पहले ठाकुर जब गढरोध करते तो एक दूसरे से चौपड़ खेलते थे। इसलिए हमने भी बीजे के घर भोजन किया। अब गुनह मुआफ होना चाहिए।'

किन्तु ये प्रथाएं अनेकश वैमनस्य का कारण बन जाती। बादशाही बख्शी के सामने सवारों को पेश करते समय केशव घोड़े पर चढ़ा ही रहा। उसने तसलीम भी न की। इससे रायसिंह ने केशव को मरवाने का निश्चय किया। किन्तु वह रामसिंह का साथ न छोड़ता। अन्ततः रायसिंह ने रामसिंह को अपने पास से चार महीने के लिए दूर कर दिया (द० वि० ४६-५०)। वे केशव का कुछ न बिगाड़ सके।

अकबर के शक्तिशाली राज्य में भी उत्तर भारत के अनेक भूभागों में बादशाही शक्ति कितनी सीमित थी इसका निदर्शन भी हमें इस ग्रंथ से प्राप्त है। रायसिंह के एक भाई अमरसिंह ने बादशाही सांडें (ऊंटनी) लूट ली थीं। महाराजकुमार दलपतजी ने उसका पीछा किया, किन्तु वे उसे पकड़ न सके। इतने में राजकुमार को रायसिंहजी का दूसरा पत्र मिला। दलपत ने अमरसिंह के गांव पर चढ़ाई की तो अमरसिंह के आदमियों ने कहलाया कि कंवर वापस जाएंगे तो वे गांव छोड़ देंगे, अन्यथा नहीं। कुछ लड़ाई हुई जिसमें दोनों तरफ के लोग घायल हुए। दलपत ने अमरसिंह के गांव को जलाया और लूटा और फिर गोसाईसर वापिस आए।

इधर रामसिंह रायसिंह के पास से वापस अपने गांव पहुंचे। रायसिंह से बिगाड़ करना उचित न समझ कर उन्होंने दलपत से गाड़ियां मंगाई और उनमें सामान लाद कर नोहर चले। रायसिंहजी के भाई प्रिथीराज और सुरतान भी इसी समय रायसिंह से नाराज होकर सिरोही से वापस आए। रामसिंहजी के बहुत समझाने बुझाने पर भी उन्होंने देश में ज्यादती की। रामसिंहजी ने इससे दुःखी होकर अपने जीवन का उत्सर्ग करने का विचार कर लिया। बातों बातों में दलपतजी के साथियों को उकसा कर वे राजदवासे जा पहुंचे। शत्रुओं ने भी इसे ठीक मौका समझ कर उन पर आक्रमण कर दिया, और रामसिंहजी ने अपने कुछ साथियों सहित वीर गति प्राप्त की। रामसिंह के साथियों ने युद्ध में जाने से पूर्व अपने शरीरों को चक्रों से चिह्नित किया और शत्रुओं ने इन पर तलवारों का ही नहीं गोलियों का भी प्रयोग किया। आषाढ़ सुदी पूर्णिमा संवत् १६३४ के दिन रामसिंहजी की मृत्यु हुई।

बादशाह के हाथ से कटारी ली। सब उमरावों को हुक्म हुआ कि वे पगड़िय— उतारे। हिन्दुओ और मुसलमान सरदारों ने पगड़ियां उतार कर बगल में डाली। बादशाह ने बाल बनवा डाले। फिर राठोडों और राजावतो की तो बादशाह ने प्रशंसा की, किन्तु शेखावतों के लिए कहने लगे, 'ये शेखावत तो निरे जाट हैं आदि।'' जब आधी रात हो गई तो 'शाहफतलह' (शाह फतहुल्ला शिराजी)[1] बादशाह को गया तथा महलो मे ले गए।

राजपूत सरदार सभी सशङ्कित थे। दूसरे दिन प्रातःकाल ही शंखचक्रादि से शरीर को चिह्नित कर वे मरने के लिए उद्यत हो गए। बादशाह ने दाढी की हजामत करवाई, और सब ठाकुरों से कहा, 'तुम दाढी रखवाओ। हम फिरंग पर हमला करेंगे।' फिर अपनी पगड़ी उतार कर बादशाह ने उसके चार चार अगुल के टुकड़े किये। हिन्दुओ को एक एक पगड़ी का टुकड़ा और हथेली मे गंगाजल देते हुए कहा, 'हम जब फिरंग जाएंगे तो यह निशानी मांग लेंगे।' दलपतजी को भी एक पगड़ी का टुकड़ा मिला।

वापस जाकर बादशाह ने हुक्म दिया कि घेरे में आए हुए सभी जीवों को छोड़ दिया जाए। पांच दिन बादशाह महल मे रहे। छठे दिन बादशाह ने दाढ़ी बनवाई और बाहर निकले। तब दूसरो ने भी दाढी बनवाई, और बादशाह फतेहपुर सीकरी के लिए रवाना हुए (द० वि० पृ०...१०८)।

दलपतविलास मे वर्णित पिछले छः पैरों के ये तथ्य अकबरकालीन इतिहास के लिए पर्याप्त महत्व रखते हैं। घेरे के इस शिकार और उसी से सम्बन्ध रखने वाली घटनाओ से सम्बद्ध वर्णन मुसलमानी तवारीखो मे भी हैं। किन्तु दलपत-विलास मे कई नये तथ्य हैं। इसके व्यौरेवार वर्णन से ऐसा भी प्रतीत होता है कि ग्रंथकार स्वयं घटनास्थल पर था। बादशाह के भूत्रण, वस्त्र-'धारण सरदारों के कपड़े उतार कर कबड्डी खेलने आदि सी छोटी छोटी बातें भी इस वर्णन में न छुटी हैं।

---

१. यह हिन्दुस्तान का मुख्य सदर था।

इन घटनाओं के रहस्य को लेखकों ने अनेक रूप में प्रस्तुत किया है। अबुलफज़ल के वर्णन से कुछ ऐसी धारणा बनती है कि अकबर को इस समय अकस्मात् धर्म ज्ञान की विचित्र उद्‌भूति हुई थी। अकबर के आस पास के लोगों को भी इस ज्ञान का कुछ अंश मिला। कुछ समय इसी स्थिति में मस्त रहने के बाद अकबर ने फिर दुनयावी मामलों की देखरेख शुरू की (३, ३४५-३५४)। बदायूनी ने लिखा है कि जब घेरा प्रायः पूरा हो चुका था बादशाह की एक अवर्णनीय एवं उन्मत्त दशा हो गई। इसका रहस्य भगवान् ही जानते हैं। बादशाह ने अपने बाल काट डाले और अधिकांश दरबारियों ने भी यही किया। जब इस घटना की खबर भारत के पूर्वी भागों में पहुँची तो रैयतों ने कई जगह विद्रोह किया, किन्तु ये विद्रोह दबा दिये गए (२, २६१)। तबकाते अकबरी में लिखा है कि अकबर को यह दिव्य ज्ञान एक वृक्ष के नीचे हुआ। उसने वहां एक इमारत और बाग बनवाए।

दलपतविलास से यह निश्चित है कि घेरे के शिकार के समय अकबर की दशा कुछ विचित्र थी, प्रायः उन्मत्त की सी थी। वास्तविक स्थिति चाहे कुछ ही रही हो, जन साधारण के लिए उसे समझना कठिन था। लोगों को तो उसके उद्‌गारों में पागलपन ही दिखाई पड़ा होगा। हिंदुओं को गाय खाने के लिए मुसलमानों को सूअर और दोनों को गाय सूअर का मांस खाने के लिए कहना शायद उसकी मुस्लिम हिन्दू धर्म के ऐक्य की भावना का द्योतक हो। किन्तु धर्मप्राण जनता के लिये ये उद्‌गार उतने ही उत्तेजक हो सकते थे जितने कि सन् १८५७ के चर्बी मिले कारतूस। इसलिये बदायूनी के इस कथन में आश्चर्य ही क्या है कि बादशाह के विषय में अनेक तरह की अफवाहें फैली और जनता ने कई जगह विद्रोह किया। बादशाह की यह विक्षिप्तावस्था पांच दिन तक रही। हिन्दू सरदारों को गङ्गाजल और पगड़ी के टुकड़े देने का उल्लेख केवल दलपतविलास में है। किन्तु इस कथन की सत्यता संशयास्पद प्रतीत नहीं होती। सब बातों को ध्यान में रखते हुए हम कह सकते हैं कि दलपतविलास का साक्ष्य १५७८ की रहस्यमयी घटनाओं पर कुछ नवीन एवं अभिनव प्रकाश डालता है।

दलपतविलास के उपलब्ध भाग के अन्त में एक और घटना का वर्णन है। जब बादशाह ने चहनाल पार की तो राजा भगवानदास उनसे आकर मिला।

वादशाह मानसिंह और भगवानदास पर क्रुद्ध हुए। उनसे पूछा कि वे कुंभलमेर को क्यो छोड़ आए थे। कुंभलमेर में उनकी हालत खराव हुई थी। वहा धर्मद्वार माग कर ये निकले थे।

अकवरनामे मे इस घटना के वारे मे लिखा है कि वादशाह ने राजा भगवानदास, कंवर मानसिंह आदि को मीर वख्शी शाहवाजखा की अध्यक्षता मे राणा से लड़ने के लिए भेजा किन्तु इस विचार से कि ये राणा से वदला लेने मे सुस्ती करेंगे शाहवाजखा ने भगवानदास और कवर मानसिंह को वापस भेज दिया। सामान्य लोगो ने शायद कुछ और ही अर्थ लगाया। दलपतविलास के रचयिता का कथन सम्भवत: शिविर मे उड़ती हुई अफवाहे रही हों।

दलपतविलास की अंतिम पक्तियों में एक मद्योन्मत्त राजपूत द्वारा मानसिंह को मारने के विफल प्रयत्न का वर्णन है। किन्तु अपने त्रुटित रूप मे भी यह ग्रन्थ इतिहास का अच्छा साधन है। अकवर के वहुविध चरित पर इससे प्रकाश पडता है। मुगलों से राजपूतो के सम्बन्ध पर हमे इससे अच्छी सामग्री मिली है। कुछ राजपूतो ने मुगल वादशाहो को अपनी पुत्रिया दी; उनके चरण भी छुए, उनके हाथ से चावुक भी खाए। इतने पर भी उन्हे आत्मघात की ही सूझी, लड़ने की नहीं। किन्तु साथ ही ऐसे राजपूत भी उस समय विद्यमान थे जो अपनी स्वतन्त्रत के लिये लड़ने के लिए और प्राण न्योछावर करने के लिए सदा उद्यत थे; और कुछ राजपूत ऐसे भी थे जो वादशाही सामान को निस्सङ्कोच लूट कर आनन्द मनाते। सामन्तशाही राजपूतों में घर कर चुकी थी। ऐक्य की भावना कम थी, वैमनस्य की वहुत। वैर का वदला मिलना चाहिए, चाहे उसके लिये स्वतन्त्रता ही क्यों न खोनी पड़े। रामसिंहजी जैसे वीर और प्रिथीराज जैसे कवि भी इस युग मे उत्पन्न हुए; किन्तु समष्टि रूप से स्थिति का विचार करने पर हमें राजपूत जाति मे वह प्रगति नही मिलती जो उन्हे उच्च से उच्च स्तर पर पहुँचाती हुई भारत को अभ्युन्नत करती।

'नवीन वसन्त'
कृष्ण नगर, दिल्ली–३१,
मार्गशीर्ष पूर्णिमा, वि० सं० २०१७

दशरथ शर्मा



दळपतसिंह

दळपतविलास

प्रथम जळजळाकार हुतो। तिहा निरजन निराकार वडपात माहि पौढिया हुता। तदा मन माहि इच्छा ऊपनी जु सृस्टि उपार्जिमु। तदा मनसा देवी माया तै ऊपनी। माया थकी थोक दुइ ऊपना। आत्मा एक। द्वितीयो परमात्मा। ताहरा माया सेती जु मिल्यो ते जीवात्मा [अर] माया थकी जु भिन रह्यो ते परमात्मा। जाहरा परमात्मा माया दिसि देख्या तिया थी महतत्व नीपना। महतत्व थकी अहकार नीपनो। अहकार त्रिहु प्रकारे कहियै। एक सात्विक। बीजो राजस। तीजो तामस। सात्विक अहकार थी मनु अरु देवता इद्रिया

पहले सर्वत्र जल ही जल था। उसमें निरजन निराकार वट पत्र में सोये हुए थे। तब मन मे इच्छा हुई कि सृष्टि उत्पन्न करू। तब माया से मनसा देवी उत्पन्न हुई। माया से दो थोक पदार्थ उत्पन्न हुए। एक आत्मा। दूसरा परमात्मा। तब माया से जो मिल गया वह जीवात्मा और जो माया से भिन्न रहा वह परमात्मा। जब परमात्मा ने माया की ओर देखा तो उनसे महत् तत्व उत्पन्न हुए। महत् तत्व से अहकार उत्पन्न हुआ। अहकार तीन प्रकार का कहा जाता है। एक सात्विक, दूसरा राजस, तीसरा तामस। सात्विक अहंकार से मन और इन्द्रियों के अधिष्ठाना देवता उत्पन्न हुए। राजस अहंकार से दस इन्द्रिया उत्पन्न

का अधिष्टाता नीपना । राजस अहंकार तैं दस इंद्री नीपनी । पांच ज्ञानेंद्री । पांच कर्मेंद्री । एवं दस । तामस अहंकार तैं पांच महाभूत पांच सूक्ष्म भूत नीपना । एवं चौवीस तत्व भेळा हुया । ताहरां ब्रह्मांड नीपनो । तदा नाभिकमळ थैं ब्रह्मा नीपनो । ब्रह्मा रो अत्रि । अत्रि रो कास्यप । कास्यप रो सूर्य । तिण वंस उत्पन्न राजा सिंघसेन । तस्य सिंघसेन रै उत्पन्न पुत्र तीन, तस्य नामानि :— एक पुत्र राजा आस्थान, बीजो पुत्र सोनिग, तीजो पुत्र अज । आस्थान रो पुत्र कान्हराय । कान्हराय रो पुत्र राय जाल्हण । जाल्हण रो पुत्र राय धूहड़ियो । धूहड़ रो पुत्र राय रायपाल । रायपाल पुत्र राय तीडो । तीडा पुत्र राय छाडो । छाडा पुत्र राय सलखो । राय सलखा पुत्र राय वीरम । वीरम पुत्र राय चुंडा । चुंडा पुत्र राव

हुईं । पाँच ज्ञानेन्द्रिय, पाँच कर्मेन्द्रिय—इस प्रकार दस । तामस अहंकार से पाँच महाभूत और पाँच सूक्ष्मभूत उत्पन्न हुए । इस प्रकार चौवीस तत्व इकट्ठे हुए । तब ब्रह्माण्ड उत्पन्न हुआ । तब नाभिकमल से ब्रह्मा उत्पन्न हुए । ब्रह्मा का अत्रि, अत्रि का काश्यप, काश्यप का सूर्य । उस वंश में राजा सिंहसेन उत्पन्न हुआ । उस सिंहसेन के तीन पुत्र उत्पन्न हुए । उनके नाम—एक पुत्र राजा आस्थान, दूसरा पुत्र सोनिग, तीसरा पुत्र अज । आस्थान का पुत्र कान्हराय । कान्हराय का पुत्र राय जाल्हण । जाल्हण का पुत्र राय धूहड़ । धूहड़ का पुत्र राय रायपाल । रायपाल पुत्र राय तीडा । तीडा-पुत्र राय छाडा । छाडा पुत्र राय सलखा । राय सलखा पुत्र राय वीरम । वीरम पुत्र राय चूंडा ।

रिणमल । राव रिणमल पुत्र राव जोधा । जोधा पुत्र राव विक्रमादित्य । राव विक्रमादित्य पुत्र राव लूणकर्ण। लूणकर्ण पुत्र राव जैतसिंघ । राव जैतसिंघ पुत्र राव कल्याणमल । कल्याणमल पुत्र महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंघजी विद्यमान, तत्पट्टाभिषेक महाराजकुमार चिरजीवी कुवर श्री दळपतजी विजयराज्ये, तस्यात्मज सभा-श्रृंगारहार कुवर श्री उदयसिंघ, कुवर श्री सवळसिंघ, कुवर तुळसीदास सहित सर्वे चिरजीयात् । अत उपराति वात विस्तार लिखियै छै ।

अत्र प्रस्तावि महाराजाधिराज महाराजा श्री कल्याणमल विक्रमनगरि राज करै छै । तिण समय दिली पातिसाह श्री सेरसाह राज करै छै । तिण रै पुत्र सलेमसाह

चूडा पुत्र राव रिणमल । राव रिणमल पुत्र राव जोधा । जोधा पुत्र राव विक्रमादित्य । राव विक्रमादित्य पुत्र राव लूणकर्ण । लूणकर्ण पुत्र राव जैतसिंह । राव जैतसिंह पुत्र राव कल्याणमल । कल्याणमल पुत्र महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी विद्यमान, उनके पट्टाभिषेक महाराजकुमार चिरजीवी कुवर श्री दलपतजी के विजय-राज्य में, उनके पुत्र सभा-श्रृंगार हार कुवर श्री उदयसिंह, कुवर श्री सबलसिंह, कुवर श्री तुलसीदास सहित सब चिरजीवी हों । इसके उपरात बात का विस्तार लिखा जाता है ।

इस प्रस्ताव में महाराजाधिराज महाराजा श्री कल्याणमल विक्रमनगर में राज कर रहे हैं । उसी समय दिल्ली में बादशाह श्री

साहिजादो वडो अदली हुयो । तिण समैं जोधपुर राव मालदे राज करै छै । विस्तार आगैं लिखीजसी । पिण संखेप थोड़ो सो लिखियैं छै । इण प्रस्तावि राव मालदे कटक करि वीकानेर आयो । राव जैतसिंघ युद्ध करि वैकुंठ सिधायो । राव कल्याणमलजी नूं ठकुरीयासर ग्राम टीको हुयो परं विखो हुयो । राव कल्याणमल आप दिली पातिसाह श्री सेरसाह कन्है सिधाया । पातिसाह मूं मिलिया । आप कटक करि गुढो साथि ले अर सरसैं सिधाया, गुढो सरसैं कियो । तियैं प्रस्तावि पातिसाह कन्है परधान मेल्हिया हुता सु आया । तिवारैं पातिसाहजी सरसो पाटण वास गांव दियो । वयांणो, हैंसार, मेवात, रैवाड़ी समेत पड़गना मूं किया । वहुत दिलासा मूंकी । एकरिण प्रस्ताव पातिसाह श्री सेरसाह सलेमसाह

शेरशाह राज्य कर रहे हैं। उनका पुत्र शाहजादा सलेमशाह बड़ा अदली हुआ। उसी समय जोधपुर में राव मालदे राज्य कर रहा है। विस्तार आगे लिखा जायगा परन्तु संक्षेप में थोड़ा सा लिखा जाता है। इस प्रस्ताव में राव मालदे कटक लेकर वीकानेर आया। राव जैतसिंह युद्ध कर वैकुंठ सिधाये। राव कल्याणमलजी को ठकुरीयासर ग्राम में टीका हुआ किन्तु आपदग्रस्त हुए। राव कल्याणमल स्वयं दिल्ली में बादशाह श्री शेरशाह के पास गए। बादशाह से मिले। आप सेना लेकर, गुढा साथ लेकर सरसे आए तथा गुढा सरसे में किया। उस प्रस्ताव में बादशाह के पास जो प्रधान भेजे हुए थे वे आए। उस समय बादशाहजी ने सरसापाटण वास गाँव दिया। वयाना, हिसार, मेवात, रेवाड़ी

बाप बेटो दोन्नू विखै पडियै राव लूणकर्ण कन्है चाकरी बीकानेर आय रहिया हुता । तिण वात रो विस्तार आगै लिखीजसी । तिणि उपगार कियै राय श्री कल्याणमलजी रो उपगार करि नै श्री सेरसाह राव श्री जैतसिंघजी रै वैर वाळण रै कियै राव मालदे ऊपरि आप पधारि अर राव मालदे रा रजपूत अुमराव घणा मारिया । अर राव मालदे भागो । भाज करि पीपळोद रै पाहडे पैठो । बीकानेर वळे राव कल्याणमल आइ राज विराजण लागो । इण समइयै पातिसाह सेरसाह वरस आठ दिली राज करि अर काळिंजर गयो हुतो । तठै नाळि गोळा चलावता एक नाळि फाटि पाछी पडी । तिवारै पाति-

---

सहित परगने दिए, बहुत दिलासा दी। एक समय बादशाह श्री शेरशाह, सलेमशाह बाप बेटे दोनों आपदग्रस्त होकर राव लूणकर्ण के पास नौकरी के लिए बीकानेर आकर रहे थे। उस बात का विस्तार आगे लिखा जायगा। उस उपकार के बदले में राय श्री कल्याणमलजी का उपकार करने के निमित्त बादशाह श्री शेरशाह ने राव श्री जैतसिंहजी का वैर लौटा लेने के लिए राव मालदे पर स्वयं चढाई कर उसके बहुत से राजपूत तथा उमराव मारे। राव मालदे भाग कर पीपलोद के पहाड़ों में चला गया। बीकानेर में फिर राव कल्याणमल राज करने लगे। इस समय बादशाह शेरशाह आठ वर्ष दिल्ली में राज कर कालिंजर गये थे, वहा तोप से गोले चलाते समय एक तोप फटकर पीछे पड़ी। उस समय बादशाह तोप के समीप

साह नाळि हुंता निजीक हुंता। तिणि दारू पातिसाह बाळि मारियो। ताहरां दिली टीकै सलेमसाह पातिसाह बैठो। बरस सात पातिसाही करि अर मौचि मूंयो। तिण रै पाट एदल दीकरो बैठो। पातिसाह दिली मांहे हुयो दिन अढाई। तिण पातिसाह रो मामो ममरेजखान तिणि एदल नूं मारि अर टीको लियो दिली रो। बरस एक राज कियो। पातिसाह सेती लूण हराम कियो। तिणि विसेखि ममरेजखान आप गहिलो हुयो। ताहरां तिण रै वकीलि काळिंजर मांहे राखि नै ममरेज नूं आप हेमू पातिसाही राखि ली। इयै समइयै हमाऊं पातिसाह काबिल हुंता आयो। आपस मैं ममरेजसाह री फोज हुंता वेढि हुई। फोज भागो। पठाण विचळिया। पंजाब ली। हमाऊं

थे। उस बारूद ने बादशाह को जला कर मारा डाला। तब बादशाह सलेमशाह दिल्ली में सिंहासन पर बैठा। वह सात वर्ष तक बादशाही कर स्वाभाविक मृत्यु से मर गया। उसके बाद उसका लड़का एदल सिंहासन पर बैठा। वह अढाई दिन तक दिल्ली में बादशाह रहा। उस बादशाह के मामा ममरेजखान ने एदल को मार कर दिल्ली का सिंहासन ले लिया और एक वर्ष तक राज किया। बादशाह से नमकहरामी करने के कारण ममरेजखान पागल हो गया। तब उसके वकील हेमू ने उसे कालिंजर में कैद कर बादशाही छीन ली। इसी समय बादशाह हुमायूं काबुल से आये। ममरेजखान की सेना से आपस में युद्ध हुआ। सेना भागी, पठान विचलित हुए, पंजाब लिया। बादशाह

पातिसाह सीहनद आयो । पातिसाह हमाऊ रै साथि अकबर वरस तेरह मास छह रो हुतो। अकबर रै साथि फोज दे अर कलानौर नू मेल्हि अर पातिसाह हमाऊ दिली आयो। पातिसाही करता थका एक दिन मुणारै पातिसाह हमाऊ चढिया हुता तिहा थी पडिया अर हक हुया । पातिसाह अकबर कलानूर माहे राज बैठो । उठा हुती दिली नू हालिया । ताहरा हेमू पूरब कळिजरै हुता दिली आयो । आय नै दिली ली । तठै दिली माहे पातिसाह अकबर रो उमराव तुरतीवेग हुतो सु नासि अर अकबर पातिसाह पासि गयो । ताहरा अमराव भैरववेग अनै वळीवेग इया बुलाइ तुरतीवेग नू कहियो रै तुरतीवेग थारै माथै अकबर पातिसाह सलामत हुतो अर तू वाणियै आगै भाजि अर आयो सु क्यू ।

हुमायू सिंहनद आए। बादशाह के साथ अकबर तेरह वर्ष और छ महीने का था। अकबर के साथ सेना दे उसे कलानौर भेज कर बादशाह दिल्ली आए। बादशाही करते हुए एक दिन बादशाह हुमायू मीनार (?) पर चढे हुए थे जहा से पड कर मर गए। बादशाह अकबर कलानौर मे सिंहासन पर बैठे। वहाँ से दिल्ली की ओर चले। तब हेमू ने पूर्व में कालिंजर से आकर दिल्ली ली। वहा बादशाह अकबर का उमराव तुरतीवेग था। वह भागकर अकबर के पास गया। तब उमराव भैरववेग और वलीवेग ने तुरतीवेग को बुलाकर कहा कि तुरतीवेग, तुम पर बादशाह अकबर की छत्रछाया थी और तुम बनिये के सामने से भाग कर चले आये सो क्यों ? यह सुन कर तुरतीवेग अपना

वळीवेग आपड़ियो। ताहरां पूछियो पीलवान नूं कुण छै रे। कुण है रे यहु । ताहरां पहिली तो नटि गयो पछै कहियो जी वसंतराय ओ ही ज छै। ताहरां गरहियो । गरहि अर पातिसाहजी हजूर आणियो। खानखाना पातिसाहजी नूं कहियो—पातिसाहजी आप सेहथि मारो तो गाजी हुवो । ताहरां पातिसाहजी कहियो जु म्हारै कियै तो मार्‍यो न जाइ। ताहरां वार २–४ उमरावे कहियो पिण पातिसाहजी कहै हूं न मारूं मिहरवाणो आवै । तिसै एकै पासै वैरमखान अर वोजै पासै वळीवेग घांटि करि मारियो छै । ता पछै पातिसाहजी दिली नूं खड़िया छै।

आगै चीत्रोड़ि राणो उदयसिंघ राज करै छै। तिण रो विस्तार आगै कहोजिसी। राव मालदे जोधपुर राज करै छै।

हुऐ ही बीच में हेमू भागा जा रहा था, ऐसे समय में साह कुलीखान वलीवेग ने पकड़ लिया। तब पीलवान से पूछा, कौन है रे? कौन है रे यह? तब पहिले तो नट गया, फिर कहा जी वसंतराय यह ही है। तब पकड़ लिया। पकड़ कर बादशाह के सामने ले आये। खानखाना ने बादशाह से कहा, आप अपने हाथ से मारो तो गाजी हो जाओ। तब बादशाह ने कहा कि मुझसे तो नहीं मारा जाता। तब दो चार वार उमरावों ने कहा लेकिन बादशाह ने कहा–मैं नहीं मारूंगा, दया आती है। तब एक तरफ से वैरमखान और दूसरी तरफ से वलीवेग ने घोट कर मार डाला। उसके बाद बादशाह दिल्ली की तरफ रवाना हुए।

आगे चित्तौड़ में राणा उदयसिंह राज कर रहे थे। उसका

पातिसाहजी रो अमराव खानखानो तियै कहाडियो राणा उदयसिंघ नै राव मालदे नू मोटा राजा जाणि करि, आप रा परधाना मेरिह नै कहाडियो जु मोनै मरणै राखो तो था कन्है आग्रू । ताहरा इया विहू राजविया खान खानखाना रा परधाना साथे कहाडियो जु तू पातिसाह रो वडो अमराव म्हाहरै कियै मरणै राखियो न जाइ । ताहरा सइयद महमद वारहै रो वडो उमराव तियै कहियो तोनै जे सरणै राखै तो बीकानेर रो धणी राव कल्याणमल राखै । ओ पणि वडो उमराव छै । बीजो तोनै समर्थ को नही छै । ताहरा तिण ही ज वारहै रै उमराव खानखाना नू कहियो । मैं राव कल्याणमल सू सतोस छै सु हू राव कल्याणमल नू थाहरो अरदास करि आग्रू छू । जे रावजी थानै सरणै

विस्तार किर कहा जायेगा। राव मालदे जोधपुर में राज कर रहे थे। बादशाह के उमराव खानखाना ने राणा उदयसिंह और राव मालदे को बड़े राजा जानकर कहलाया कि मुझे शरण दो तो तुम्हारे पास आऊं। तब इन दोनों राजाओं ने खानखाना के प्रधानों के साथ कहलाया कि तुम बादशाह के बड़े उमराव हो, हमसे शरण में नहीं रखे जा सकते। तब बारहै (?) के बड़े उमराव सैयद महमूद ने कहा कि तुम्हें यदि शरण में रखे तो बीकानेर का स्वामी राव कल्याणमल भले ही रखे। यह भी बड़ा उमराव है। दूसरा कोई तुम्हें रखने में समर्थ नहीं है। तब उसी बारहै के उमराव ने खानखाना से कहा कि मुझ पर राव कल्याणमल का भरोसा है सो मैं राव कल्याणमल से तुम्हारी

राखै छै तो हूं थांनूं तेड़ावूं छूं । इयै प्रस्तावि राव कल्याणमल आगैं सइयद महमूद आइ अर खानखाना सरणैं राखण री अरदास की । ताहरां राव कल्याणमल कहियो आवो । खानखाना कूं सरणैं राखीस । ताहरां खानखाना वीकानेर राव कल्याणमल रै पाए आयो ।

तियै प्रस्तावि राव कल्याणमल रो पुत्र पाटरख्यक महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंघ चीत्रोड़ि परणीजण पधारिया हुता। राणे उदयसिंघ री पुत्री परणि, घणो उच्छव करि, मंगित जणां री घणी आसीस ले करि, करह, कैकाण, सोना, सावटू, रुपइया, महुरां घणी दे, चीत्रोड़ि रो मेघ कहाइ अर घणा महोच्छव सेती गीत, वादित्र, नाटिक, मंगळाचार

विनती कर आता हूँ। यदि रावजी तुम्हें शरण में रखते हैं तो मैं तुम्हें बुलवाता हूँ । इस प्रस्ताव में सैयद महमूद ने आकर खानखाना को शरण में रखने की प्रार्थना राव कल्याणमल से की। तब राव कल्याणमल ने कहा—आओ। मैं खानखाना को शरण में रखूंगा। तब खानखाना राव कल्याणमल के पास वीकानेर आया।

उस प्रस्ताव में राव कल्याणमल के पुत्र पाटरक्षक महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंह चित्तौड़ में विवाह करने के लिए गये हुए थे । उदयसिंह की पुत्री से विवाह कर, वहुत उत्सव कर, याचकों की वहुत आशीष लेकर, ऊँट, घोड़े, सोना, सावटू (?), रुपये मोहर वहुत देकर, 'चित्तौड़ का मेघ' कहला कर, और अति महोत्सव के साथ गीत, वाद्य नाटक, मंगलाचार करके, दूलह-दुलहिन के सोहले

करि दूलह-दुलहणि रा सोहला गाईजता वीकानेर पधारिया छै। महामहोच्छव करि नें पैसारो कियो छै। राव कल्याण-मल अर सरव राजलोक दूलह-दुलहणि देखि दूणा रळियाइत हुआ। तळिया तोरण वाधा, हाट सिंगारी, पौळि सिंगारी, घरि घरि गूडी अूछळी। थानकि थानकि गीत, नाद, नाटक नगरि वधाई वाजी। लोक सर्व आणदित हुआ।

इयें प्रस्तावि राव कल्याणमल वीकानेरि राज करें छै। महाराजा श्री रायसिंघजी राणी श्री जसवतदेजी कुंवर पदवी पाळता सुख राज भार निरवाहता राणी श्री जसवत-देजी रें पुत्र रत्न अूपना। प्रथम पुत्र नाम कुंवर श्री भोपति। द्वितीय पुत्र महाराजकुंवार श्री चिरजीवी ध्रू आयुर्वळ अरि-मूळ उपाडण गरीवनिवाज प्रतापीक श्री सूर्य समान कुंवर

गवाते हुए वीकानेर पधारे हैं। राव कल्याणमल और सर्व राजलोक दूलह-दुलहिन को देख कर दुगुने प्रसन्न हुए। तलिया-तोरण (?) बांधे गए, दूकानें सजाई गईं, द्वार सजाये गये, घर-घर में गुड़िया उछलीं। स्थान स्थान पर गीत, नाद, नाटकों द्वारा नगर में वधाई हुई। लोग सब आनंदित हुए।

इस प्रस्ताव में राव कल्याणमल वीकानेर में राज कर रहे थे। महाराजा श्री रायसिंहजी, रानी श्री जसवंतदेजी कुमार पद धारण करते हुए, सुख पूर्वक राज्य का भार उठाते समय, रानी श्री जसवंतदेजी के पुत्र रत्न उत्पन्न हुये। पहले पुत्र का नाम कुंवर श्री भोपति। दूसरे पुत्र महाराजकुमार श्री चिरजीवी ध्रुव के समान आयु और बल

श्री दळपतजी रो जन्म हुयो । महाराय श्री कल्याणमलजी जन्म महोच्छव मांगळीक वधावणा कराया। महाराजकुमार श्री दळपतिजी दिन दिन स्वेत पक्ष चंद्रमा री ज्यूं परिवधवंत होता पूर्णिमा रै चन्द्रमा रो परिसकळ कळा भरित विभूपित गात्र नीपना छै।

इयै प्रस्तावि पातिसाह श्री अकवर दिली राज करतां वर्ष १६ सोळह हुआ छै। भूमिया सकळ दस दिसि रा आइ मिलिया छै। ताहरां राव कल्याणमल परिण पातिसाह अकवर नूं बाई परणाई। एक बाई श्री भाणमती श्री भीमराज री दीकरी। बीजी बाई राजकुंवारि राज श्री कान्हजी री दीकरी। ए वेऊं बाई पातिसाह अकवर नूं

वाले, शत्रुओं की जड़ उखाड़ने वाले, गरीबों का पालन करने वाले, सूर्य के समान प्रतापी कुंवर श्री दलपतजी का जन्म हुआ। महाराय श्री कल्याणमलजी ने जन्म महोत्सव के मांगलिक आचार करवाये। महाराजकुमार श्री दलपतजी दिनदिन श्वेतपक्ष के चन्द्रमा की तरह बढते हुए पूर्णिमा के चन्द्रमा की तरह सकल कलाओं से पूर्ण सुन्दर शरीर वाले बन गए।

इस प्रस्ताव में बादशाह श्री अकबर को राज्य करते हुए सोलह वर्ष हो गए। दसों दिशाओं के सभी भोमिए आकर उनसे मिल गए। तब राव कल्याणमल ने भी बादशाह अकबर से लड़की का विवाह किया। एक श्री भीमराज की लड़की भाणमती और दूसरी श्री कान्हजी की लड़की राजकुंवरी। इन दोनों लड़कियों की बादशाह अकबर से शादी

परणाई। ताहरां पातिसाह अकबर मुहूत दियण नू नागोर पधारिया। तेथि बाया परणाया। पातिसाह नू मिलिया। संवत १६२७ मगसिर सुदि ६ पातिसाहजी रो मेल्हियो घेसूखान तेडण आयो। ताहरा राव श्री कल्याणमलजी पातिसाहजी संमुखि तेडि घणी दिलासा दे नैं बीकानेर नू विदा किया। कुंवरपदवी थका महाराजा श्री रायसिंघजी साथे लिया। ता पछै पातिसाहजी राजा श्री रायसिंघजी नू आप रैं डील बराबरि करि पासैं राखिया। ता पछै बरस एक राव श्री कल्याणमलजी सीकरी फतेपुरि आइ मिलिया। ताहरा पातिसाह श्री अकबर राव श्री कल्याणमलजी नू जोधपुर दियो अर पातिसाह गुजरात सिधाया। राव श्री कल्याणमलजी नू कुंवर श्री रायसिंघजी नू जोधपुर राखि

की। तब बादशाह अकबर मुहूर्त (?) के लिए नागौर पधारे। वहीं लड़कियों की शादी की। बादशाह से मिले। संवत् १६२७ मगसिर सुदि ६ को बादशाह का भेजा हुआ घेसूखान राव कल्याणमल को बुलाने आया। बादशाह ने रावजी श्री कल्याणमलजी को अपने सम्मुख बुला कर बहुत धीरज बँधा कर बीकानेर को विदा किया। कुंवरपदवी धारण करते हुए महाराजा श्री रायसिंघजी को साथ मे लिया। उसके बाद बादशाह ने राजा श्री रायसिंहजी को अपने अंग के बराबर कर समीप रखा। उसके एक वर्ष बाद राव श्री कल्याणमलजी फतेहपुर सीकरी आकर मिले। तब बादशाह श्री अकबर ने राव श्री कल्याणमलजी को जोधपुर दिया और बादशाह गुजरात चले गये। राव श्री कल्याणमलजी व कुंवर श्री

पधारिया । सीरोही मांहे राव मानो हुतो [तठै] राव कल्याणमल री दीकरी बाई पुहपावती परणाई हुती राव उदयसिह नै । सु राव उदयसिघ मुंआ पछै बाई रै आधान हुतो । सु बाई राव मानै मारी हुती । सु तिण वैरि राव श्री कल्याणमलजी कुंवर श्री रायसिघजी पातिसाह श्री अकबर कन्हा सीरोही मराड़ि खोसाड़ी । राव मानो नासि गयो । बाई रो वैर वाळियो । उठा सीरोही हुंती राव श्री कल्याणमल जो नूं कुंवर श्री रायसिघजी नूं पाछी सीख दीन्हो । पातिसाहजी आघा गुजरात नूं पधारिया । ताहरां आगा सांमु होय तमतखान आयो । गुजरात पातिसाह श्री अकबर नूं पेसि की । गुजरात मांहे मिरजै उलक रा दीकरा हुता सु नासि अर समुद्र रै कांठै नूं गया । ताहरां पातिसाहजी उवां

रायसिंहजी को जोधपुर रख कर पधार गये । सिरोही में राव माना था जहां राव कल्याणमल की लड़की बाई पुहपावती ब्याही थी राव उदयसिंह को । राव उदयसिंह के मरने के बाद बाई के गर्भ था सो राव माना ने बाई को मार डाला था, सो उस वैर में राव श्री कल्याणमलजी व कुंवर श्री रायसिंहजी ने बादशाह श्री अकबर से मरवा कर सिरोही छिनवाली । राव माना भाग गया । बाई का वैर लौटा लिया । वहां सिरोही से राव श्री कल्याणमलजी और कुंवर श्री रायसिंहजी को वापिस लौटाया । बादशाह आगे गुजरात को पधारे । तब आगे सामने होकर तमतखान आया । बादशाह श्री अकबर को गुजरात पेश की । गुजरात में मिरजा उलक के लड़के थे सो भाग कर समुद्र के

रो वासो करता सूरति पधारिया । सूरति माहे भूभारखान उलूखान वि भाई । तिया माहा एक सूरति माहे हुतो सु हाथि श्रायो । सूरति पातिसाह श्री अकवर ली । बीजा लोक सहि आइ मिलिया । महमूद पातिसाह मुआ पछै चगसखान रा चाकर हुता उलूखान भूभारखान, सु इया चगसखान माग्यो हुतो, सु चगसखान री वायरि पातिसाह श्री अकबर कन्है पुकारी । सु पातिसाह इया नू सजा दीन्ही । हाथी ग पग सू बधाइ मारिया । चगसखान री वायरि महला माहे राखी । पातिसाह तपावस कियो ।

मिरजो इब्राहमसेन बीजा भाइया हुता टळि न हिंदुसथान नू नीसरियो हुतो । तैं ऊपरि पातिसाह अकवर वासो

किनारे चले गए । तब बादशाह उनका पीछा करते हुए सूरत पधारे । सूरत में भूभारखान उलूखान दो भाई थे । उनमें से एक सूरत में था सो हाथ आया । बादशाह श्री अकबर ने सूरत ली । दूसरे लोग सभी आकर मिले । बादशाह महमूद के मरने के बाद चगसखान के नौकर उलूखान और भूभारखान थे सो इन्होंने चगसखान को मार डाला था सो चगसखान की स्त्री ने बादशाह श्री अकबर के पास आकर पुकार की । सो बादशाह ने इनको सजा दी । हाथी के पैरों से बँधवा कर मरवा दिया । चगसखान की स्त्री को महलों में रखा । बादशाह ने कृपा की ।

मिरजा इब्राहिमसेन दूसरे भाइयों से टल कर हिन्दुस्थान के लिए निकला हुआ था । बादशाह अकबर ने उसका पीछा किया ।

कियो। वि फोजां कियां। मिरजै रै वासै आप पातिसाह पधारिया। मिरजो बिहूं फोजां विचाळा अर पातिसाह रा गोडां होइ नीसरियो। पातिसाह रै उड़दू वाजार मांहां मिरजै रै लसकर सीधो लियो। ताहरां पातिसाह अकवर नूं खबरि हुई। पातिसाह वांसो कियो। पातिसाहजी कन्है असवार पनरह हुता। मिरजै कन्है असवार हजार दोढ हुता पणि अवलि चुणिदा। एक पातिसाह री बीजी फोज जका हुती तिण नूं खबरि हुई। ताहरां तिणि फौज पणि दौड़ की। हिंदू उमराव जके हुता तियां बि वि घोड़ा कोतल ले अर इयां ठाकुरे राजा भगवंतदास, राजा गोपाळदास, राव भोज कुंवरपदै थको, राज श्री खिंगार कुंवरपदै थको, राव जगमाल पंवार, वीजा ही असवार पनरह भला भला वांसै

दो फौजें बनाईं। मिरजा के पीछे बादशाह स्वयं पधारे। मिरजा दोनों फोजों के बीच से और बादशाह के समीप होकर निकला। मिरजा की सेना ने बादशाह के उड़दू बाजार में रसोई का सामान लिया। तब बादशाह अकबर को खबर हुई। बादशाह ने पीछा किया। बादशाह के पास पंद्रह सवार थे। मिरजा के पास डेढ़ हजार सवार थे और वे भी श्रेष्ठ चुने हुए। बादशाह की एक दूसरी फौज थी उसको खबर हुई। तब उस फौज ने भी चढाई की। हिंदू उमराव जो थे उन्होंने दो दो कोतल घोड़े लिए और ये ठाकुर राजा भगवंतदास, राजा गोपालदास, राव भोज कुंवरपदवी धारण करते हुए, राज श्री खेंगार कुंवरपदवी धारण करते हुए, राव जगमाल पंवार और दूसरे ही अच्छे अच्छे पंद्रह सवार पीछे हुए। यहां

हुया । इहा महाराव भोज पातिसाह सेती आइ फोज माहे मिलियो छै । बीजे ठाकुरे वात विचारि अर राव भोज मेलियो । कहाडियो जु राजि पातिसाहजी सलामति रावळो साथ आइ आपडियो छै । पर पहुचरण दीजै । पातिसाहजी तितरै तहमल कीजे । जितरै साथ आइ भेळो हुवै । तितरै ए ठाकुर असवार पनरह आइ भेळा हुआ । राजा भगवंतदास पातिसाहजी सेती अरज की जु पातिसाहजी ओछै साथ साथि दौड की छै सु किसै कारणि । घणै रा धणी घणो साथ भेळो हुवण दियो हुवत भलो । एकला दौडता ए सिपाई मरिसै । परिण साथ भेळो हुवण दीजै । पातिसाहजी आघा खडिया । मिरजै रै वासे । तिसडै वाहळो एक आडो आयो । तिरिण साथ वळे दुहु जाइ गहे हुओ । आधो एक

महाराव भोज बादशाह के साथ फौज में मिल गया। दूसरे ठाकुरों ने विचार कर राव भोज को भेजा और कहलाया कि बादशाह सलामत आपका साथ आ गया है पर उसे पहुँचने दीजिये। बादशाह जितने धैर्य रखें उतने में साथ आ पहुँचेगा। इतने में ये पन्द्रह सवार ठाकुर आ पहुँचे। राजा भगवतदास ने बादशाह से अर्ज की कि आपने जो थोडे साथ से चढाई की है सो किस कारण? आप घने साथ के स्वामी हैं सो घने साथ को पहुँचने दिया होता तो अच्छा होता। अकेले दौडते हुए ये सिपाही मर जायेंगे। साथ इकट्ठा होने दीजिए। बादशाह मिरजा के पीछे आगे चल दिये। तभी एक नाला मार्ग में आया। उस जगह फिर दोनों साथ एकत्रित हुए। आधा एक दिशा में गया और आधा बादशाह

दिसि साथ हुओ । आधो पातिसाह साथे साथ हुओ । आगै मिरजै रा असवार सजोसणिया होइ अर ऊभा रहिया छै । लड़ाई हुई । तेथि कछवाहो भोपत राजा भारमल रो दीकरो काम आयो । मिरजै इब्राहम रा फोज विचळी । पणि मिरजै रै तरगसवधे कहियो पातिसाह थोड़ै साथ सेती छै । आओ जिम मारिल्यां । मिरजै इब्राहम इम कहियो जु न करै खुदाय जु घर की पातिसाही खोवूं । पातिसाह गुजराति ल्यो । हूं हिंदुग देस जाइ करि लेइसि । उठा हुंती मिरजो सोझति सिरियारि मांहे होइ नै नागोर आइ वीटियो । नागोर मांहे कलाखान रो दीकरो फरहखान हुतो । उठा जोधपुर हुंता राव कल्याणमलजी कन्हा विदा करि नै कुंवरपदवी थका महाराजाधिराज महाराजा

के साथ । आगे मिरजा के सवार शास्त्रास्त्र से सज्जित हो, खड़े होगए । लड़ाई हुई । वहां राजा भारमल का पुत्र कछवाहा भोपत काम आया । मिरजा इब्राहिम की फौज विचलित हुई । लेकिन मिरजा के तरकसवंधों ने कहा कि बादशाह थोड़े साथ सहित है सो आओ मार ले । मिरजा इब्राहिम ने यों कहा कि खुदा न करे मैं घर की बादशाही खो दूं । बादशाह गुजरात ले । मैं जाकर हिंदुग (हिंदू राजाओं द्वारा शासित प्रदेश – राजस्थान) देश लूंगा । वहां से मिरजा ने सोझत–सिरियारी में से होते हुए नागौर आ घेरा । नागौर में कलाखान का लड़का फरहखान था । उधर जोधपुर से राव कल्याणमलजी से विदा लेकर कुंवरपदवी धारण करते हुए महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी ने

श्री रायसिंघजी मिरजै इब्राहम रो वासो कियो । राजाजी पधारता मिरजै साभळि नागोर सहर छोडि नै आघो ही ज नीसरियो । राजाजी नागोर पधारि खबर ले अर आघा ही ज मिरजै रौ वासो कियो । फरहखान साथि लियो । कठोती आइ मिरजै नू आपडिया । वेढि हुई । मिरजो इब्राहम भागो ।

पातिसाह पत्ते करि नै किलचखान नू सूरति सापि नै सीकरी फतेपुर नू कूच कियो । अहमदावाद माहे अजीज कोको राखि नै सीकरी नू पधारिया । राय श्री कल्याणमल नै कु वर श्री रायसिंघजी योधपुर हुता अजमेर नू पातिसाहजी कन्है जाइ मिलिया । उठै राजि श्री कल्याणमलजी नू सिरपाव देइ हाथी घोडा देइ नै बीकानेर नू विदा किया । पातिसाहजी सीकरी पधारिया । कु वरपदे थका

मिरजा इब्राहिम का पीछा किया । मिरजा राजाजी को आते हुए सुनकर नागौर शहर छोड कर आगे की ओर निकल गया । राजाजी ने नागौर आकर और खबर लेकर आगे भी मिरजा का पीछा किया । फरहखान को साथ मे लिया । कठोती आकर मिरजा को पकडा, लडाई हुई, मिरजा इब्राहिम भाग गया ।

बादशाह ने सूरत जीत कर और उसे किलचखान को सौंप कर सीकरी फतेहपुर के लिए कूच किया । अहमदाबाद मे अजीज कोका को रख कर सीकरी की ओर पधारे । राय श्री कल्याणमल और कु वर श्री रायसिंहजी जोधपुर से चलकर अजमेर मे बादशाह से आकर मिले । वहा से राजा श्री कल्याणमलजी को सिरोपाव और हाथी घोडे देकर

महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंघजी नैं साथे ले पधारिया । वरस एक हुओ, ता पछै महमदहुसेन अहमदावाद आइ घेरी । खान आजम मांहे हुतो सु जाहरां घेरियो ताहरां पातिसाह कन्है पुकारू आया खान आजम रा मेल्हिया हुता । ताहरां पातिसाह उमरावां सगळां नू विदा करण लागा सु उमराव का वीड़ो झालै नहीं । ताहरां महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंघजी वीड़ो झालियो । राजि विदा हुआ । वांसै पातिसाहजी पणि पधारिया । जालोर आइ आपड़िया । आगै जाइ गुजराति री वेढि की । वेढि जीपि अर पातिसाहजी सीकरी फतेहपुर पधारिया । इण वात रो विसतार आगै कहीजसी । एथ राजाजी नूं पातिसाहजी वळै निवाजसि

बीकानेर के लिए विदा किया। बादशाह सीकरी पधारे। कुंवरपदवी धारण करते हुए महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी को साथ में लेकर पधारे। इसके एक वर्ष बाद महमदहुसेन ने आकर अहमदाबाद को घेर लिया। खान आजम अन्दर था सो जब घेरा पड़ा तो खान आजम के भेजे हुए लोग बादशाह के पास पुकार करने आये । तब बादशाह सब उमरावों को विदा करने लगे सो किसी भी उमराव ने बीड़ा अंगीकार नहीं किया। तब महाराजाधिराज महाराजा श्री रायसिंहजी ने बीड़ा अंगीकार किया। आप विदा हुए। पीछे से बादशाह भी पधारे। जालोर में आकर पकड़ लिया। आगे जाकर गुजरात का युद्ध किया। युद्ध जीत कर बादशाह सीकरी फतेहपुर पधारे। इस बात का विस्तार

की । योधपुर आगै हुतो । नागोर, सरसो, मरोट अर बीजा ही पडगना घणा दिया । जिसडै राव श्री कल्याणमलजी नू पडगना दिया री खबरि हुई ताहरा कुवर श्री दळपतजी नू सरसै नू विदा किया । कुवर श्री दळपतजी सरसै सिधाया । तिसडै राव श्री कल्याणमलजी रै घटि असमाधि हुई । ताहरा कुवर श्री दळपतजी नू तेडा मेल्हिया । ताहरा कुवर श्री दळपतजी पाछा घरे पधारिया । कुवर श्री भोपतजी देस माहे हुता । नारायण भीमराजोत मूयो । तिण रो भाई दूजणसाल अर नारायण रा दीकरा हरदेसर हुता वाहिरि काढिया अर भोपतजी आप थाणै रहिया । अर राव श्री कल्याणमलजी रै डीलि असमाधि ऊपर भोपतजी पिण वीकानेर तेडाया । कितरा एक दिन

आगे लिखा जायगा । यहा बादशाह ने फिर राजाजी पर कृपा की । जोधपुर पहले ही था और नागौर, सरसा, मारोट और दूसरे ही अनेक परगने दिये । जिस समय राव श्री कल्याणमलजी को परगने दिये जाने की खबर हुई तब कुवर श्री दलपतजी को सरसे के लिए विदा किया । कुवर श्री दलपतजी सरसे गए । तभी राव श्री कल्याणमलजी को शारीरिक व्याधि हुई । तब कुवर श्री दलपतजी को बुलावा भेजा । तब कुवर श्री दलपतजी वापिस घर पधारे । कुवर श्री भोपतजी देश मे थे । नारायण भीमराजोत मर गया । उसके भाई दूजणसाल और नारायण के लडकों को हरदेसर से बाहर निकाल कर भोपतजी स्वय उस स्थान पर रहे । राव श्री कल्याणमलजी की बीमारी पर भोपतजी

रावजी असमाधिया रहि अर वैकुंठ सिधाया। उठै राजा भारमल पणि वैकुंठ सिधाया। विहूं राजवियां दिन आठ वेथी हुई। ओथि राजा भगवन्तदास नूं टीको हुयो।

ता पछै कितरे एके दिने गये राजाजी नूं सिमाणै ऊपरि विदा हुई। राज नागोर पधारिया। सिवाणै ऊपरि जाहरां राजाजी नूं विदा हुई ताहरां इतरा उमराव राजाजी साथे कुमखि दिया। तियां रा नाम लिखीजै छै। साह कुलीखान, वीजो अल्हदी सु विहाणकुली सारिखा नइ खंजरी सारिखा घणा माणिस पंच-भइया, मनंसफदार, राजा जगतमणि सारिखा घणा माणस साथि दिया। भइया मांडण सारिखा इसड़ा घणा ही लोक साथि दिया। राजि

को भी वीकानेर बुला लिया। रावजी कई दिनों तक बीमार रहकर वैकुंठ सिधाये। उधर राजा भारमल भी वैकुंठ सिधाये। दोनों राजाओं के मरने में आठ दिनों का अन्तर रहा। उधर राजा भगवंतदास के तिलक किया गया।

उसके वाद कई दिन बीत जाने पर राजाजी को सिवाने के लिए विदा हुई। आप नागोर पधारे। राजाजी को सिवाने के लिए जब विदा हुई तो इतने उमराव राजाजी के साथ सहायतार्थ दिए। उनके नाम लिखे जाते हैं। साह कुलीखान, दूसरा अलहदी, सो विहाणकुली सरीखे और खंजरी सरीखे अनेक व्यक्ति, पंचभइया, मनसबदार, राजा जगतमणि सरीखे अनेक व्यक्ति और भइया मांडण जैसे अनेक लोग साथ में दिए। आप नागौर पधारे। तब रानीजी,

नागोर पधारिया । ताहरा राणीजी राजाजी री माता कहाडियो जु थे एकरसो मोनू आइ मिलो तिम करिया । मु राजाजी रै मुहतो करमचद मु राजि रै लोक माहि करम= चद रो हुकम राजि लोपै नही । ताहरा मुहतै रै बाप अर राव कल्याणमल राणीजी सेती मुहतै सेती जीव बुरा हुता। तिण मुहतै करमचद जाणियो जे राजि ओथ पधारिया तो म्हाहरो कोई एक बोल राणीजी बुरा कहता हुवै । तिण भय करि अर राजि आगळि औ जवाब कियो । राजि उठा हुती भलै मुहरत खडिया छै, पातिसाहजी सू घणो सुख हुयो छै, भला सुकन हुया छै, राजि न पधारै । ताहरा मुहतै रै पालियै राजि पगे लागण न पधारिया । कहाडि मेल्हियो जु राजि वहिल जोत्राडि अर आवै, पधारि अर मिलिया । ताहरा राणीजी कहाडियो जु न करै परमेस्वर

राजाजी की माता, ने कहलवाया कि आप एक बार मुझसे आकर मिललें, ऐसा करें। सो राजाजी के मेहता करमचन्द सो अपने लोगों म करमचन्द का हुक्म राजाजी गिरने न दे। तब राव कल्याणमल की रानी की मेहता के पिता और मेहता से नाराजगी थी। इसलिए मेहता करमचन्द ने सोचा कि यदि राजाजी वहा पधारे तो शायद रानीजी हमारे बारे मे कुछ बुराई कर दे। उस भय के कारण राजाजी के सामने यह जवाब किया कि आप वहा से अच्छे मुहूर्त मे चले हैं, बादशाह बड़े प्रसन्न हुए हैं, अच्छे शकुन हुए हैं, इसलिए आप वहा न पधारें। तब मेहता द्वारा रोके जाने पर राजाजी पालागन के लिए नहीं पधारे।

जु राजि वैकुंठ पधारियां पछैं जु हूं वहिल जोत्राड़ि अर चढी फिरूं। जाहरां राव कल्याणमलजी फूलमहल पधारिसैं ताहरां हीज हूं वहिल वैसिस अर फिरिस। सु राणीजी महासती दौढ वरस लगै आपरी देही गाळी। अंन भक्षण न कियो। जा जीविया तां सीमफड़ीस अर पणखो छाछ पातळी रो आरोगता। सु राजि सूं मुंहतै सूं वुरो मानि अर वैसि रहिया।

इयै प्रस्तावि राजि नागौर थकी सिवाणै नूं कूच कियो। सु राजि जीवतां कुंअर श्री भोपति कुंवर श्री दळपतजी रो काइ दोघणो कियो हुतो। रजपूत परधान दिया हुता—महेस सकताउत राठौड़, सांखळो गोगादे, मुंहतो जीवराज, अै भोपतजी नूं दिया हुता। अर कुंवर श्री

कहा भेजा कि आप वैली पर चढ़ कर आ जायं और पधार कर मिलें। तव रानीजी ने कहलवाया कि परमेश्वर न करे कि मैं राजाजी के वैकुंठ पधारने के उपरांत वैली पर चढ़ी फिरूं। जब राव श्री कल्याणमलजी फूलमहल पधारेंगे तभी मैं वैली पर वैठकर फिरूंगी। सो महासती रानीजी ने डेढ वर्ष तक अपने शरीर को कष्ट दिया। अन्न नहीं खाया। जब तक जीवित रहीं जब तक सीमफली और पतली छाछ का 'पणखा' ही ग्रहण किया। सो राजाजी और मेहता से वुरा मानकर वैठी रहीं।

उस समय राजाजी ने नागौर से सिवाने के लिए कूच किया। सो राजाजी की जीवितावस्था में कुंवर श्री भोपतिजी ने कुंवर श्री दलपतजी का कुछ वुरा किया था। महेस सकतावत राठौड़ व सांखला गोगादे और

दळपतजी नू पह्रोड गोवलजी, धावड कुवर श्री दळपतजी रो, बीजो मदनो पाताउत बीदावत अर आसो करमसियोत काधिळोत, मुहतो सिरचद, ए सहि कुमर श्री दळपतजी आगै दिया हुता । सु जाहरा राजाजो नागोर हुता कूच करि अर रूण अूतरिया इयै समइयै कुवर श्री दळपतजी वीकानेर हुता । कुअर श्री भोपतजी राजाजी कन्है हुता नागोर । मुहतो करमचद भोपति सेती कुमया करतो । सु मुहतै राजाजी वसि कियो, करि अर ठकुराई आप वसि की । आप हुकम करि राखी । तिण रै लियै भोपतिजो नू पणि देज लेज माहे कमतो सु भोपत तिसडो ठाकुर न हुतो जु किण रै हाथ वसि हुवै । ताहरा मुहतै भोपत री धात राजाजी आगै धाती । अर जीव राजाजी रो भोपति सेती

मेहता जीवराज ये भोपतजी को दिये हुए थे और कुवर श्री दलपतजी को पह्रोड गोवलजी, धावड कुवर श्री दलपतजी का, दूसरा मदना पाताउत बीदाउत और आसा करमसिमोत काधिलोत, मेहता सिरचद, ये सब दिये हुए थे। जब राजाजी नागोर से कूच कर 'रूण' मे उतरे उस समय कुवर श्री दलपतजी बीकानेर मे थे। कुवर श्री भोपतजी राजाजी के पास नागोर मे थे। मेहता करमचद भोपत से नाराज रहता सो मेहता ने राजाजी को वश मे कर सारे अधिकार अपने वश मे कर लिए। अपने हुक्म मे सब रुद्ध रखा। इस कारण भोपतजी को भी लेन-देन मे कमी रखता। पर भोपत ऐसा ठाकुर न था कि किसी के वश मे हो जाय। तब मेहता ने भोपत की चुगली राजाजी के आगे की। राजाजी से भोपत का

वुरो कराड़ियो। भोपत वांसै नागोर रहियो। नु वांसै घोड़ा खजीनू सहु रावळै लेसी, अर हुजदार वांधिसी, अर काकां नूं साथि ले अर पातिसाह कन्है जाइसी, इसड़ा सहि कूड़ी वात राजाजी नूं कहि कहि अर राजाजी रो जीव वुरो कियो। ताहरां राजाजी भोपत ऊपरि चढण लागा। ताहरां राणीजी जसवंतदेजी राजि नूं वीनमियो। राजि दोहरा की हुवो, हूं जाइ अर भोपति नूं ले आविस। ताहरां राणीजी चढि खड़िया। खड़ि नै नागोर पधारिया। आगै देखै तो भोपतिजी किण ही रो विणासियो क्युं नहीं, न क्युं उजाड़ियो वैठा छै। ताहरां भोपतजी नूं ले अर साथि राणीजी पधारिया राजि कन्हां। ताहरां राजाजी भोपतजी रा घोड़ा, रजपूत, परधान सहि परहा किया। करि नै छोकरा सा

बुरा करवाया। भोपत पीछे से नागौर रहा है, वह पीछे से घोड़े, खजाना सब कुछ लेकर हुजदार (पदाधिकारी) बांधेगा और काका को साथ में लेकर बादशाह के पास जायेगा, ऐसी सभी झूठी बातें राजाजी से कह-कह कर राजाजी को नाराज कर दिया। तब राजाजी भोपत पर चढ़ाई करने को उद्यत हुए। तब रानीजी जसवंतदेजी ने राजाजी से विनय की—आप क्यों कष्ट करते हैं; मैं जाकर भोपत को ले आऊंगी। तब रानीजी चढ़ कर गईं। चलकर नागौर आईं। आकर देखा तो भोपतजी न तो किसी का कोई नुकसान और न किसी का कोई उजाड़ ही किये बैठे हैं। तब भोपतिजी को साथ लेकर रानीजी पधारीं। तब राजाजी ने भोपतजी के घोड़े, राजपूत, प्रधान आदि सभी उनसे दूर किए और छोकरे से

कन्है वासिया। पछै साथ ले नै पधारिया। कुंअर श्री दलपतजी सूं मया करि अर हाथि भालिया अर भोपत मेती कुमया की। राणीजी भोपतजी ले नै जोधपुर पधारिया अर राज सिवाणे गढ नूं जाइ लागा। उठै योधपुर किलरा हेक दिन रहता कुंवर भोपतजी कोट री भूवी किराड ऊपरा आखिमीचणी रमता पडिया पणि समाधिया, ऊगरिया। भूखी किराडि री पडियो ऊगरै को नही। पणि केसवरायजी री रख्या करि समाधिया हो ज रहिया। आहल एक लिगार हो नाई।

राजाजी सिवाणे हुता सु सिवाणो राजाजी गढ तोडियो हुतो। पणि मुहतै करमचन्द हरामखोरी करि अर मुहतै री साळी पतो मुहतो कोट माहे हुतो सु वाहिरा जका वस्तु

उनके पास रख दिये। फिर उन्हें साथ लेकर पधारे। कुंअर श्री दलपतजी पर कृपा कर उन्हें समीप लिया और भोपतजी पर नाराजगी की। रानीजी भोपतजी को लेकर जोधपुर पधारीं और राजाजी सिवाने गढ जा पहुँचे। उधर जोधपुर कितने ही दिन रहते हुए कुंवर श्री भोपतजी किले की "भूरी किराड" पर आखमिचौनी खेलते समय नीचे जा गिरे लेकिन फिर स्वस्थ हो गए। "भूरी किराड़" से गिरा हुआ कोई बच नहीं पाता लेकिन केशवरायजी ने रक्षा की इसलिए स्वस्थ ही रहे। जरा भी चोट नहीं आने पाई। राजाजी सिवाने थे और उन्होंने सिवाना गढ तोड डाला होता पर मेहता करमचद ने हरामखोरी की। मेहता का साला पता मेहता किले के अन्दर था सो

मांहि न्हाळीजती सु करमचंद मुंहतौ घाटी मांहा पहुंचाड़ै तिण वासतै कोट तूटै नहीं। सोभत थाणो राखियो राजाजी री तिण थाणै मांहे रामसिंघजी कल्याणमलोत सिरदार हुतो। तठै कुलंजै री घाटी मांहे राव चंदसेण सेती लड़ाई हुई। रामसिंघजी आगै राव चंदसेण भागो। इण वात रो विस्तार आगै कहीजिसी। बुरै हुवाल हुइ नीसरियो। रावळा चीं‍धड़िया वांसै आपड़िया। अमरौ, हेमराज, मानसिंघ खेतसियौत, सांवळदास आपड़िया। ताहरां तिलोक वांभण देहरासरी पाछो घिरि अर मूओ। मानसिंघ खेतसियौत ओळखै हुतो राव चंदसेण नूं। वीजो ठाकुर को ओळखै न हुतो। सु तिणि कहियो—वांभण हेक मूयो अर वीजा ही वाभण मरिसी। इसड़ै राव चंदसेण निरवहियो।

वाहर से जिस वस्तु की आवश्यकता होती वह करमचंद मेहता घाटी में पहुँचा देता। इसलिए गढ़ टूटा नहीं। राजाजी ने सोभत में थाना रखा हुआ था और वहां रामसिंघजी कल्याणमलोत सरदार थे। वहां कुलंजे की घाटी में राव चन्द्रसेन से लड़ाई हुई। रामसिंहजी के सामने राव चन्द्रसेन भाग गया। इस बात का विस्तार आगे कहा जायेगा। बुरे हाल होकर निकला। उनके राजपूत पीछे से पकड़े गए। अमरा हेमराजोत, मानसिंह खेतसियोत, और सांवलदास पकड़े गए। तब तिलोक ब्राह्मण देहरासरी वापिस मुड़कर मर गया। मानसिंह खेतसियोत राव चन्द्रसेन को पहिचानता था, और कोई ठाकुर पहिचानता नहीं था। उसने कहा एक ब्राह्मण तो मर गया और दूसरे भी मरेंगे। इतने

इउ होइ अर वुरै हवाल राव चदसेण नासि गयो । पहाडि चढियो अर ठाकुर पाछा वळिया । रामसिघजी राव चन्दसेण रो गाव गुढो मारि अर राव चन्दसेण नू काढि पाछा सोझति पधारिया । हिवै तिण समै पातिसाह श्री अकवर अजमेर पधारिया छै । मु हतै करमचन्द राजि नू मसलत हुता चुकाइ अर सिवाणै हुता राजाजी नू कहियो जु राजि पातिसाह रै पाए अजमेर पधारो । ताहरा अजमेर राजि पधारिया अर पातिसाहजी कन्हा कुमक री अरदास की । ताहरा पातिसाहजी राजि नू कहियो मैं तो कुमक घणी ही दी हुती । अव तुम्ह सिवाणै पधारो, हू वळे कुमक मेलहू छू । तिसडै राजि वळै सिवाणै पधारिया छै । पछै पातिसाहजी सहवाजखान विदा कियो सिमाणै नू । राजि नू

में राव चन्द्रसेन निकल भागा। इस प्रकार बुरे हाल होकर राव चन्द्रसेन भाग कर पहाड पर चढ गया और ठाकुर लौट आये। रामसिंहजी राव चन्द्रसेन का गाव-गुढा मार और राव चन्द्रसेन को निकाल कर वापिस सोझत पधारे। अब उस समय बादशाह श्री अकबर अजमेर पधारे। मेहता करमचन्द ने राजाजी को परामर्श से चुका कर कहा कि आप सिवाने से अजमेर बादशाह के पास पधारें। तब राजाजी अजमेर पधारे और बादशाह से कुमक के लिए अर्ज की। तब बादशाह ने राजाजी से कहा कि मैंने तो कुमक बहुत दी थी, अब तुम सिवाने जाओ, मैं फिर कुमक भेजता हूँ। तब राजाजी फिर सिवाने पधारे। फिर बादशाह ने सिवाने के लिए साहबाजखान को विदा किया।

आप पास बुलाया पातिसाहजी । सिवाणो राजाजी ही ज तोड़ियो हुतो पणि मुंहतो पतै मुंहतै नूं ऊपरि जिका वस्तु जोईजती सु पहुचाड़तो तिण वासतै गांव तूटो नही । सु मुंहत री हरामखोरी रै पगां गांव रहियो । ता पछै सह-बाजखान विदा कियो सिमाणै नूं । राजि नूं आप पासि बुलाया । पातिसाहजी रै पाए राजि पधारिया । वांसै सह-बाजखान गढ ऊपरि वसतवानो चढण न दियो । ताहरां दिनां पनरां माहे गांव तूटो ।

राजि सिमाणै थका ही ज सिगळै देस मांहे पातिसाहजी किरोडी मेल्हिया हुता । ताहरां बीकानेर पणि किरोड़ी आया । अठै राणी रत्नावती वैकुंठ सिधाया संवत् १६३२ मांहे । ताहरां अठै बीजा ठाकुरां माहां बीकानेर कोई न

बादशाह ने राजाजी को अपने पास बुला लिया । सिवाना राजाजी ने ही तोड़ दिया होता पर मेहता पता मेहता को ऊपर जिस वस्तु की आवश्यकता होती सो पहुँचाता रहता, इसलिए गढ़ टूटा नहीं । इस प्रकार मेहता की हरामखोरी के कारण वह गांव रह गया । उसके बाद सिवाने पर सहबाजखान को विदा किया और राजाजी को अपने पास बुलाया । राजाजी बादशाह के पास पधारे । पीछे से सहबाजखान ने गढ़ पर वस्तु आदि चढ़ने न दी । तब पंद्रह दिनों में गांव टूट गया ।

राजाजी जब सिवाने थे तभी बादशाह ने सारे देश में किरोड़ी भेज दिये थे । तब बीकानेर में भी किरोड़ी आये । उधर संवत् १६३२ में रानी रत्नावती वैकुंठ सिधाई । तब यहां दूसरे ठाकुरों में से बीकानेर

हुतो । सहि सिमाणै हुता । अठै कुवर श्री दळपतजी वीकानेरि हुता । राजाजी कुवर श्री भोपतजी [नू] जोधपुर हुता वीकानेर नू विदा किया । कुवर श्री दळपतजी रिणी नू पधारिया । बठै वीकानेर माहे किरोडी अजाजतो करण लागा । ताहरा कुवर श्री भोपतजी करोडिया नू दडबडाया । ताहरा करोडी नीसरि गया । हिवै कुवर श्री भोपतजी ज्यू कुवर सदा ही दारू आरोगै छै अर वकसीस करै छै, ज्यू सदा ही रामति-तमासा, ख्याल-बगसीस करै छै, तिम सदा ही रामति-तमासा, ख्याल-बगसीस करण लागा । तिण ऊपरि मुहतै रै दाइ नावै । इसै समइयै रहता राजि भदाणै पधारिया । ताहरा मुहतै सू कुवर भोपतजी देज रै लियै कुमया करता सु मुहतै राजाजी आगै कुवर श्री

में कोई नहीं था, सभी सिवाने थे । यहा कुवर श्री दलपतजी बीकानेर में थे । राजाजी ने कुवर श्री भोपतजी को जोधपुर से बीकानेर के लिए विदा किया । कुवर श्री दलपतजी रिणी पधारे । उधर किरोडी बीकानेर मे ज्यादती करने लगे । तब कुवर श्री भोपतजी ने किरोडियों को धमकाया । तब किरोडी चल दिये । अब कुवर श्री भोपतजी जिस प्रकार सदा ही शराब पीते और दान देते थे और ज्यो सदा ही खेल-तमाशे, खयाल बख्शीश आदि करते थे त्यों सदा ही करने लगे । यह बात मेहता को अच्छी नहीं लगती थी । ऐसा समय रहते हुए राजाजी भादाणे पधारे । तब कुवर श्री भोपतजी द्रव्य के लिए मेहता से नाराज रहते थे सो मेहता ने राजाजी से कुवर श्री भोपतजी की चुगली

भोपतजी री चुगली खाधी। ताहरां राज कुंवर श्री भोपतजी ऊपरि रोसांणा। ताहरां राजाजी भोपतजी नूं तेड़ण नूं राणीजी मेल्हिया। ताहरां राणीजी बीकानेर पधारि अर कुंवर श्री भोपतजी नूं दिलासा दे अर दारू आरोगाड़ि अर जाहरां छाकिया हुआ ताहरां वहिल ऊपरि वैसाणि अर ले पधारिया राजाजी कन्है। जिसड़ै राजाजी रै पाए लागा तिसड़ै राजाजी डंडोकां सेती पूठि ऊपर मारण लागा आपरै हाथ सेती, ताहरां राणीजी श्री जसवंतदेजी आडा हाथ दिया, सु हाथां ऊपर पणि डंडोकां री चोट लागी, ताहरां चूड़ी वधियां। तिसड़ै सै मुंहतै राजाजी नूं कहि अर वीच की, भोपतजी छुड़ाया, पणि काम सहि मुंहतै करमचन्द रा। पहिलो राजाजी कन्हा सभा दिराड़ी अर लोक देखतां वीच

खाई। तब राजाजी कुंवर श्री भोपतजी पर क्रोधित हुए। तब राजाजी ने भोपतजी को बुलाने के लिए रानीजी को भेजा। तब रानीजी बीकानेर पधार कर और कुंवर श्री भोपतजी को धीरज बंधा कर तथा शराब पिला कर जब नशे में छक गये तब बैली में बैठा कर राजाजी के पास ले पधारीं। जब वे राजाजी के पांव पड़ने लगे तो डंडों से राजाजी पीठ पर अपने हाथ से मारने लगे तो रानीजी श्री जसवंतदेजी ने हाथ आगे दे दिए जिससे उनके हाथों पर डंडे की चोट पड़ी और चूड़ियां वध गईं। इतने में मेहता करमचंद ने राजाजी से कह कर बीचविचाव किया और भोपतजी को छुड़ाया। लेकिन यह सारा काम मेहता करमचंद का ही था। पहले तो राजाजी से सजा दिलवाई और फिर लोगों के सामने

की, छुडायो । देस माहे रिणी कुवर श्री दळपतिजी हुता सु परिण राजि रैं पाए तेडाया । उठै आइ राजाजी रैं पाए लागा । उठै राजाजी इलगार कियो भदाणैं हुता पातिसाहजी दिसा । कुवर श्री भोपत रा परधान हुता महेस गोगादे, जीवराज सु परिण कुवर श्री दळपतजी आगैं दिया । अर कुवर श्री दळपतजी हाथा झालिया । रामसिंघजी रैं खोळैं बैसारिण अर देस मैं विदा किया । अर राजाजी भोपतजी नू साथि ले नै पातिसाह दिसा खडिया । अर ऊठ एक घणू दोहरो हुवै, इम करता अजमेर पातिसाह रैं पाए पधारिया । कुवर श्री दळपतजी कठोती रैं मेल्हारण हुता राणीजी विदा किया देस नू ।

अर हरामखोरैं मुहतैं इउ आलोचियो हुतो जु कुवर

बीचबिचाव कर छुडाया । देश मे कुवर श्री दलपतजी रिणी मे थे सो उन्हें राजाजी के पास बुलवाया । वहा आकर राजाजी के पाव पडे । उधर राजाजी ने भादाणे से बादशाह की ओर प्रस्थान किया । कुवर श्री भोपतजी के प्रधान महेस गोगादे व जीवराज को भी दलपतजी की ओर कर दिया और कुवर श्री दलपतजी को नजदीक लिया तथा रामसिंहजी की गोद बैठा कर देश की ओर विदा किया और राजाजी भोपतजी को साथ लेकर बादशाह की ओर चले । उनके पास एक ऊट था जो सवारी में बडा कष्टप्रद था । यों करते अजमेर बादशाह के पास पहुँचे । कुवर श्री दलपतजी को रानीजी ने कठोती के पडाव से देश की ओर विदा किया ।

भोपत राजाजी रै साथ इम कियो छै, अर कुंवर श्री दळ-पतजी नूं देस मांहे ले जाइ खता खवाड़िस्यां। अठै राणीजी आगै इयुं कहियो जु कुंवरजी नूं खुधा न लागै सु म्हे जांणां छां। एक गांठि छै गिटक एक रै मांन सु भूख लागण नहीं दैती छै। जाहरां नींवू जवड़ी हुसी ताहरां दळपतजी रा दुसमणां नूं दोहरी होसी। पणि क्याल तेजसी वडौ वैद छै, आज धनंतर छै, तिण कन्हां मूंग हेक हेक जिवड़ा राखा च्यारि दिराड़ीजै तौ समाधि हुवै। राणीजी आगै मुंहतै इयुं कह्यौ। कहि अर राखा री कारी रा हुकम लिया। ले नं सिरचंद मुंहतै नूं राणीजी कहियो हुतो ज्यूं गुण हुवै तिम करिया। सु न का गांठि न का

हरामखोर मेहता ने यों सोचा था कि कुंवर भोपत को तो इस प्रकार राजाजी के साथ कर दिया है और कुंवर श्री दलपतजी को देश में ले जाकर मजा चखायेंगे। इधर रानीजी से यों कहा कि कुंवरजी को भूख नहीं लगती सो हम जानते हैं। गिटक के बराबर एक गांठ है सो भूख नहीं लगने देती। जब नींबू जितनी बड़ी हो जायगी तो दलपतजी के शत्रुओं को कष्ट देगी। लेकिन तेजसी क्याल बड़ा वैद्य है, आज वह धन्वन्तरि के समान ही है। उससे मूंग के बराबर के चार राखे दिलाए जायें तो स्वस्थ हो जायें। रानीजी से मेहता ने इस प्रकार कहा और राखों की कारी का हुक्म ले लिया। सिरचन्द मेहता को रानीजी ने यह कह दिया था कि जिस प्रकार गुण करे वैसा ही करना। सो न तो कोई गांठ और न

वेदन इउ ही उपाव करि अर वात थापी । कदे हेकै वाय करतो पेट दूखतो ज्यू छोरू रा पेट हुवै छै तिम । कदे खुधा न हुती क्यू जु छोरू पीड अणहुती ही पूछ्या हुवा पीड कहै छै तिम कहता । पिण हरामखोरे दगो करि अर वात आलोची । कु वर दळपतजी विगै पधारिया हुता । आप सिरचद बीकानेर गयो । अर हरामखोर तेजसी वैद वेवे एकठा मिलि अर कारी नू महूरत पूछि, आप माहे सिरचद तेजसी मिलि मसलत करि अर डाम रो राछ एकै जिनस रो घडायो । न चिहु युगा माहे साभळ्यो न दीठो । पत्री च्यारि विचाळै दिराई आगुळ बिहु बिहु रै पहनै री । अर फिरवाज चोपखेर पणि आगुळा बिहु बिहु रै पहनै री । अर जु विचि छेनो तिण माहि पणि राखा विचारिया । अर

कोई पीडा लेकिन यों ही उपाय रचकर बात बनाई । कभी कभी वायु-जन्य पीडा पेट में होती जैसे प्राय बालको को हो जाती है। कभी भूख नहीं होती क्योंकि बच्चे पीडा न होने पर भी पूछने पर पीडा बताया करते है । लेकिन हरामखोरों ने दगा करके बात विचारी थी। कु वर दलपतजी विग्गा पधारे हुए थे । खुद सिरचन्द बीकानेर गया और हराम-खोर तेजसी वैद्य दोनों मिल कर कारी का मुहूर्त पूछ आये । सिरचद और तेजसी ने आपस मे मिल कर डाम देने का एक औजार ऐसी वस्तु का बनवाया कि जिसे चारों युगों में न किसी ने सुना और न देखा । दो दो अगुल के पहले की चार पत्तिया उनके अदर लगवाई । और जो बीच में जगह रही उसमे चार-राखे रखवाये और फिर कु वर जी को

पछै कुंवरजी नु कहाड़ियो राजि कारी रो महूरत वैगो छै, राजि वैंगा पधारेज्या। उठा विगै हुंता कुंवरजी इलगार करि वीकानेर पधारिया संवत् १६३३ येस्ट वदि ९ कारी करावण रै वासतै। सिरचंद अर तेजसी क्याल वैद हुइ अर कारी की। सु कारी न हिंदुस्तांन न खुरासांण मांहे सुणी न दीठी। सूंटी रै पाखेड़ि कारी की। जितरा सामधरमी हुता तियां रा जीव दोहरा हुवे हुता। अर हरामखोरे पूरी कारी की। आपरो मन मनायो। सु किसी परि राखा दिया छै ते सांभळिज्या रे सामधरमियां। कान्हड़ तियै आपरै हाथ रा जतन किया। कपड़ो माटी सेती लपेट अर कळाई सुवो हाथ लपेटियो हेकरसो। वळे विसरै ही हाथ रा जतन किया। पछै राखै रो राछ तवै जिवड़ो हुतो सु छांणां

कहलवाया कि कारी का मुहूर्त शीघ्र ही है सो आप जल्दी ही पधारें। सं० १६३३ जेठ वदी नवमी को विग्गे से कुंवरजी कारी कराने के लिये बीकानेर पधारे। सिरचंद और तेजसी क्याल ने वैद्य वन कर कारी की। ऐसी कारी न हिन्दुस्तान और न खुरासान में ही किसी ने सुनी या देखी। नाभि के पसवाड़े कारी की गई। जितने स्वामिभक्त थे उनके चित्त दुखी हो रहे थे लेकिन हरामखोरों ने अपने मन की बात पूरी कर कारी की। जिस भांति राखे दिये गये उसे सब स्वामिभक्त लोग ध्यान लगा कर सुनें। कान्हड़ ने अपने हाथों से उनका उपचार किया। पहले तो माटी में कपड़ा लपेट कर कलाई तक का हाथ उससे लपेट दिया। फिर इसी प्रकार दूसरे हाथ को लपेटा। इसके बाद राखे के औजार को

खीहाळा सेती तपायो। जिसडो टवके टवके चुवण लागो रातो लाल कियो। ताहरा हेकरसो सू टी पासती सेक दियो, वळ तेल सेती दियो। राखा चोपडि अर वळे वीजी ही वार तिम ही ज रातो करि चुवण लागो ताहरा दियो। इम ही ज च्यारि चुहिया दिया, राता लाल चुवता करि करि। ए वळे तेल सेती चोपडि अर इण ही ज परि राखा दिया। इम दे अर कहियो–ए पेट री कारी की पणि पूठ री कारी नही की सु वेगा हुवौ। तपावो राछ ज्यू पूठ री कारी करा। जिसडै तपाइ अर मवजूद दियण 'नू हुवा तिसडै सीपो मु हतो बोलियो। हिवै जिण वात रै लियै थे अटकळ हुता सु पारि पडी। हिवै थाहरो था मन मनायो। हिवै फिटा करो। मत राखा दियो। ताहरा गोवलजी पणि कहियो जु हिवै

जो तवे के बराबर था, जलते उपलों से तपाया। जब गहरा लाल होकर वह चूने लगा तो नाभि के पसवाडे एक बार सेक दिया और फिर तेल से दिया। राखों को चुपड कर फिर दूसरी बार जब गहरा लाल होकर चूने लगा तो सेक दिया। इसी प्रकार गहरे लाल चूने वाले औजार से चार सेक दिये। इनको फिर तेल से चुपड कर इन्हीं पर राखे दिये। ऐसा करके कहा कि यह तो पेट की कारी की है, लेकिन पीठ की कारी नहीं की सो जल्दी करो। औजार को तपाओ जिससे पीठ की कारी करें। जब तपा कर देने को तैय्यार हुये तो सीपा मेहता बोला कि जिस बात के लिए कोशिश कर रहे थे वह तो पार पड ही गई और आपने अपने मन की कर ही ली, अब रहने दो, राखे मत दो। तब गोवलजी ने भी

नूं मेड़तो दे अर आबू सीरोही नूं विदा किया संवत् १६३४ अर पातिसाहजी माळवै सिधाया। मानसिंघ राजाउत नूं राणैजी ऊपरि बिसरी विदा हुई। भोपतजी पातिसाहजी रै साथि। राजि साथि सइयद हासिम कासिम नूं योधपुर दे अर राजि साथि विदा किया। तुरसमखान नूं पाटण दे अर राज साथि विदा कियो। कहियो तूं पाटण ताहरां जाए जाहरां राजाजी तोनूं विदा दै। काम पार घाति अर पाटण जाए, दखल करे। राजाजी मेड़तै पधारिया। कुंवर दळपतजी नूं तेड़ो मेल्हियो। कहाड़ियो म्हांनूं थे वेगा आइ मिलिया। राजि मेड़तै हुंता आघा ही ज कूच कियो। अर कुंवर श्री दळपतजी धरती माहां होइ वगड़ी जाइ मिलिया। राजाजी रै पाए लागा। राजि कांटाळियै पधारि उतरिया।

की ओर विदा किया और उस वर्ष सं. १६३४ में बादशाह मालवे पधारे। मानसिंह राजावत को राणाजी पर दूसरी बार विदा हुई। भोपतजी बादशाह के साथ में थे। सैयद हासिम कासिम को जोधपुर देकर राजाजी के साथ विदा किया। तुरसमखां को पाटन देकर राजाजी के साथ विदा किया और कहा कि तुम पाटन तब जाना जब राजाजी तुम्हें विदा दे। काम पार पटक कर पाटन जाना और उस पर दखल करना। राजाजी मेड़ता पधारे। कुंवर दलपतजी को बुलावा भेजा और कहलवाया कि जल्दी ही हमसे आकर मिलें। राजाजी ने मेड़ता से आगे की ओर कूच किया और कुंवर दलपतजी बगड़ी जाकर उनसे मिले। राजाजी के चरण स्पर्श किये। राजाजी कांटालिया पधार कर

उठा हेक दौड कराडि वासोर मारियो। तेथि सोलकी वीरो रूडा मूयो। पहाड ऊपर चढि मुगले मार की। राजि दौड की ताहरा तुरसमखान साथि हुतो। जलालखान भाई समेत साथि हुतो। जलोचो तेवाण साथि हुतो। मार करि अर पधारिया ता ,पछै राणीजी अर कुवरजी नू विदा पाछी की वीकानेर नू। राणीजी अर कुवर श्री दळपतजी वीकानेर पधारिया। राणीजी मास १॥ दोढ वीकानेर रहि अर राणीजी रै टीकै री पहिरावणी लोका नू दे अर वळै राजाजी रा तेडाया ताहरा राजाजी दिसा सिधाया। अर राजाजी कुवरजी नू विदा की पछै चोटीलो अर रोहीस मारियो। अर राणीजी खडिया वासै कुवरजी नू धरती माहे राखिया वीकानेर री। कुवरजी होळी रै वासै

उतरे। वहा चढाई कर वासोर पर विजय प्राप्त की। यहीं सोलकी वीरा सद्गति को प्राप्त हुआ। मुगलों ने पहाड के ऊपर चढ कर लडाई की। राजाजी ने चढाई की तव तुरसमखान उनके साथ था। जलालखा भाई सहित साथ था। जलोची तेवाण साथ था। युद्ध करके पधारे उसके वाद रानीजी तथा कुवरजी को वापिस वीकानेर की तरफ विदा किया। रानीजी और कुवर श्री दलपतजी वीकानेर पधारे। रानीजी डेढ महिने वीकानेर रहीं और टीके की पहरावनी लोगों को देकर राजाजी का वुलावा आने पर उधर चली गई। और राजाजी ने कुवरजी को विदा करने के वाद "चोटीला" और "रोहीस" पर अधिकार कर लिया। रानीजी के जाने के वाद कुवरजी को वीकानेर मे ही रक्खा।

बुधेणाऊ पधारिया। रामसिंघजी रै भगति कीं। सुरतांण प्रिथीराजजी सहि ठाकुर बीजा ही कल्याणपुरि भेळा हुया। दिन पांच कल्याणपुर रहिया। चौगांन रमिया। रमि खेलि अर कुंवरजी वळे बुधेणाऊ पधारिया। तियै प्रस्तावि नवै रे जाटे महेस साथि आप मांहे वेढि हुई। ताहरा महेस मूऔ। सु केसव भगति मांहे हुतो तिण महेस मारियौ सांभळियौ। तहरां केसव उठा हुंती रामसिंघ रा रजपूत ले जाइ अर नवै रा जाट मारिया, बांधिया, बांधि अर ले आयो। ताहरां कुंवरजी नूं खबरि हुई जु नवै रा जाट केसवि अर रामसिंघ रे रजपूते मारिया बांधिया छै। तिण ऊपरि-कुंवरजी चढिया। विगै पधारिया। ताहरां केसव नूं खबरि हुई जु कुंवरजी पधारिया। ताहरां केसव आप री वस ही

कुंवर जी होली के बाद "बुधेणाऊ" पधारे और रामसिंहजी की सेवा में उपस्थित हुये। सुरताण, प्रिथीराज और दूसरे सभी ठाकुर कल्याणपुर में इकट्ठे हुये। चौगान खेले और खेलकर कुंवरजी फिर 'बुधेणाऊ' पधारे। उस प्रस्ताव में 'नवे' के जाटों और महेस के आदमियों में लड़ाई हुई जिसमें महेस मारा गया। केसव जो सेवा में था उसने महेस की मृत्यु का समाचार सुना। इस पर वह वहां से रामसिंह के राजपूत ले गया और नवे के जाटों को मारा तथा उनको बांध कर ले आया। जब कुंवरजी को यह खबर हुई कि केसव और रामसिंह के राजपूतों ने नवे के जाटों को मारा और बांध लिया है तो उन्होंने उन पर चढाई की और 'विग्गा' पधारे। जब केसव को कुंवरजी के पधारने की खबर

सु ले अर नासि कल्याणपुरि गयो। ताहरा कु वरजी बीकानेर सिधाया। अर रामसिघजी कितरे हेके दिने सहि भाई एकठा होइ सीरोही राजाजी कन्है गया। अठा चढिया ताहरा केसव नू कही यै तू एथि रहे। ताहरा केसव कहियो हू साथ आइसि। जो मोहू बीहो छो, था जे घट-काळे जो कियो तो हू कही बीजै री चाकरी करिसि। पणि था कन्है कुण। रहिसी चाकरी। ताहरा रामसिघजी मुह रा भारी हुना साथि लियो। आगै पाली कन्है जावता वळे रामसिघजी कहियो तू कु भळमेर जाहि, तो जो भाणजी नू भळावो। ताहरा वळे केसव जवाव कियो। रामसिघजी कहियो तू कुभळमेर जाहि तो नउ भाणजी नू भळावो। ताहरा वळे केसव जवाव कियो रामसिघजी नू, म्हे तो ढाढा

हुई तो वह अपना सारा सामान लेकर भाग कर कल्याणपुर चला गया। तब कु वरजी वापस बीकानेर आ गये। अनेक दिनों बाद रामसिंहजी और दूसरे सभी भाई इकठ्ठे होकर सिरोही में राजाजी के पास गये। चलते समय उन्होंने केसव से कहा कि तुम यहीं रहो। तब केसव ने कहा कि मैं तो साथ चलू गा। यदि मुझसे डरते हो व हिम्मत हारते हो तो मैं किसी दूसरे की नौकरी करू गा। लेकिन आपके पास कौन रहेगा? इस पर रामसिंहजी ने भारी मन से उसको साथ लिया। आगे पाली के पास जाते समय रामसिंहजी ने फिर कहा कि तुम कुम्भलमेर चले जाओ। इस पर उसने कहा कि यह काम भाणजी को बतलाओ इसके बाद केसव ने फिर जवाब किया। रामसिंहजी ने कहा कि

नहीं जु आगे वै भळाईजै । तो पखै बीजो ठाकुर को नहीं छै। ठाकुर देस मांहे बीजा ही घणा ही छै। ठकुराणिये बीजीये ही फूको घणीये पीयो छै। तो पखो ही मोनू ओळखिसी। ताहरां रामसिघजी मुंह रा भारी तिण नूं कह्यो क्यूं नही। आगै लसकर मांहे गया। ओथि कितरे हेक दिहाड़े रहतां राजाजी नूं सुरतांण आइ मिलियो। सुरतांण ओथि भोपतिजी कन्है मेलियौ। कहाड़ियौ जु पातिसाहजी रै पाये राव सुरतांण घातेज्या। वांसै विजै भगति की। ओथि रामसिघजी प्रिथीराजजी बिजै री भगति जोमिया। ताहरां राजाजी जीव वुरा किया। इयां नूं

तुम कुंभलमेर जाओ तो कहा कि मैं नहीं जाता, भाणजी को भेजो। उसने फिर जवाब देते हुये रामसिहजी को कहा कि हम जानवर नहीं है जो आप किसी को भी सम्भलादो। क्या आपके सिवाय कोई दूसरा ठाकुर नहीं है ? ठाकुर और भी बहुत से है जिनको ठकुरानियों ने जन्म दिया है। अब आप के अलावा कोई दूसरा ही मेरी पहिचान करेगा। इस पर रामसिहजी ने अपने स्वाभाविक संकोच वश कुछ नहीं कहा। लश्कर में जा मिलने पर कितने ही दिनों बाद सुरताण आकर राजाजी से मिला। उन्होंने सुरताण को भोपतजी के पास भेज दिया और कह-लाया कि राव सुरताण को बादशाह की सेवा में भेज देना। इसके बाद 'बीजा' ने मनुहार की तो रामसिंहजी व प्रिथीराजजी ने उसके यहां भोजन किया। इस पर राजाजी ने बहुत बुरा माना और इनको कहलाया कि आप मेरे थोड़े ही थे। आपको हमारे शत्रु के यहां भोजन नहीं

कहाडियो जु थे मोनू थोडा ई छा । अै म्हारा दुसमण, हेक तो इया पुहपावती मारी, आपा तौ जोमणो नही । बीजो पातिसाहजी आगै घाल पडिसी,। जु अै तौ उवा री भगतिये जीमैं छैं । तौ म्हा अर था मास ४ वास कोई नही । ताहरा अुठा हुती ए हालिया । मजल १/२ ऊपरि आइ नैं ताहरा रामसिंघजी राजाजी नु बीनवियो—राजि म्हे जाणा नही । जाणियो आगिला ठाकुर ही गढरोहा करता ताहरा आप माहे चौपडि रमता तिण वासतैं भोळैं जीमिया । औ गुनह बगसीजैं । ताहरा मजला २/३ थी पाछा घेरिया ।

उठै पातिसाहजी रैं पाए राव सुरताणजी लागो । लागि अर मथुराजी री जात नू विदा करि अर मथुरा आयो हुतो ।

करना था क्योंकि इन्होंने 'पुहपावती' को मार डाला था । दूसरे बादशाह को भी इस बात का पता लगेगा कि ये लोग तो उनकी मनुहार पर भोजन करते हैं । इसलिये आपके और हमारे चार महीनों तक साथ में रहना कठिन है । इस पर वे लोग वहा से चल दिये और एक दो मंजिल चले जाने के बाद रामसिंहजी ने राजाजी से निवेदन किया कि हमने अनजान में ऐसा किया । हमने समझा कि पहले भी राजा लोग गढ पर आक्रमण करते तब आपस में चौपड खेला करते थे, इसलिये इस भुलावे में हमने भोजन कर लिया । हमारा यह अपराध क्षमा किया जाय । इस पर दो तीन मंजिल से उन्हें वापस बुला लिया ।

उधर राव सुरताण बादशाह की सेवा में उपस्थित हुआ । और उसके बाद मथुरा जी की यात्रा के लिये मथुरा आया हुआ था । सिरोही

राव सुरतांण देवड़ो सीरोही हुंता विजै रो लिखियो आयो, जको राव सुरतांण कन्है रजपूत हुतो तियां नूं, जु राव सुरतांण नूं नसाड़ेज्या। वेगो ले आवेज्या। ताहरां राव सुरतांण नूं रजपूते कहियो जु हालो। ताहरा राव सुरतांण कहियो हूं क्यउं कहौ जाअउं। राजाजी बोल दे अर पातिसाहजी रै पाए मेल्हियो छो। ताहरां रजपूते कहियो म्हे तोनूं मारिस्यां, ताहरां गोवर्द्धनजी हुता ले अर रजपूत राव सुरतांण नूं ले नाठा। सीरोही गयौ।

राजाजी पातिसाही बकसी नूं महलो दियण लागा। राजाजी, तुरसमखांन, सईद हासिम औ बैसि अर जोवण लागा। ताहरां रामासिघजी रो महलो लैतां बोजा रामसिघजी रा रजपूते घोड़ा हाथ झालि अर तसलीम करि करि

से बीजा ने राव सुरताण देवड़ा के राजपूतों के पास लिख भेजा कि राव सुरताण को वहां से भगाना और जल्दी ही लेकर आना। जब राजपूतों ने राव सुरताण को चलने के लिये कहा तो वह बोला कि राजाजी ने कहकर मुझे बादशाह की सेवा में भिजवाया है इसलिये मैं कैसे चलूं। इस पर राजपूतों ने कहा कि हम तुमको मारेंगे। तब गोवर्द्धनजी से राजपूत राव सुरताण को लेकर सिरोही चले गये।

राजाजी बादशाही बख्शी को महला देने लगे। राजाजी, तुरसमखां और सैयद हासिम सब बैठ कर देखने लगे। रामसिंह का महला लेते समय रामसिंहजी के दूसरे राजपूत तसलीम कर कर और अपने घोड़ों की लगामें हाथों में लिये लौट आवे। लेकिन केसव घोड़े पर

वाहुडिया अर केसव घोडै चढियो ही ज रहियो । न ऊतर्यो न तसलीम की । आगै जावतै घोडो नखाडियो । ताहरा राजाजो दीठो । देखि राजाजी खीजिया । राजि इसडा हुआ जु ओथे मराडै । आगै ही उण नै मारण नै राजाजी घातकू किया हुता भाटी अमरो नीवावत, राठवड सावळदास सकताउत, राठवड रूपसी नेताउत, भाटी हेमराज, राठवड करमसी भीदावत । इतरा आं नै ठाकुर १०ऽ१२ बीजा राजि हुकम कियो हुतो जु इण नू मारिज्या । सु केसव रामसिंघजी हुता अळगो न हुवै । सु इया री घात का लागै न हुती । तितरै महलै ऊपरि राज खीजिया अर कहियो रामसिंघजी समेत केसव नू कूटि मारो । ताहरा रामसिंघजी ऊपरि राणीजी मया करता । ताहरा राणीजो राजि स्यू अरज करि अर

चढा ही रहा – न उतरा और न तसलीम ही की । आगे जाते समय उसने घोडा दौडाया जो राजाजी ने देख लिया । राजाजी को इतना क्रोध आया कि उसको नहीं मरवा डाले । पहले भी उसको मारने के लिये राजाजी ने भाटी अमरा नींबावत, राठौड सावलदास सक्तावत, राठौड रूपसी नेतावत, भाटी हेमराज, राठौड करमसी भींदावत इन सब ठाकुरों को तथा दस बारह दूसरों को इसे मारने के लिये हुक्म दे रक्खा था । लेकिन केसव रामसिंहजी से अलग नहीं रहता था इसलिये इनकी घात नहीं लग पाती थी । उस दिन महला देने के समय राजाजी को क्रोध आ गया और उन्होंने कहा कि रामसिंहजी सहित केसव को कूटो-मारो । रानीजी रामसिंहजी पर दया रखती थी इस-

कहियो । आज राज काम सिर छो । कटक मांहे खलल पड़िसी । हिवड़ां रामसिंघजी नूं मास ४ च्यारि वास हूं विदा करो । ताहरां राजाजी रामसिंघजी नूं कहियो मास ४ मांहरै वास हुंता पासै हुवो ।

एथ अमरै कल्याणमलोत पातिसाही सांढि ली हुती । ताहरां कुंवर श्री दळपतजी नूं राजाजी कहाड़ि मेल्हियो जु अै सांढि घेराए । अर इण नूं काढे परहा धरती महा अमरै नू । ताहरां इसड़ै सै टाणै कुंवर श्री दळपतिजी वीकानेर थी चढि अर इयां सांमहा पधारिया । आंवासर महा करि, सोहवै महा करि सिन्धू पधारिया । सिन्धू ओथ खबरि पाई जु एथि तो नैड़ा सा नहीं । ताहरां सिन्धू हुता कूच करि अर वाढसरि पधारिया । ओथि राघवदास रा

लिये उन्होंने राजाजी से निवेदन किया कि आज आप काम पर हो और युद्ध में विघ्न पड़ेगा इसलिये अभी तो रामसिंह को चार महीने के लिये यहां से विदा करो । इस पर राजाजी ने रामसिंहजी से कहा कि चार महीनों के लिये यहां से अन्यत्र चले जाओ ।

इधर अमरा कल्याणमलोत ने बादशाही सांढ़ें ले ली । तब राजाजी ने दलपतजी को कहलाया कि ये सांढ़ें वापिस दिलवाना और अमरा को राज्य से बाहर निकाल देना । तब कुंवर श्री दलपतजी वीकानेर से चढ़कर इनके सामने गये । 'आंवासर' और 'सोहवा' होते हुये 'सिन्धू' पधारे जहां यह मालूम हुआ कि अमरा कहीं नजदीक में नहीं है । तब 'सिन्धू' से कूच कर वाढ़सर पधारे । वहां राघवदास के

आदमी खोसाखू दो करता हुता सु कु वर श्री दळपतजी झलाडिया । झलाइ अर गाव माहे खेजडी हुती तिण सेती च्यारे बाधा मुहकम । तिण ऊपरि ढाहर बवाडिया । ढाहर बाधि अर पछै कु वर श्री दळपतजी आपरै हाथ सरे मारिया । ताहरा कु वर श्री वाळक हुता तिण सरे आगुळ ४ च्यारि मारकी । जिसडै सर २।४ लागा तिसडै गोवलजी वकसाया । उठा हुती वळे पाछा वळिया, खडिया । कु वर श्री दळपतजी नू रावळो कागळ समाचार आयो । ये देस माहे आवो । कु वरजी डेरो लसकर गोसाईसर नू खडायो । आप परधान वाणिया नू साथि ले अर महूरत साधण नू वीकानेर-पधारिया । पहर १ एक वीकानेर रहि अर गोसाईसर आइ पधारि अर साथ सेती भेळा हुआ । उठा आघा रिणी नू

आदमी लूट-खसोट करते थे जिन्हें कु वर श्री दलपतजी ने पकडवा कर गाव में खेजडी से मजबूत बधवा दिया । ऊपर बेरी के काटे (ढाहर) वधवा दिये । बाध कर कु वर श्री दलपतजी ने अपने हाथ से तीर मारे । तब कु वर श्री बालक ही थे इसलिए चार अगुल तक ही तीर लगे । जब दो चार तीर लगे तो गोरलजी ने कह कर छुडवाया । वहा से फिर वापिस आये । कु वर श्री दलपतजी के पास राजाजी का समाचार आया कि आप वीकानेर आओ । कु वरजी ने लश्कर गोसाईसर की तरफ चलाया और स्वय प्रधान महाजनों को साथ लेकर मुहूर्त साधने के लिये बीकानेर पधारे । एक पहर बीकानेर रह कर वापिस 'गुसाईसर' पधारे । वहा से आगे 'रिणी' की तरफ चले । जब

खड़िया । अै गांवि पधारिया ताहरां सांकर गुहिलोत राजि रा कागळ ले आयो । राजि कहाड़ियो जु अठै अमरैं कन्हां सांढ्यां दिराड़िया । पातिसाही र्‌या सांढ्यां छै । दिराड़ि अमरो परहो काढिज्या । अै कागळ विचारि अर कुंवरजी कटक करि अर अमरै रै गांव ऊपरि पधारिया । उठै पधारि माणस फेरिया विचाळै । कुंवरजी कहाड़ियो थे गांव छाडो । उवांह कहाड़ियो जु कुंवरजी पाछा ऊतरै ज्यूं म्हे गांव छाडां नही तर न छाडां । परधान फेरिया । भांन पाताउत अर पीथो गोपालोत कहि रहिया परिण कहै जे कुंवरजी पाछा ऊतरैं तो म्हे छाडां । ताहरां ओथि वेढि हुई परिण सबळ वेढि हुई । अमरै रा आदमी तीस ३० ठवडि रहिया । राठवड़ राम, गोइंद टेमांणी । राठोड़ राम रो घाव

गांव पहुँचे तो सांकर गुहिलोत राजाजी का पत्र लेकर आया । राजाजी ने कहलवाया था कि अमरा से बादशाही सांढ़ें दिलवाना और उसे राज्य से दूर निकाल देना । इस पत्र पर विचार कर कुंवरजी ने कटक लेकर अमरा के गांव पर चढाई की । वहां पधार कर आदमियों के हाथ कहलवाया कि आप गांव छोड़ जाइये । इस पर उन्होंने कहलवाया कि कंवरजी वापिस पधारें तो हम गांव छोड़ें और नहीं तो नहीं छोड़ें । प्रधान दोनों तरफ फिरे । भान पातावत और पीथा गोपालोत ने बहुत समझाया लेकिन यही कहा कि कुंवरजी वापिस पधारे तो हम गांव छोड़ें । तब वहां युद्ध हुआ और बहुत जोरदार युद्ध हुआ । अमरा के तीस आदमी खेत रहे । राठौड़ राम और गोइन्द टेसाणी । राठौड़ राम

राइसलजी र मु हडै वणियो अर रायसलजी रो घाव राम रै लागो। अवझड तिणि राम पडियो। अर गोइद टेमाणी खेडो नाखि अर वे हाथड तरवारि उतारि अर मदनै ऊपरि आइ अर कहियो केथ रे मदनो। ताहरा मदनो पूदाताणि पडियो पाछो ही ज विगर लोहडै लागै। ताहरा कुवरजी रे चीधडिये घाव वाहिया। घावे गोइद टेमाणी पडियो। बीजा ही घाव घणा ही वाहिया। अर वूकिया री वाचरी आइ रही। इमडो ही थको मु हडै मारि मारि करतो ऊठै अर पडै। वळे ऊठै ज्यु छाकियै रो परै। बीजो ही लोह आकरो पडियो। रायसलजी नू जैतु ग पडियै वरछी वाही। सु पाणी हडि आइ लागी सु रायसलजी काम आया। बीजा ही कुवरजी रा रजपूता रै घाव लागा।

का घाव रायमलजी के मुह पर लगा तथा रायमलजी का घाव राम के लगा। जार खाकर राम ढह पडा और गोइन्द टेमाणी ने ढाल छोड कर दोनों हाथों मे तलवार लेकर पूछा कि मदना कहां है? तब मदना नितब के बल वापिस ही बिना तलवार लगे ही गिर पडा। तब कु वरजी के आदमियों ने वार किये। गोइन्द टेमाणी घाव खाकर गिर पडा। दूसरे भी अनेक घाव किये। इसी प्रकार मुह से मार मार करता उठे और गिरे तथा उन्मत्त की तरह फिर गिरे व फिर उठे। दूसरे घाव भी तेज पडे। जैतु ग ने पडे पडे ही रायसलजी पर वरछी फेंकी जिससे रायमलजी काम आये। कु वरजी के दूसरे राजपूतों के भी घाव लगे। प्रिथीराज मालावत, ईसरदास रायपालोत, भाण नरवदोत

प्रिथीराज मालाउत रै घाव लागा । ईसरदास रायपालोत रै घाव लागो । भांण नरवदोत रै घाउ लागो । रूपसी भींदावत रै घाव, धंनै मोहिल रै घाव । वीजा ही घणां रजपूतां रै घाव लागा । अर रायसलजी रा रजपूत वि कांमि आया । वि रजपूत प्रिथीराजी रा कांमि आया । राठोड़ राम घड़सीयोत रै घाव लागौ । एक तीर हळवो सो चांदै रायसलोत रै लागो । वेढि जीपि अर कुंवरजी गांव पधारिया । गांव वाळि, मारि, लूंटि अर पाछा पधारिया । वीजै दिन गोसांईसर गांवि पधारिया ।

इसड़ै प्रस्तावि राजाजी कन्हां रामसिंघजी रो वास छूटो । सु रामसिंघजी अर अमरो कल्याणमलोत सीरोहां हुंता देस मांहे आया । ताहरां कुंवरजी रा परधांनां नूं

रूपसी भींदावत और धना मोहिल तथा दूसरे भी अनेक राजपूतों के घाव लगे । रायसलजी के दो राजपूत और दो प्रिथीराजजी के काम आये । राठौड़ राम घड़सीयोत के भी घाव लगा । हल्का सा एक तीर चांदा रायसंलोत के भी लगा । युद्ध जीत कर कुंवरजी गांव पधारे और गांव को जला कर तथा लूट मार कर वापिस आ गये । दूसरे दिन गोसांईसर आये ।

इस प्रस्ताव में रामसिंहजी राजाजी के पास से अलग हुये और अमरा कल्याणमलोत के साथ सिरोही से देश में आये । तब कुंवरजी के प्रधानों को इस बात की खबर हुई तो वे डर कर घबराने लगे और कुंवरजी को विना कहे ही 'नवसरिया' आ गये और वहां से

एथि खबरि हुई। ताहरा कुवर रा परधान वीहिया लच-पचाणा। कुवरजी नू अणकहियै ही ज कूच करि अर नवसरियै आया। नवसरियै हू आगै कल्याणपुर आया। पछै अमरै नू खबरि गाव मारिया री हुई जु गाव आज परभात मरियो। ताहरा रामसिघ नू कहियो जु मौनू सीख द्यो तो गाव जाइ अर घाइला रा घाव वाधू। मरतै जीवतै री खबर ल्यू। ताहरा रामसिघजी कहियो–तू एथ रहि, आपा गाव छाडिस्या ताहरा उथे सभाळ करिस्या। आपा राजाजी स्यू तोडणी नही छै। तिण ऊपरि कहाव माडियो रामसिघजी गाडा ऊट कुवरजी कन्हा मगाडि अर धरतो महा डोरो १ छोडियो नही। रामसिघजी गाडा नवहर ले जाइ राखिया। कुवर रिणी सिधाया। तिसडै मैं वासै सीरोही राजाजी कन्हा सुरताण प्रिथीराज पणि

कल्याणपुर चले आये। जब अमरा को गाव लूटने की खबर हुई और पता लगा कि आज सुबह ही गाव लूटा है तो उसने रामसिंहजी से कहा कि मुझे सीख दीजिये जिससे गाव जाकर घायलों की मरहम पट्टी करू और मरते जीते की खबर लू। इस पर रामसिंहजी ने कहा कि तुम यहीं रहो। अपने गाव छोड देंगे तभी सम्भाल करेंगे। अपने को राजाजी से नाता नही तोड़ना है। इस पर रामसिंहजी ने कुवरजी को कहला कर गाडिया और ऊट मगवाये और सब कुछ लाद कर गाडिया 'नौहर' ले गये। कुवरजी रिणी गये तो पीछे से सिरोही में राजाजी से नाराज होकर सुरताण और प्रिथीराज घर लौट आये। इस समय

विरस करि घरे आया । घरे आइ रहिया । तितरै राणैजी री दीकरी रामसिघजी री वहू नाम आंवां राम कहियो । तिण ऊपरि रामसिंघजी विरागिया । दाढी न सुवराड़ै । कपड़ा न धोवाड़ै । वागो न पहिरै । आरासि न करै । तिण ऊपरि ए ठाकुर सुरतांण प्रिथीराज वुलावंणी नूं रामसिंघजी कन्है आया । रामसिंघजी कन्है जाइ अर कहिया । पधारो ज्यूं म्हारा गाड़ा योत्राडि अर म्हां ही नू साथि ले आवो । उठै म्हांनूं कुंवरजी नींसरण नही दै । ताहरां रामसिंघजी कहियो—हूं नाऊं । थे धरती माहे अजाजती करि अर राजाजी नूं दुहविस्यौ । सु मैं राजाजी नू दूहवणा नहीं । जाइ अर थांहरा गाड़ा आफे योत्राड़ि अर ले आवौ । ताहरां उवै ठाकुर नावै । कहै म्हे अजाजती का नहीं करां । थे

राणाजी की लड़की रामसिंहजी की वहू "आंवां" का स्वर्गवास हो गया जिस पर रामसिंहजी को वैराग्य हो आया । उन्होंने न दाढी संवराई, न कपड़े धुलवाये, और न वागा पहना, न वनाव किया । इस पर सुरताण और प्रिथीराज रामसिंहजी के यहां वैठने गये और उनसे कहा कि आप पधार कर हमारी भी गाड़ियां जुतवा कर अपने साथ ले आओ । कुंवरजी हमें निकलने नहीं देते हैं । इस पर रामसिंहजी ने कहा कि मैं तो नहीं आऊंगा क्योंकि आप लोग राज्य में ज्यादतियां कर राजाजी को तकलीफ देंगे, जो मुझे मंजूर नहीं है । आप लोग जाओ और खुद ही अपनी गाड़ियां जुतवा कर ले आओ । इस पर उन ठाकुरों ने कहा कि हम कोई ज्यादती नहीं करेंगे, आप महारे साथ पधारो

म्हाहरै साथि पधारो ज्यू म्हे आवा। ताहरा रामसिघजी आया। एथि आया पछै प्रिथीराज प्रिथीराज रै घरे गयो वीभासरि। अर रामसिघजो नू एक रावटो करि दी जिम-सन्यासिया रो मढी हुवै तिम। सुरताणजो घडसीसर पधारिआ अर आपरै महले पधारिआ। इसडै रिणी कुवरजी हुता। ओथि खबरि हुई जु रामसिंघ, सुरताण, प्रिथीराज घरे आया। ताहरा कुवरजी रिणी हुता चढि मठवडी आइ डेरा किया। गोपालदास आसावत भगति की। उठा हुती डेरा घाघू पडिया। तठै कुवरजी पधारिया। ओथि पणि भगति जीमि अर देवराजसर नू खडिया। कंवासर थी आघा अर देवराजसर विचाळै तेथ एक घारोळो मेह रो आयो। तिणि इसडा गडा पडिया जिसडा आदमिया नू

ताकि हम आयें। इस पर रामसिंहजी आये और आने पर प्रिथीराज 'वींझासर' में अपने घर चले गये और रामसिंहजी के लिये सन्यासियों की मढी की तरह एक रावटी बनावी। सुरताणजी घडसीसर अपने महलों में चले गये। इधर कुंवरजी ने रिणी से चलकर 'मठवडी' आकर डेरा किया जहा गोपालदास आसावत ने मनुहार की। वहा से कुंवरजी 'घाघू' पधारे और और मनुहार जीम कर 'देवराजसर' की तरफ चले। 'कँवासर' से आगे और 'देवराजसर' के बीच में इतना जोर का मेह आया और इतने बड़े ओले पडे जिनसे आदमी मर जाय। लश्कर के लोग इनसे बहुत दुखी हुये। इस पर गोपलजी ऊंट पर से उतरे और कुंवरजी को अपनी गोद मे बिठा लिया और बीजा उनपर पयाम पचार

मरण प्राय। आदमी लसकर रा घणू दोहरा किया। ताहरां गोवलजी ऊभा ऊंठ ऊपरां उतरिया अर कुंवरजी नूं खोळै ले बैठा। अर विजो सकळात ऊपरा मोकळी करि अर ऊभो रहियो। तिसड़ै महेस सकताउत इयुं कहतो आयो जु कुंवरजी कठै ज्युं हूं कुंवरजी रा पावां आगै जाइ पड़ूं। सुं महेस इयुं कहि अर पावां आगै आइ पड़ियो। अर मदनो पातावत घोड़ै हुंता पड़ियो। जे पागड़ो तूटै नहीं तो मरै। इसड़ो मेह जे घड़ी २ वरसै अर गडा इसड़ा हीज पड़ंत तो लसकर रो ज्यान घणो ही करंत। मेह रहियो। ताहरां ऊंठां ऊपरि चढिया हीज गडा सेती वाटळा भरि भरि लिया। घोड़े चढ़िया हीज़ मारग महा असवारे वाटळा भरि भरि गडा सेती लिया। इसड़ा हीज गडां रा ढिग मारग माहे

कर खड़ा रहा। इस समय महेस सकतावत यह कहता हुआ आया कि कुंवरजी कहां है? मैं उनके पांवों के आगे जाकर पड़ूंगा—ऐसा कहकर महेस उनके पांवों में आ पड़ा। और मदना पातावत घोड़े से गिर पड़ा। यदि उसका पागड़ा नहीं टूटता तो शायद वह मर जाता। ऐसा मेह यदि दो घड़ी बरस जाता और ओले इसी प्रकार पड़ते तो लश्कर को वहुत अधिक नुकसान हो जाता। जब मेह बन्द हुआ तो लोगों ने ऊंट पर चढ़े चढ़े ही ओलों से अपने पात्र भरे। घुड़सवारों ने रास्ते में चलते चलते ही ओलों से पात्र भर लिये। मार्ग में इसी प्रकार ओलों के ढेर लग रहे थे। परमेश्वर की कुछ ऐसी ही वह घड़ी थी। वहां से चढ़कर 'कीतासर' पधारे। उस समय सुरताण और प्रिथीराज ने अपने

पडिया । परमेसर री का इसडी हीज घडी वूही । उठा चढि अर कीतासर पधारिया । ताहरा सुरताण प्रिथीराज आप रा भीतरवाडिया धरती रा जाटा वाणिया नू लाइ दिया । जाट वाणिया कन्हा ऊठ, वळद, वाहिण खोसि लिया । बीजो हो जि क्यू लहै सु खोसै । ताहरा रामसिघजी कहियो सुरताणजी नै प्रिथीराज नू ये मोनू सीख द्यो । जे राजाजी री धरती उजाडिस्यो तो मोनू विदा करो । जे धरती खोसो खू दो तो हू जाऊ । ताहरा सुरताणजी री वहू कहियो । रामसिघजी तो वैरागी हुआ । "सन्यासी हुआ छै सु धरनी नही उजाडै । म्हे तो ग्रामीपणो फिटो नही करा, जु ग्रामिया छा सु ग्रासीपणो करि जोवाडिस्या । तिसडै रामसिघजी पालिया बुरा करो छो जु

अधीन रहने वाले जाटों और बनियोंको दुख देना शुरू किया और उनके ऊंट, बैल और सवारी वगैरा छीन ली । दूसरा भी जो कुछ उन्हें मिलता वे छीन लेते । इस पर रामसिंहजी ने सुरताण और प्रिथीराज को कहा कि आप लोग राजाजी के राज में उजाड़ करते हैं इसलिये मुझे विदा करो । इस पर सुरताणजी की बहू बोली कि रामसिंहजी तो वैरागी हो गये हैं सो ये तो लूटखसोट नहीं करेंगे लेकिन हम तो ग्रासिये हैं सो अपना ग्रासपना नहीं छोड़ेंगे । इसपर रामसिंहजी ने मना किया और कहा कि आप राजाजी को दुख दे रहे हो सो यह ग्रासपना अब जल्दी छूटने वाला है । भाइयों को इस प्रकार कहकर उन्होंने विचार किया कि ये मेरा कहा नहीं करते हैं, इसलिये मैं इनके लिये प्राण दे दूं तो अच्छा

राजाजो नू दूहवौ छौ। अर ग्रासोपणौ करौ छौ सु छूडणहारा छौ। इयूं भाइयां नूं कहि परिण जारिणयो इयीं भाइयां रौ लियौ मरि छूटूं तौ भलौ। ए माहरौ कहियौ न करै। आगै आंवां रो दुख हुतो हो ज। ऊपरा भाई ए संचीत कियो। तिण वासतै मरीजै तो भला। ताहरां कुंवर श्री दळपत विचाळै परधान फेरिया। वीदो गुहिलोत, भारमल आसाइच, त्यांह नूं कहियो त्यूं करो ज्यूं दळपत कुंवर सेती वेढि हुवै। अै रामसिंघजी रा मेल्हिया परधांन कुंवरजी कन्है आया। इंया सेई जवाब किया जिण जवाबां कुंवरजी कीतासरा चढिया। मदनो अर मालदे अैही वेढि कराडण माहि। ताहरां उवां परधांनां नूं आकरा जवाब किया। करि अर सीख दी। कुंवरजी छोटड़ियै आढसर

हो। स्त्री का दुख तो पहले से ही था और ऊपर से यह भाइयों की चिन्ता हो गई इसलिये उन्होंने मरने का विचार किया। यह सोचकर उन्होंने कुंवर दलपतजी के पास प्रधान भेजे और वीदा गुहिलोत तथा भारमल आसाइच नामक प्रधानों को कहा कि ऐसा उपाय करो जिससे दलपत कुंवर से लड़ाई हो जाय। रामसिंहजी के भेजे हुये प्रधान कुंवरजी के पास आये और इन्होंने ऐसी बातें की जिनको सुनकर कुंवरजी कीतासर से चल पड़े। मदना और मालदे ये दोनों भी लड़ाई कराने के पक्ष में थे इसलिये उन्होंने भी प्रधानों से तेजी से बातचीत की और उन्हें विदा किया। कुंवरजी ने छोटे 'आहड़सर' आकर डेरा डाला। रामसिंहजी को जब इस बात का पता लगा तो सुरताणजी को

आइ डेरा किया। रामसिंघजी कुवरजी रा डेरा छोटडियै हुआ साभळि अर सुरताणजी नू विणकहियै ही ज वहिल मगाइ अर वहिल वैठा। ताहरा किसनदास भोजावत सुरताणजी रो चाकर साथि हुवौ। इतरा ठाकर रामसिंघजी रै साथि हुआ। राघवदास कल्याणमलोत, किसनदास भोजावत, परबत महेसोत, अचळदास सोनगिरो, केसव लूणावत, मालो अर सुरताण, सूजावत भाटी, मु हतो सिंघो, नरसिंघदास कोटडियो साकर ईदो, साकर रोमावले हाई भाई, जंतु ग वीदो, भानो, सादूळियो, वीठलो, दूदो घावड, पाल्हियो थोरी, वीजा ही सगडि दपेसं समेत सहि लावा भला आदमी साठि हेक उठा खडि अर राजडवाळै आइ ऊतरिया। कुवरजी रो चाकर मोटो मोहिल। कुवरजी जाहरा आहडसर पधारिया ताहरा मोटं गोवलजी नू कह्यौ माहरो लहणो राजडवाळै

बिना कहे ही बैली में बैठकर चल दिये। उस समय सुरताणजी का नौकर किशनदास भोजावत उनके साथ था। और भी बहुत से ठाकुर साथ थे। राघवदास कल्याणमलोत, किशनदास भोजावत, परबत महेसोत, अचलदास सोनगरा, केसव लूणावत, माला और सुरताण, सूजावत भाटी, मुहता सिन्धा, नरसिंहदास कोटडिया, साकर ईदा, साकर रोमावले हाई भाइ, जंतु ग वीदा, भाना, सादूला, वीठला, दूदा घायड़, पाल्हिया थोरी, और दूसरे ही भले आदमी लगभग साठ वहा से चलकर 'राजड्वाला' आ पहुँचे। कुंवरजी 'आहडसर' पधारे तो कुंवरजी के नौकर मोटे मोहिल ने, मोटे गोवलजी से कहा कि

चैतै कन्हे छै सु जे कुंवरजी कन्हां सीख दिराड़ो तो जाइ अर राजड़वाळै हुंता लहणो ले आऊं। ताहरां गोवलजी कुंअरजी सूं अरज करि अर सीख दिराड़ी। जिसड़ै मोटो राजड़वाळै गयो तिसड़ै परिया रामसिघजी पधारिया। ओथि आरोगण लागा। दाढी समराड़ी। वहू विश्रामी पछै तिण दिन दाढी समराड़ी। मोटो रामसिघजी तेड़ि अर आप कन्है जीमाड़ियौ। चेतो उठा दौड़ियौ सु कुंवरजी रै कटक मै वीदावतां नूं अर मदनै नूं अर मालदे नूं खबरि दीन्ही। जे रामसिघजी नूं भूंविस्यौ तौ आ वेळा नहीं लहौ, हिवड़ां हेकलो छै। पछै साथ भेळो हुसी। सुरतांण, प्रिथीराज, अमरो ए भेळा हुसी। भाटी मंडलो ही रामसिघजी

राजड़वाले में चेता से मेरा लहना है सो यदि आप कुंवरजी से मुझे सीख दिलाओ तो मैं राजड़वाले जाकर अपना लहना ले आऊं। इस पर गोवलजी ने कुंवरजी से अर्ज कर उसको सीख दिलवाई और मोटा राजड़वाले गया। उधर रामसिहजी वहां पधारे और वहां रहकर भोजन किया तथा दाढी वनवाई। स्त्री के मरने के वाद उन्होंने उसी दिन दाढ़ी वनवाई। मोटा को रामसिहजी ने अपने पास बुलवा कर भोजन करवाया। उधर चेता दौड़ा और कुंवरजी की फौज में वीदावतों और मदना तथा मालदे को खवर दी कि यदि रामसिहजी से लड़ना है तो इस समय वे अकेले हैं और ऐसा मौका फिर कभी नहीं आयेगा। वाद में और लोग इकट्ठे हो जायेंगे। सुरताण, प्रिथीराज और अमरा भी आ जायेंगे। भाटी मंडला भी शामिल हो जायगा जिससे

साथि भेलो हुसी। ताहरा वेढि सवळ होसी। किम जे था करणो तो आज करो। तै ऊपरि कुवरजी नू अणपूछियैं ही ज मदनै नै मालदे गोपालदास नगारो करायो। ताहरा चारणी एक दूहो कहियो।

रे वीदा रे काधिळा, मति हीणा मुणिसाह।
राम वहो छो राजवी, पणि येई वहिस्यो ताह ॥१॥

इसडी चारणी वाणी हुई। सु तिम ही ज मिली। उवेपणि रामसिंघजी रा मरणहारा नू पणि कुवरजी श्री दळपतजी पणि सिलह करि अर फौज मही करि खडिया। ताहरा इतरा रजपूत कुवरजी री फौज माहे हुता। वीको भाण कल्याणमलोत, नारायण वरसीओत, सागो मानाउत बीजा ही छोटा वीका, वीदावत गोपालदास सागाउत,

---

गुवानला तकड़ा होगा। इसलिये किसी न किसी प्रकार जो युद्ध करना है आज ही करो। इस पर कुवरजी को बिना पूछे ही मदना, मालदे और गोपालदास ने युद्ध के लिये कूच किया। उस समय एक चारणी ने एक दूहा कहा—

"रे बीदों और काधलो तुम्हें बुद्धहीन कहा जायगा। तुम आज रामसिंह को मार रहे हो लेकिन एक दिन तुम्हारी भी ऐसी ही गति होगी।' यह चारणी वाणी ठीक ही निकली। रामसिंहजी के मारने वालों पर कुवर श्री दलपतजी ने चढ़ाई की। उस समय कुवरजी की फौज में इतने राजपूत थे—बीका भाण कल्याणमलोत, नारायण वरसीओत, सागा मानावत और दूसरे ही छोटे बीका, बीदावत

राघवदास सांवळदासोत, रामसिंघजी सांकरोत, हरदास खींवकरणोत, मदनो पाताउत, कूंभो, केसवदास, गोपालदास रा दीकरा, करमचन्द भांनीदासोत, चांदो रायसलोत, बीजा ही घणोरा सहि हुता, कांधिळौत, गोपालदास रावतोत, राइसिंघ किसनदासोत, मालदे वणवीरोत, महेस, हरदास वणवीरोत, देदो अचळाउत, बीजा छोटा सा चींधड़िया, मेहा जळपाताउत, भांनो पाताउत, महेस सकतावत, गोगादे सांखळो । तियां रा च्यारि अणी किया अर बीका अर चींधड़िया जीवणौ अणी किया । फौज करि अर मुंहडै आगै तोपची करि अर हालिया । वैजार रै रिण जाहरां आया कोस एक राजलवाड़ै हुंता ताहरां सांमुही झांक आई। ताहरां ओथि घोड़ा ठांमिया । ओथि राघवदास संजोह पहिरियो

गोपालदास, सांगावत राघवदास सांवलदासोत, रामसिंह सांकरोत, हरदास खींवकरणोत, मदना पातावत, कुम्भा, केसवदास, गोपालदास के लड़के, करमचन्द भानीदासोत, चांदा रायसलोत और दूसरे भी बहुत से थे। कांधलोत गोपालदास रावतोत, रामसिंह किसनदासोत, मालदे वणवीरोत, महेस, हरदास वणवीरोत, देदा अचलावत, दूसरे छोटे राजपूत, मेहा जलपातावत, भाना पातावत, महेस सक्तावत, और गोगादे सांखला। इनकी चार फौजें बनाई। बीकों और छोटे राजपूतों की दाहिनी फौज की गई जो अपने आगे तोपची लेकर चली। राजलवाड़े से एक कोस दूर जब 'वैजार' के उजाड़ में आये तो सामने से आंधी आई जिससे वहां घोड़े थमाये। वहां राघवदास ने कवच

हुतो श्रर श्रफीण खाधो हुतो ताहरा तलछर ऊपर छाल विहु हुई। तैरा लिया ही वीदावत ऊभा रहिया। ताहरा मालदे घणो श्रहचौ कियो। मालदे रो दीकरो राव कल्याणमल जीवता रामसिंघजी मारियो हुतो सु उण खुणसं लियं मालदे घणो श्रहचौ करै। श्रठै गोवलजी राजाजी हू पणि वीहता। मुहतं ही हू वीहतो। लोका हुती पणि वीहतै लोक री नदर टाळि श्रर गोवलजी कुवरजी सेती श्ररज की जु काको थारो मरै छै श्रर पछै ही दूहविसि। ताहरा गोवलजी नू कुवरजी कहियो बाबा हू किमू करू। ताहरा इयू गोवलजी कहियो थे रामसिंघजी रो मरण टाळो। श्राज रो काको काढो। कां साथ भेळो करो। ताहरा इया ठाकुरा नू कुवरजी कहायो।

पहिले रत्ता था श्रौर श्रफीम खाया हुश्रा था, तब टो कय हुई। इसी कारण वीदावत खड़े रहे। तब मालदे ने बड़ी शीघ्रता की। राव कल्याणमल के जीते समय रामसिंहजी ने मालदे के लड़के को मारा था इसलिये उस तीव्र के कारण मालदे बड़ी जल्दी कर रहा था। इधर गोवलजी राजाजी से श्रौर मुहता से डरते थे सो उन्होंने लोगों से डरते हुये नजर बचाकर कुंवरजी से श्रर्ज की कि श्रापका काका मर रहा है सो बाद में श्रापको दुःख होगा। इस पर कुंवरजी ने कहा–बाबा मैं क्या करू ? तब गोवलजी ने कहा कि रामसिंहजी को मौत से बचाश्रो श्रौर या तो इन्हें यहाँ दूर निकालो या साथ रक्खो। तब कुंवरजी ने

भाणजी, नारांयण वैरसीयोत, मेहा जळपाताउत नैं कहियो थे रामसिंघजी नूं काढो। कां पाछो उतारो। का मोनूं ही पाछो उतारो। पिण रामसिंघजी रो मरण टाळो। कुंवरजी इयां ठाकुरां नूं कहियो। ताहरां नारांयण वयर-सीयौत कहियौ म्हे राजाजी हुंता वीहां। मुंहता हुंता पिण वीहा सु म्हे न कहीं नूं काढां न किण ही भेळा हुवां। थांहरी छै ज्यूं थां दाइ आवै त्यूं करी। मारी भावै राखौ। ताहरां इतरै ऊपरि गोपालदास, मालदे, मदनै आंहचो करि आघा खड़िया। कुंवरजी नान्हां हुता पिण जरूर पड़ियो ताहरां खड़िया। आगै रामसिंघजी नूं खबरि हुई। ताहरां गांव माहे चोखा अर दही अरोगि अर कोहर पधारिया। वहिल परिण कोहरि छूटी हुती। खेजड़ी नीचै कोहरि ओ ही ज

भाणजी, नारायण बैरसियोत और मेहा जलपातावत इन ठाकुरों को कहलवाया कि रामसिंहजी को बचाओ या वापिस भेजो, अथवा मुझे ही वापस भेजकर रामसिंहजी की मृत्यु टालो। इस पर नारायण वयरसियोत ने कहा कि हम तो राजाजी और मुहता से डरते हैं सो हम न तो किसी को निकालें और न किसी के शामिल हों। आपके हैं सो आपके जंचे सो करो, मारो या रक्खो। इस बात पर गोपालदास, मदना और मालदे शीघ्रता कर आगे चल पड़े। कुंवरजी थे तो छोटे ही लेकिन जरूरत पड़ने पर वे भी आगे चले। रामसिंहजी को जब इस बात की खबर हुई तो वे दही और चावल खाकर कुए के पास पधारे। बैली भी कूए के पास छूटी हुई थी। खेजड़ी के नीचे कुआ था वहीं

डेरो रामसिंघजी रो। खेळि कोहर री पूठि वासै दे अर इया रै आगै आइ ऊभा रहिया। जाहरा खवरि हुई कुवरजी पधारै ताहरा मोटै मोहिल नू रामसिंघजी कहियो तू कुवरजी रो रजपूत सु तो कुवरजी कन्है जाह। ताहरा मोटै जवाव कियो जु कुवरजी रै साथि रजपूत हजार च्यारि पाच घोडो छै जु एक हू गयो तो कीसू न गयो तो कीसू तो पणि क्यू नही। अर या कन्है रजपूत थोडा २० कै २५ अर राजि मरणै सू। तैंहू राजि रै पासै रहोस। रावळो पातळ जीमी। इयू कहि अर मोटो रामसिंघ ही ज रै पासै रहियो। पचाइण गुहिलोत वनावत इयै ही नू कहियो तू कुवरजी रो रजपूत परधान आयो हुतो सु तू कुवरजी

रामसिंहजी का डेरा था। कुए की खेली पीठ पीछे रखकर इनके सामने आकर खड़े हो गये। जब कुवरजी के पधारने की खबर हुई तो रामसिंहजी ने मोटे मोहिल को कहा कि तुम कुवरजी के राजपूत हो सो वहीं जाओ। इस पर मोटे ने जवाब दिया कि कुवरजी के साथ चार पाच हजार राजपूत और घोड़े हैं सो मेरे एक के जाने न जाने से क्या फर्क पडेगा, और इधर आपके पास थोडे से बीस पच्चीस राजपूत हैं इसलिये मरने के समय मैं आप ही के पास रहूँगा क्योंकि मैंने आपके साथ भोजन किया है। ऐसा कहकर मोटा रामसिंहजी के पास ही रह गया। पंचायण गुहिलोत वनावत को भी उन्होंने कहा कि, कुवरजी के राजपूत हो सो वहीं जाओ। पर उसने भी जाने से

कन्है जाह । ताहरां तिणि कहियो हूं परिण न जाऊं । म्हारै ही चक्र दियो । ताहरां आप रामसिंघजी चक्र आप रै हाथ दिया । आप रै दिया हुता तिम ही ज उण ही रै दिया । सु परिण रामसिंघजी कन्है रहियो । सातल कलावत हुतो तिण ही नूं कहियो तूं ही जाह । ताहरां तिण ही कहियो राजि हूं पिण राजि कन्है रहीस । सातल परिण चक्र दिराड़ि अर रामसिंघजी कन्है रहियो । इसड़ै सै कुंवरजी रो साथ तोपची मुंहडै करि अर आघो आयो । गोळी छूटण लागी । ताहरां एक गोळी अचळदास रामसिंघजी आडो खैड़ो दियो हुतो सु खैड़े महा होइ अर अचळदास रै हाथ लागी । ताहरां रामसिंघजी कहियो हिव गोळीये मराड़ो नां । अर खेड़ो नांखो परहो अर भिळो । ताहरां अचळदास खेड़ो नाखियो ।

मना किया और कहा कि मेरे भी चक्र दीजिये । इस पर रामसिंहजी ने जिस प्रकार अपने दिये उसी प्रकार अपने हाथ से उसके चक्र दिये । इस पर वह रामसिंहजी के पास ही रहा । सातल कलावत को भी उन्होंने जाने के लिये कहा लेकिन उसने रामसिंहजी के पास रहने की इच्छा प्रकट की और वह भी चक्र दिलवाकर वहीं रहा । इतने में कुंवरजी की फौज तोपची लिये आ पहुँची । गोलियां छूटने लगी और अचलदास व रामसिंहजी आगे आड किये खड़े थे जिसमें से पार होकर एक गोली अचलदास के हाथ में जा लगी । इस पर रामसिंहजी ने कहा कि अब गोलियां क्यों मरवाते हो, आड़ दूर करो और जा भिड़ो । इस पर अचलदास ने आड़ अलग करदी । उस समय सातल

ओथि सातल कलावत राठौड ऊठ चढि अर नांठो। मु कु वरजी पिण दीठो। अर पचाइण परधान जु नाठो सु कु वरजी रै लसकर माहे कटक माहि आपणो आपणो करि छूटो। रामसिघजी इसडै ताव सेती आइ अर लोहे भिळिया जिम मू डो हिरण आयतो आवै छै त्यू फोगा माहे कूदता आइ भिळिया। ताहरा हेकै रजपूत नू भुवाळा हू झालि झोकि करि नीचो नाखियो। उण नू घाव किया। सु ओ रजपूत जोसणियो हुतो अर रामसिघजी उघाडै घट हुता, ऊपरा घाव लागा। ओथि रामसिघजी सवत् १६३४ आसाढ सुदि १५ वैकु ठ सिधाया। साथि इतरा रजपूत कामि आया— राघवदास कल्याणमलोत, किसनदास भोजावत, चादो महेसोत। अचळदासजी नू निवळो सो घाव हुतो अर ऊभो

कलावत राठौड ऊँट पर चढकर भागने लगा जिसे कु वरजी ने देख लिया। पचायण प्रधान भी भागा लेकिन कु वरजी की फौज मे अपना ही है ऐसा कहा जाकर छूट गया। और रामसिंहजी जैसे बिना सींग वाला हरिन कूदता हुआ आता है, उसी प्रकार फोगों में से कूदते हुये आकर भिडे और एक राजपूत को बाल पकड कर नीचे गिरा लिया और उस पर घाव किये। यह राजपूत कवच पहिने हुए था और रामसिंहजी नगे शरीर थे इसलिये उनके घाव लगे और यहीं सम्वत १६३४ की आषाढ सुदी पूर्णिमा को बैकुण्ठ सिधाये। उनके साथ इतने राजपूत काम आये—राघवदास कल्याणमलोत, किसनदास भोजावत और चादा महेसोत। अचलदासजी को मामूली घाव लगा था जिससे वे खड़े थे,

हुतो, वीदांवतां रो दोहीत हुतो सु उवां ऊगरै ऊगरै, अचळदास ऊगरै, इम कहि अर अचळदास सोनगिरो इम उगारियो। मोटै पहिलो हीज कुंवारी आहडिण भेळो, जिम मूंडो त्रायतो आवै तिम आइ भिळि अर मूंयो। सादूळियो पणि वरस ११।१२ रो हुतो सु पणि रामसिंघजी रै साथि घाए भिळियो हुतो तितरै पड़ियौ। पड़ि अर वळे वैठो हुयो ताहरां मदनै कहियो जु मारो मारो। ताहरां मारियो। कहियै रखे ऊगरै। केसव लूणावत कांमि आयां। रामदास नाई मुहडांणी कांमि आयो। पांचो वाघोड़ घाए पड़ियो। पछै कुंवरजी उवां रा घाव पडींगाया, पाटा वांधाया, सारा कराड़िया। मालो अर सुरतांण सूजावत भाटी कांमि आयो। नरसिंघदास कोटडियो कांमि आयो।

और वीदावतों के दोहित्र थे इसलिए उन्होंने—वच गया वच गया ऐसा कहकर अचलदास सोनगरा को वचा लिया। मोटा पहले ही विना सींग वाला हिरन जैसे कूदता हुआ आता है वैसे सर्वप्रथम फौज से भिड़ कर मर गया। सादूला ११ वारह वर्ष का था सो वह भी रामसिंहजी के साथ घायल होकर गिर पड़ा। गिर कर फिर वैठा हुआ तो मदना ने—मारो मारो-कहकर मार डाला। कहा रखने से वचता है। केसव लूणावत और रामदास नाई सुहडाणी भी काम आये। पांचा वाघोड़ घायल होकर गिर पड़ा। इसके वाद कुंवरजी ने उनके घावों पर पट्टियां वंधवाई तथा यत्न करवाये। माला और सुरताण सूजावत भाटी, नरसिंहदास कोटड़िया,

साकर ईदो काम आयो । भानो जैतु ग कामि आयो । साकर रोमावल हाई भाई तिणि कु वारी आहडण भेळि अर कामि आयो । साकर रामसिंघजी नू पधारता नू कहियो, राज नदरि दौलति भानौ भूखै लोहि जाइ भिळियो अर कामि आयो । वीदो ही कामि आयो । वीठलो अर दूदो धावड नासि अर गाव माहे कोठिया माहे छिपिया । अर पाल्हियो थोरी रूडा विढि अर कामि आयो । उठा कु वरजी जेथि रामसिंघजी री वहिल हुती तेथि पधारिया । ताहरा वीदावते अर काधिळोते कहियो जु हिवै काची व्याधि तोडो परी । पछै प्रिथीराज, सुरताण, अमरो अर रामसिंघजी रो सहु साथ भेळो हुसी । अमरो मडळो ले आवै छै । ताहरा मुसिकल होइसि । ताहरा कु वरजी

साकर ईदा और भाना व जैतु ग भी काम आये । साकर रोमावल हाई-भाई भी सर्वप्रथम लडकर काम आया । साकर ने रामसिंहजी को पधारते समय कहा कि हुजूर भाना भूखे शस्त्रों से जा भिडा और मर गया । वीदा भी काम आया । वीटला तथा ईदा धावड भाग कर गाव में कोठियों में जा छिपे तथा पाल्हिया थोरी भली प्रकार लड कर काम आया । यहा से कु वरजी जहा रामसिंहजी की वैली थी वहा पधारे । तब वीदावतों और काधलोतों ने कहा कि इस कच्ची व्याधि को ही खत्म कर डालो । बाद मे प्रिथीराज, सुरताण, अमरा और रामसिंहजी का सारा साथ इकट्ठा हो जायेगा । अमरा मडला को ले आयेगा

खीजतां ही ज कहियो थे म्हारा ही ज काकां नूं मारो अर थांहरै तो कहीं नूं मारो नहीं। सु रामसिंघजी मारियो सु ही रूड़ा नहीं कियो, हूं नावूं। अर जे थे जावो तो जावो। ताहरां मुंहडो विसावो करि अर रहिया। ताहरां कुंवर सुरतांणजी नूं प्रिथीराजजी नूं कहाडियो जु गाडा थे वाहिर करो। ताहरां गाडा योत्राड़ि अर नवहर गया।

कुंवरजी असवार होइ लसकर साथि ले अर गडगचियै सिधाया। गडगचियै हुंता इल्गार करि अर वीकानेर सिधाया। कितरा हेक दिन गया ताहरां सुरताण, प्रिथीराज, अमरै इयां ठाकुरे जाट जोइया भटनेर रा साथ भेळा करि अर देस मारियो। वीकानेर री धरती मारि अर पाछा

तो मुश्किल होगी। तब कुंवरजी ने क्रोध में आकर कहा कि आप लोगों ने मेरे काका को तो मार दिया है, लेकिन अपने किसी सम्बन्धी को नहीं मारा, और रामसिंहजी को मार कर आपने अच्छा नहीं किया है, इसलिये मैं सापके साथ नहीं आऊंगा। यदि आप लोगों को जाना हो तो जाओ—ऐसा कहकर वे क्रोधित होकर रह गये। इसके बाद कुंवरजी ने सुरताण और प्रिथीराज को कहलाया कि आप लोग अपनी गाड़ियां वाहर ले जायें। इस पर वे गाड़ियां जोड़ कर नोहर चले गये।

कुंवरजी लश्कर के साथ सवार होकर गडगचिया गये जहां से कूच कर वे बीकानेर पधारे। कई दिनों बाद सुरताण, प्रिथीराज और

घिरि गया। हाथ तो क्यू ही आयो नहीं। लोक आघा पाछा होइ गया। आपरा ही ज घोडा रजपूत मराडि गया। ताहरा कुवर श्री दळपतजी इया रो कियो धरती रो उजाड साभळि अर बीकानेर रा कटक करि अर खडिया। आइ अर देराजसरियै ग्रामि आइ ऊतरिया। ताहरा सुरताण, प्रिथीराज जाणियो जु हिवै धरती रो उजाड करिस्या तो भला नहीं दीसा। ताहरा उठा हुती पाछा जाइ अर पातसाहजी कन्है जाइ पुकारिया। ताहरा पातिसाहजी भोपतजी नू कहाडियो। कुवर दळपत नू देख्या-बहुत दिन हुया छै। कितनै कि मान हुआ छै। बेगा तेडावो। ताहरा भोपतजी राजाजी नू कहाडियो जु पातिसाहजी कुवर

अमरा इन ठाकुरों ने भटनेर के जाटों और जोइयों को इकट्ठा कर देश को लूटा। बीकानेर के राज्य में वे लूट कर वापिस चले गये। उनके हाथ तो कुछ आया नहीं क्योंकि लोग इधर उधर हो गये थे लेकिन अपने ही घोडे और राजपूत मरवा गये। इस पर कुवरजी श्री दलपतजी ने इनके द्वारा किये गये उजाड की बात सुन कर बीकानेर से फौज लेकर कूच किया। देराजसरिया गाव मे आकर डेरा किया। तब सुरताण और प्रिथीराज ने विचार किया कि अब उजाड करेंगे तो ठीक नहीं लगेगा। तब वहा से लौटकर उन्होंने बादशाह के सामने जाकर पुकार की। इस पर बादशाह ने भोपतजी को कहलाया कि कुवर दलपतजी को देखे बहुत दिन हो गए हैं। वह कितना बड़ा हो गया है ? उसे जल्दी बुलाओ। तब भोपतजी

श्री दळपतजी नूं तेड़ावै छै। ताहरां राजाजी हुकम कियो। नाई रायमल अर वणवीर मुगोलाणी मेल्हिया तेड़ा आया। दोराजसर उठा कुंवरजी खड़िया। पातिसाहजी मलवै हुइ, सीकरी फतेपुर थी हुइ अर अजमेर हुइ अर महरोट पधारिया। ताहरां कुंवर श्री दळपतजी पातिसाह रै पाए लागा। घणी दिलासा पातिसाहजी की। पांभड़ियां रो जोड़ो हेक, सिरपाव घोड़ो इनात कियो। ओथि पातिसाहजी रूपसीजी रै जोमि अर आधा खड़िया। जाहरां अमरसर पधारिया ताहरां कुंवर श्री भोपतजी कुंवर श्री दळपतजी नूं पाछी विदा दिराड़ी वीवाह रै वासतै। एथि आइ अर वीवाह कियो। पांचवतै रूपसीजी रै उठा परणोजि अर खड़िया ताहरा रांमदास चहुवाण रै परणिया। रूपसी रै

ने राजाजी को कहलाया कि बादशाह कुंवर दलपतजी को बुला रहे हैं। इस पर राजाजी ने हुक्म दिया और नाई रायमल तथा वणवीर मुगोलाणी लिवाने आये। कुंवरजी देराजसर से चले। बादशाह मालवा, सीकरी फतेहपुर और अजमेर होते हुये महरोट पधारे। वहां कुंवर दलपतजी बादशाह के पांव पड़े और बादशाह ने उनको बहुत दिलासा दी तथा एक जोड़ा जूती, सिरोपाव तथा घोड़ा प्रदान किया। यहां बादशाह रूपसीजी के यहां भोजन कर आगे चल दिये। जब अमरसर पधारे तो कुंवर भोपतजी ने कुंवर दलपतजी को विवाह के लिए विदा दिलवाई। यहां आकर विवाह किया। रूपसीजी के यहां से विवाह करके चले और रामदास चौहान के यहां विवाह

परणिया पछै दिनै १५ रे ताहरा रामदास रै भदीणि परणिया। उठा परणीजि अर खडिया। पछै पातिसाहजी नू आइ आपडिया। रैवाडी री आगिली मजल आइ पाए लागा। उठा पातिसाहजी दिली आइ पहुता। उठा दिली हुता महिम माहि करि, रुस्तक आह्ला माहि करि अर पधारिया हासी। ओथि लसकर सहु राखियो। सेख मुहमद रै महिमानी खाधी। महिमानी अरोगि अर आप सिकार खेलता हिसार पधारिया। उठै महरलीखान रै महिमानी खाधी। उठा कूच करि अर वळे लसकर भेळा हुआ। उठा हुता सेखाणै नू खडिया। कैथल जीवणै हाथि मेल्हियो अर पधारिया। पाइल हुता कूच करि तिहाडै पधारिया। मजल एक तिहाडो आइ रहियो हुतो ताहरा

किया। रूपसी के यहा विवाह करने के १५ दिन बाद 'भदीण' मे रामदास के यहा विवाह किया और फिर चलकर पुन बादशाह के पास पहुँचे। रेवाडी से अगली मजल पर जाकर पाव पडे। बादशाह दिल्ली आ पहुँचे और दिल्ली से महिम, रुस्तक, नाह्ला होते हुए हासी पधारे—जहा सारे लश्कर का डेरा करवाया। शेख मोहम्मद के मेहमान बने और भोजन कर शिकार खेलते हुए हिसार पधारे जहा मेहरली खान के मेहमान बनकर भोजन किया। वहा से कूच कर फिर लश्कर मे मिले। वहा से सेखाणा की तरफ चले और कैथल को दाहिनी तरफ छोड़ते हुये पाइली पधारे। पाइली से कूच कर तिहाडा पधारे। तिहाडा एक मजल और रह गया था और कूच होने को था तभी कुंवर

कूच हुवै हुतो ताहरां कुंवर श्री भोपतजी अर कुंवर श्री दळपतजी पातिसाह रै दरबार सिधाया। आगै कछवाहो खिंगार जगमालोत, कछवाहो रायसल सूजावत, कछवाहो रांमदास ऊदावत अै बैठा हुता दरीखांनै मांहै। उठै कुंवर श्री भोपतजी अर कुंवर श्री दळपतजी पातिसाह रै दरबार सिधाया। आगै कछवाहो खिंगार जगमालोत कछवाहो दरबार पधारि बैठा। ताहरां कुंवर श्री भोपतजी कुंवर श्री दळपतजी नूं कहियो जु म्हारो पेट दूखै छै। ताहरां कुंवर श्री दळपतजी कुंवर श्री भोपतजी नूं कहियो, इसड़ो पेट दूखै हुतो तो दरबार की पधारिया, उठै ही ज कहियो की नहीं। ताहरां कुंवर श्री भोपतजी कहियो भाभा मैं बीहतै राजाजी रै महसलां

भोपतजी और कुंवर दलपतजी बादशाह के दरबार में पधारे। उस समय कछवाहा खिंगार जगमालोत, कछवाहा रायसल सूजावत और कछवाहा रामदास ऊदावत दरीखाने में बैठे थे। तब कुंवर भोपतजी और दलपतजी बादशाह के दरबार में गये। इसके बाद कछवाहा खिंगार जगमालोत भी दरबार में आकर बैठा। तब कुंवर भोपतजी ने कुंवर दलपतजी को कहा कि मेरा पेट दुखता है। इस पर कुंवर दलपतजी ने कुंवर भोपतजी को कहा कि ऐसा पेट दुखता था तो आप दरबार में क्यों पधारे, वहीं क्यों नहीं कह दिया? इस पर कुंवर भोपतजी ने कहा कि भाई साहब मैंने राजाजी के सलाहकारों से डरते हुए कहा नहीं। इस पर कुंवर श्री दलपतजी ने

हू कहियो नही । *ताहरा कुंवर श्री दळपतजी कहियो उठै हरामखोर झख मारै छै। उवा नूं सजा दियो । अजे ही डेरै पधारो। ताहरा कहियो पातिसाहजी री पणि असवार हुवण री बेळा हुई छै। हिवै मुजरो करि अर जाइस्या। पातिसाहजी पणि असवार होइसी । ताहरा उवा नूं कहियो । रामदास, खिंगार, रायसल्ल नू कहियो जु कुंवर श्री भोपतजी रो पेट दूखै छै । उवा पणि कहियो कुंवरजी पधारो डेरै पेट पीडावै छै। ताहरा कुंवर भोपतजी कहियो मुजरो करि अर जाइस्या। तिसडै पातिसाहजी पधारिया। पातिसाह रो मुजरो करि अर वेवै भाई कुंवर असवार होइ अर डेरै पधारिया। डेरै पधारि अर राजाजी रा आदमिया नू कहियो जु कुंवर श्री भोपतजी रो पेट दूखै छै। ताहरा कुंवरजी को भी नही पातिसाहजी रै साथि

कहा कि यहां हरामखोर झख मारते हैं उनको सजा दो और अभी डेरे पधारो । इसके बाद कहा कि बादशाह की सवारी का समय हो गया है इसलिये मुजरा करके चलेंगे। बादशाह भी सवार होंगे। इसके बाद उन्होंने रामदास, खिंगार, रायसल को कहा कि कुंवर भोपतजी का पेट दुखता है । तब उन्होंने भी कुंवरजी से कहा कि आपका पेट दुखता है इसलिये डेरे पधारें। लेकिन भोपतजी ने जवाब दिया कि मुजरा करके ही चलेंगे। इतने में बादशाह पधार गये और दोनों भाई भी मुजरा कर सवार होकर डेरे पर आ गये। डेरे आकर उन्होंने राजाजी के आदमियों से कहा कि कुंवर भोपतजी का पेट दुखता है।

पधारो। ताहरां कहियो कूटणां भोपतजी रो पेट दूखै छै सु पातिसाह साथि केथि पधारै। ताहरां पासै पासै खड़ि अर बीजै डेरै पधारिया। ओथि आथमण तेल अर जाइफळ री मर्दन कीधी अर सेक कराड़ियो। ताहरां माधवसिंह अर सूरिजसिंघ बोलावण नूं आया हुंता ताहरां उवां कहियो थां वुरा कियो जु तेल अर जाइफळ री मर्दन की अर सेक कराड़ियो। ताहरां उवै ठाकुर वाहुड़िया उठा कूच कियो। अर कुंवर श्री भोपतजी नूं सीतळा रो दरसाव हुओ ताहरां कुंवर श्री दळपतजी पातिसाहजी आगै अरज की—पातिसाह सलांमत भोपत नूं सीतळा दरसाव कियो छै। ताहरां पातिसाहजी कहियो खुदाइ पनाह दियै। एथि

इस पर उन्होंने कहा कि कुंवरजी को कोई डर नहीं बादशाह के साथ पधारें। इस पर उन्होंने कहा—कुट्टनों, भोपतजी का पेट दुखता है तो बादशाह के साथ कैसे पधारें। इसके बाद वे साथ साथ चलकर दूसरे डेरे पधारे जहां शाम को तेल और जायफल की मालिश की और सेक करवाया। तब माधोसिंह और सूरतसिंह तबियत पूछने के लिये आये और उन्होंने कहा कि आपने तेल और जायफल की मालिश करवा कर बुरा काम किया। इसके बाद वे दोनों ठाकुर वहां से लौट गये। तब कुंवर भोपतजी को शीतला का दरसाव हुआ जिसके बारे में कुंवर दलपतजी ने बादशाह को अर्ज की कि बादशाह सलामत, भोपत को शीतला का दरसाव हुआ है। तब बादशाह ने कहा कि खुदा उसकी रक्षा करे उसे यहां 'त्रिहाड़े' में रक्खो। इस पर उन्हें

त्रिहाडै माहे राखो भोपति नू। ताहरा त्रिहाडै राखिया। अर ताहरा भोपतिजी रै हिरणा री लडाई री मिसल रा हिरणा री वारो। ऊठा भोपतजी रै चाकरा आप रै वासतै भोपतजी नू वरवाडै सईदा रै राखिया हुता। उवा जागीरी राजाजी नू हुती तेथि भोपतजी राखिया हुता। सु पातिसाहजी ओळभा दिया हुता जु भोपतिजी हिरणा की लडाई हुती वीचि हाजिर न हूया। उवा भोपितजी नू सरम हुती सु जाहरा त्रिहाडै राखिया ताहरा पातिसाहजी कहिया हुता जाहरा भोपति समाधियो हुवै ताहरा बेवे भाई हेकठा होइ अर आया। ताहरा कु वर श्री दळपतजी रा चाकर दळपति नू भोपति कन्है रहण दियै नहीं। कहै थे हालो जाहरा भोपतिजी समाधियो होइसी ताहरा पधारसी। ताहरा

त्रिहाडे मे रक्खा और उस समय हिरणों की लड़ाई में भोपतजी के हिरणों की वारी थी लेकिन भोपतजी के नौकरों ने अपने स्वार्थ के लिये उन्हें वरवाडे मे सैयदों के यहा टिका दिया था जो राजाजी की जागीर में था। इस पर बादशाह ने उलाहना दिया कि भोपत हिरणों की लडाई में क्यों नहीं हाजिर हुआ। भोपतजी को उस बात की शर्म थी। जब त्रिहाडे में रक्खा तो बादशाह ने कहा कि जब भोपत स्वस्थ हो जाये तो दोनों भाई इकट्ठे ही आना। लेकिन कु वर दलपतजी के नौकर उन्हें कु वर भोपतजी के पास नहीं रहने देते थे। उन्होंने कहा कि जब भोपतजी स्वस्थ हो जाय तब आकर मिल लेना। इस पर उन्होंने भोपतजी से विदा मागी जो उन्होंने दी

भोपतिजी [सूं] सीख पूछी। ताहरां भोपतिजी सीख दी। कहियो भाई थे पातिसाहजी कन्है पधारो। जिसड़ै विदा करण लागा ताहरां गळै लागि मिलि अर कहियो भाई दिन ४ मो कन्है रहो। ताहरां कहियो कुंवर दळपतजी ज्यूं राजि फरमाइसै त्यूं करिसि। ताहरां कहियो गोवलजी मो कन्है राखो। ताहरां गोवलजी आप कन्है राखिया। कुंवरजी नू कुंवरजी रा रजपूत ले नै चढिया। भोपतजी कन्है भोपतजी रा चाकर रहिया। अमरो भाटी, रायसल वीजावत, अखयराज सांखळो, रायसिंघ देवीदासोत, पहोड़ ऊदो, प्रिथीराज मुंहतो, अचळो मुंहतो, लखमण नाई राजाजी रो खवास, तेजो वाघोड़, लखमण आगै थको बुगचो राखतो, नारायण पडिहार, रूपो गुजराती, सीहलो गुजराती,

---

और कहा कि भाई आप बादशाह के पास पधारो। जब विदा करने लगे तो गले लगा कर मिले और कहा कि भाई चार दिन तक मेरे पास रहो। इस पर दलपतजी ने कहा कि आप जैसा फरमायेंगे वैसा ही करूंगा। तब उन्होंने कहा कि गोवलजी को मेरे पास छोड़ दें। ऐसा कह कर गोवलजी को अपने पास रक्खा और कुंवरजी के राजपूत कुंवरजी को लेकर चले गये। भोपतजी के पास भोपतजी के नौकर रहे—अमरा भाटी, रायसल वीजावत, अखैराज सांखला, रामसिंह देवीदासोत, पहोड़ ऊदा, प्रिथीराज मुहता, अचला मुहता, राजाजी का नाई लखमण और तेजा वाघोड़। लखमण पहले बुगचा (थैला) रखता था। नारायण पड़िहार, रूपा गुजराती, सीहला गुजराती, जो

फरासखानो करतो, ईसर साहणी—इतरा भोपतजी रा आदमी भोपतजी कन्है राखिया। कुंवर श्री दळपतजी रै साथि बिजो गुहिलोत, मदनो पाताउत, करमचंद भानीदासोत, महेस साखळो, मोघो मुगलाणी, सदारंग मुंहतो, वीजा ही चीवडिया घणा ही हुता।

उठा कुंवर श्री दळपतजी खडि अर पातिसाहजी रै साथि भेळा हुआ। पातिसाहजी महमदोट मा करि, ईसपाणी कोटडी माहि करि, हेतम माहे करि अर भाटी इबराहम रीं तलुंडी जाइ डेरा हुया। महले पाचे-साते उठा हुती इबराहम रो तलुंडी हुती तिण हुता कोस १॥ दोढ हेकै डेरा पडिया। ओथि कुंवरजी पधारै हुता चढिया तठै सुरताण, प्रिथीराज, अमरो, गोपाळदास औ च्यारे दीठा अर

फर्राश का काम करता था, तथा ईसर साहनी—इतने भोपतजी के आदमी उनके पास रहे। कुंवर दलपतजी के साथ बीजा गुहिलोत, मदना पातावत, करमचन्द भानीदासोत, महेस सांखला, मोघा मुगलाणी, सदारंग मुहता और दूसरे ही बहुत से राजपूत थे। वहां से चल कर कुंवर श्री दलपतजी बादशाह के साथ आ मिले। बादशाह ने महमदोट, ईसपाणी, कोटडी तथा हेतम होते हुये भाटी इब्राहिम की तलुंडी (?) जाकर डेरा डाला। वहां से पांच सात महल (?) पर इब्राहिम की तलुंडी थी जहां से डेढ कोस दूर पर डेरा डाला। कुंवरजी सवारी पर चढे वहां पधार रहे थे कि इतने मे ही सुरताण, प्रिथीराज, अमरा और गोपालदास ये चारों दिखाई दिये तथा मदना

मदनै री गांडि फाटी अर लिपरका करण लागी । उठा पातिसाहजी कूच करि अर नदी पार कियो । नदी पार डेरो कियो। उठा वळे आघो सेखाणपट्टण नूं पातिसाहजी कूच कियो । उवै डेरै रो कूच हुवो ताहरां पातिसाहजी दहाई रो सिरै रो हाथी गजतिलक श्रीजी चढिया । गजतिलक रै वासै काळीकुंवर री मसलि हूंती । काळीकुंवार रै माथै रा भुवाळ गज दोढ हेक हुता सु श्रीजी घणी तिण सेती मया करता । ताहरां कुंवर श्री दळपतजी नूं हुकम कियो तू काळीकुंवार चढि अर आगिलै डेरा नूं खड़िया। विचाळै पधारतां श्रीजी हाथी हुंता ऊतरिया, ऊतरि अर सुखपाल पौढिया । कुंवरजी नूं कहियो जा तांई थारी खुसी तां तांई हाथी चढियो पधारे । श्रीजी हुकम कियो ताहरां

डर के मारे बुरी तरह घबराने लग गया । वहां से चल कर बादशाह ने नदी पार की । नदी के उस पार डेरा किया । वहां से फिर बादशाह ने आगे सेखाणा-पट्टन की तरफ कूच किया । तब श्रीजी बादशाह के 'दहाई' के हाथी "गजतिलक" पर चढ़े । गजतिलक के पीछे "कालीकुंवर" की मसंलि (?) थी । कालीकुंआर के बाल डेढ गज के करीब थे इसलिये श्रीजी उस पर बड़ी दया रखते थे। तब उन्होंने कुंवर श्री दलपतजी को हुक्म दिया कि कालीकुंआर पर चढो और ऐसा कह कर वे आगे के डेरों की ओर चल दिये । बीच में चलते हुये श्रीजी हाथी से उतरे और उतर कर सुखपाल पर सवार हुए । कुंवरजी को कहा कि जब तक तुम्हारी खुशी हो तब तक हाथी पर चढ़कर आ जाना ।

कुवरजी हाथी चढिया ही ज पधारिज्या थाहरै डेरै। श्रीजी हुकम कुवरजी नू करि अर अदरि महल माहे सिधाया। कुवरजी हाथी चढिया ही ज डेरै पधारिया। डेरै पधारि अर हाथी हुता ऊतरिया। तिसडै भोपतिजी कन्हा मगोलो वणवीराणो आयो। सु वणवीर परिया सीरोही हुता राजाजी अर मुहतै रो मेल्हियो आयो। सु वणवीर रै साथि मुहतै विस मेल्हियो करमचन्द पणि वणवीर जाणै नही। वणवीर आणि अर मुहतै अचळै नू अर नाई लखमण लाहोरी नू सपियो। आगै भोपतजी समाधिया हुया हुता। काचो पाको वारो ढाळियो हुतो। पथ्य लियै हुता। पथ्य गोवलजी आप रै हाथि आरोगाडता। अर गोवलजी कुवर श्री दळपतजी रा धावड सु पथ्य

श्रीजी ने हुक्म किया कि तुम हाथी पर चढे हुये ही अपने डेरे चले जाना। श्रीजी कुवरजी को हुक्म देकर अन्दर महलों मे चले गये। कुवरजी हाथी पर चढे हुये ही डेरे पधारे। डेरे में पधार कर हाथी से उतरे। उस समय मगोला वणवीराणी भोपतजी के पास से आया। वणवीर उधर सिरोही मे राजाजी और मुहता का भेजा हुआ आया था। वणवीर के साथ मोहता करमचन्द ने विष भेजा था, लेकिन वणवीर को यह मालूम नहीं था। वणवीर ने लाकर मेहता अचला और नाई लखमण लाहोरी को विष सौंप दिया। उधर भोपतजी स्वस्थ हो गये थे। कच्ची पक्की चेचक ढल गई थी और पथ्य ले रहे थे। गोवलजी अपने हाथ से पथ्य देते थे।

भोपतिजी नूं तेजो वाघोड़ करतो। अर गोवलजो पासे बैसि अर आरोगाड़ता। जाहरां सीरोही हुंता विस वणवीर आणि संप्यो ता पछै गोवलजी नू अलाहिदा कियो अर कहियो थे दळपतजो रा छो, थांहरो भरोसो को नहीं। थां नूं जिका खिजमति सूंपी छै सु करो। ताहरां गोवलजी अळगा अलाहिदा हुया। ताहरां मुंहतै अचळै लखमण नाई नू कहियो तूं पथ्य भोपतजी नू करि। ताहरां लखमण पथ्य कियो। माहे विस घातियो। घाति अर अचळै मुहतै अर लखमण नाई भोपतजी नूं आरोगाड़ियो। ताहरां भोपतजी रा नळ छूटि छूटि पड़िया। आंखि अर इन्द्री छूटि छूटि पड़िया। हाड संकळि जुदी हुई। मांस चांमडी सीरख सेती लागी ही ज रही। ज्यू संदळ लूगै नू लागै तिम लागी

वे कुंवर श्री दलपतजी के आदमी थे इसलिये भोपतजी का पथ्य तेजा वाघोड़ तैयार करता और गोवलजी पास में बैठकर खिलाते। जब वणवीर ने सिरोही से विष लाकर सौंपा उसके बाद गोवलजी को अलग कर दिया और कहा कि आप दलपतजी के हो इसलिये आपका कोई भरोसा नहीं। आपको जो सेवा सौंपी गई है वह करो। इस पर गोवलजी अलग हो गये। तब मेहता अचला ने लखमण को कहा कि तुम भोपतजी के लिये पथ्य तैयार करो। इस पर लखमण ने पथ्य तैयार किया और अन्दर विष मिला दिया। अचला मेहता व लखमण नाई ने वह पथ्य भोपतजी को खिलाया। इसके परिणामस्वरूप भोपतजी की आंखें, जननेन्द्रिय और अंडकोष में से जहर फूट निकला।

ही ज रहियो। पछे प्राण छूटा। ताहरा सीरख समेत दागिया। काढै तो हाड सकळि एक एक जूई जूई हुवै तिण वासतै सीरख समेत दागिया। पछे उठा वणवीर कुंवरजी रै पाये आयो। आइ कहियो जु भोपतजी समाधिया हुया। श्रीजी कन्हा भोपतजी री विदा बीकानेर नू कराडो। कुंवरजी रा परधाना नू भोपतजी वैकुंठ सिधाया री खबरि हुई। कुंवरजी ताई खबरि नही। ताहरा कुंवरजी श्रीजी कन्है पधारिया। श्रीजी नू अरज भोपतजी री करि अर बीकानेर नू विदा कराडी। पातिसाहजी कहियो घोडो अर सिरपाव अर हाथी परभाति थारै हवाले करिसि। भोपत नू खुदाइ री पनह। घरे सिधारो। चगा हुवै ताहरा वळे वैगा पधारिया। ताहरा कुंवर श्री दळपतजी खुसी सू

हड्डियों के साथ पृथक हो गये। मास और चमडी रजाई से लगे ही रह गये। जिस प्रकार चन्दन वस्त्र से लगा रहता है उसी प्रकार लग गये। जब प्राण निकले तो रजाई सहित ही दाग दिया गया। यदि रजाई हटाते तो हड्डियों के साथ एक एक अलग हो जाते। इसलिये रजाई सहित ही जलाया गया। इसके बाद वणवीर कुंवरजी के पास आया और कहा कि भोपतजी स्वस्थ हो गये है, उन्हे श्रीजी से बीकानेर के लिये विदा दिलवाओ। कुंवरजी के प्रधानो को भोपतजी के वैकुण्ठवास होने की खबर मिल गई थी लेकिन कुंवरजी को पता नहीं था। इसलिए कुंवरजी श्रीजी के पास पधार और उन्हें भोपतजी के लिये अर्ज कर बीकानेर के लिए विदा दिलवाई। बादशाह ने कहा

वधाई ले अर डेरै पधारिया । आगै आइ देखै तो कुंवरजी रा परवांन मदनै रै डेरै माथरवाडै घातियै वैठा छै। कुंवर आइ अर वधाई दे पूछियो थे ई पोसै वैठा सु क्यूं । ताहरां कहियो म्हे ई वांणिया वैठा छां थे पधारो पौढि रहौ । कुंवरजी पधारि अर मुख कियो । सुवार हुया कूच हुयो । पातिसाही डेरा सेखाणैपट्टणि पड़िया । होळी हुंता आगै छह दिहाडा हुंता । अर मेह थोड़ो सो वरसि रहियो हुंतो । राति कहियो कुंवरजी नूं सांभळांवां। ताहरां माधव-सिघ कहियो कुंवरजी तो आरोगिसै नहीं । ताहरां पाति-साहजी खुदाइवगस इकदंता हाथी असवार हुया । आपसर हुतो सु पातिसाहजी कहियो चीक छै। पाळा असवार

कि घोड़ा, सिरोपाव और हाथी सुवह भोपतजी के लिये दिया जायगा। खुदा भोपत की रक्षा करे। वह घर जायें और ठीक होने पर फिर जल्दी ही आ जायें। इस पर कुंवर श्री दलपतजी खुशी से वधाई लेकर डेरे पधारे । आगे आकर देखा तो कुंवरजी के प्रधान मदना के डेरे वैठे हैं। कुंवर ने आकर वधाई दी और पूछा कि आप लोग ऐसे कैसे वैठे हैं ? इस पर उन्होंने जवाव दिया कि हम तो ऐसे ही वैठे हैं, आप तो पधार कर विश्राम करो। कुंवरजी ने पधार कर विश्राम किया । सुवह होते ही कूच हुआ । वादशाह के डेरे सेखाणापट्टन में हुये। होली से आगे ६ दिन हो गये थे और थोड़ा थोड़ा मेह वरस रहा था । रात को कहा कि कुंवरजी को सम्भाले। इस पर माधवसिंह ने कहा कि कुंवरजी तो भोजन नहीं करेंगे। तव वादशाह इकदन्ते हाथी

अलगेरा आइया। सु उमराव वि ऊपरि फौज हुता आगैकोर हुता अै वाता करता आवै हुता। भाखरसी अर जैनखान एकठा हुया आवै हुता। ताहरा जैनखान नू भाखरसी कहियो जु भोपतजी राम कहियो। ताहरा जैनखान कन्हा भाखरसी परहेरो गयो। अर जैनखा कुवर श्री दळपतजी नू तेडि अर कहियो भोपतजी राम कहियो। ताहरा कुवरजी कहियो खानजी आ वात कहै ताहरा कोसू कहा, भोपतजी सारा समाधिया छै। ताहरा जैनखान कहै मैं न जानू भोपतजी कू सेहति हुवो, मोनू भाखरसी कहियो। सैं ऊनरि पछनावो कियो मैं वुरा किया उन्हकै कहियै ऊपरि कहिया। भोपति कू खुदाइ सेहति द्यौ। इउ कहि अर

'खुदानस्स' पर सवार हुये। हाथी मस्त था और बादशाह ने कहा कि कीचड है। पैदल सवार अलग से आये। वो उमराव फौज से आगे की ओर इस प्रकार बातें करते हुये आ रहे थे। भाखरसी और जैनखान दोनों इकट्ठे आ रहे थे। तब जैनखान को भाखरसी ने कहा कि भोपतजी का स्वर्गवास हो गया। इसके बाद जैनखान से भाखरसी अलग हो गया और जैनखान ने कुवर श्री दलपतजी को बुला कर कहा कि भोपतजी का स्वर्गवास हो गया। इस पर कुवरजी ने कहा कि खानजी यह बात आप कैसे कह रहे हैं? भोपतजी तो बिल्कुल स्वस्थ है। तब जैनखान ने कहा कि मुझे मालूम नहीं मुझे तो भाखरसी ने कहा। भोपतजी स्वस्थ हों, ऐसा कहकर उसने पछतावा किया कि मैंने बुरा किया जो उसके कहने से आपको कह दिया। खुदा भोपत को

सेखाणैपट्टणि डेरां आया। पातिसाहजी सेखाणै सेख फरीद रै आसथांन पधारिया। जाहरां थांनक हुंता निजीक पधारिया ताहरां श्रीजी कुंवरजी नूं कहियो थे डेरै पधारौ। ताहरां कुंवरजी डेरै पधारिया। ताहरां दरबार आगै रुंख वाढ़ण लागा, वुहरावण लागा। बिछावणा माकळा मेल्हि मंडता देखि कुंवरजी गुमांन कियो। इतरी डेरै री साजति घणी सी क्यूं। ताहरां कुंवरजी पूछियो कीसूं ठाकरां आज डेरो मोकळो सो कीजै। ताहरां कहियो एथ मुकाम घणा दिन होइसी। तिण वासतै डेरो मोकळो कराडीजै छै। तिसड़ै सैं विजै कहियो भीतरि पधारो, अरोगो। ताहरां भीतरि पधारिया। सु अरोगण नूं तइयार न हुऔ हुतौ। ताहरां मेवो किसमिस बिदाम आणिया।

सेहत दे। यह बात कर कुंवरजी सेखाणापट्टन में डेरे आये। बादशाह सेखाणा में शेख फरीद के स्थान पर पधारे। जब स्थान के समीप आये तो श्रीजी ने कुंवरजी को कहा कि आप डेरे पधारो। जिस पर कुंवरजी डेरे पधारे। तब दरबार के सामने पेड़ कटने लगे और सफाई होने लगी। बहुत सी बिछायत होती देखकर कुंवरजी ने सोचा कि डेरे की इतनी सजावट क्यों हो रही है ? तब कुंवरजी ने पूछा कि ठाकुरों, आज डेरे में इतना स्थान तय्यार क्यों किया जा रहा है, जिस पर जवाब मिला कि यहां बहुत दिनों तक मुकाम होगा इसलिए पर्याप्त स्थान तय्यार किया जा रहा है। इसी समय बीजा ने कहा कि आप भीतर पधार कर भोजन करें। इस पर भीतर आये लेकिन भोजन

ताहरा मेवो अरोगण लागा । तिसडै समियाणौ उठायो । ताहरा समियाणं री भालरि नदरि पडी । ताहरा पहिलो जाणियो कोई राज दिसा का राणीजी दिसा समाचार आयो । इम जाणि अर रकेबी हाथा नाखि दो । तिसडै सैं विजै रोइ अर कहियो भोपतजी रो इसडो ढग हुओ । भोपतजी वैकु ठ सिधाया । तीजै पहर माधवसिंघ, सूरतिसिंघ, खिंगारजी बीजा ही हिन्दू ठाकुर पधारिया । पधारि अर पाणीलवणो कराडियो । दिन चौथै पातिसाहजी मिरपाव डेरै मेल्हि अर हजूर तेडाया । हजूर बुलाइ अर कहियो भोपति का खुदाइ अैसा ही सिरजिया हुता । हिव राजाजी रै तू वडो बेटो पाट रो तैसो तू म्हारो ही बेटो छै । तू टीकै रो धणी छै । खुदाइ करिसी तो तैसू धणी निवाजस

तय्यार नहीं हुआ था इसलिये मेवा, किसमिस, बादाम लाये गये । जब मेवा खाने लगे उस समय शामियाना उठाया तो उसकी झालर नजर पडी । तब पहले तो समझे राजाजी या रानीजी का कोई समाचार आया है । ऐसा सोचकर रकाबी हाथ से डालदी । इसी समय बीजा ने रोकर कहा कि भोपतजी का ऐसा हाल हुआ और वे वैकुण्ठ सिधाये । तीसरे पहर माधवसिंह, सूरतसिंह, खिंगारजी और दूसरे ही हिन्दू ठाकुर पधारे तथा पानीलवन की रस्म अदा करवाई । चौथे दिन बादशाह ने डेरे में सिरोपाव भेज कर अपने पास बुलाया और कहा कि खुदा ने भोपतजी के लिये ऐसी ही रचना की थी । अब राजाजी के तुम बडे पाटवी बेटे हो सो तुम मेरे भी बेटे ही हो । तुम टीके के

करिसि । ज्यूं पातिसाह करै छै त्यूं घणी दिलासा की । तूं दिलगीराई किण ही वोल री मत करै । दिलासा करि अर पूछियो । भोपति कै कितनी जोरू छै । कितने हेक दिने छै । ताहरां कुंवरजी कहियो—पातिसाहजी सलामति जोरू च्यारि छै । वरसां १५।१६ मांनि की छै । ताहरां श्रीजी कहियो—खुदाइ उन्हको सत्त देसी ।

एथि पातिसाहजी रा मुकाम दिन १५।१६ हूआ । एक दिन कुंवरजी सेख फरीद रै आसथांन पधारिया हुता । उठा वाहुडिया ताहरां डेरै नूं पधारै हुता सु साम्हां प्रिथीराजजी, सुरताणजी, अमरो, गोपाळदास मिलिया । ओथि मदनै रै भय पैठो जु अै मोनूं कुंवरजी रै साथि थका

अधिकारी हो । खुदा चाहेंगे तो हम तुम पर वहुत महरवानी रक्खेंगे । इस प्रकार वादशाह ने सदा की तरह वहुत दिलासा वंधाई और कहा कि तुम किसी प्रकार दिलगीर मत होना । दिलासा देकर पूछा कि भोपतजी के कितनी स्त्रियां हैं और कितने २ वर्षों की हैं ? इस पर कुंवरजी ने कहा कि वादशाह सलामत , उनके चार स्त्रियां है और १५-१६ वर्ष के लगभग हैं । इस पर वादशाह ने कहा कि खुदा उनको सतीत्व देंगे ।

यहां वादशाह का मुकाम पन्द्रह सोलह दिन तक रहा । एक दिन कुंवरजी शेख फरीद के स्थान पर पधारे थे । वहां से लौटते हुये जव डेरे आ रहे थे तो सामने प्रिथीराजजी, सुरताणजी, अमरा और गोपालदास मिल गये । उस समय मदना को भय हुआ कि ये लोग मुझे कुंवरजी के साथ रहते ही मार डालेंगे । वह मन

ही मारिसी । मन माहि घणो ही ज भय पैठो । ताहरा डेरै पधारिया । ताहरा मदनै कहाव कियो जु मोनू विदा कराडो हू जाइसि । मोनू ग्रै ठाकुर कुवरजी रै साथि थका ही मारिसी । कुवरजी घणो ही कहियो पणि रहै नही । गाडि ढीली हुइ सु पीडी न हुवै । कहै मोनू कुवरजी साथि होइ ग्रर पहुचोडो । ताहरा रजपूत सहि साथि हुग्रा । ग्रर कुवर पणि साथ होइ मदनो कहै मोनू मूमै री ढाक ताई पहुचाडो । जाहरा कोस ५।७ ग्राया ताहरा बिजै कुवरजी री वाग नू हाथ घातियो । बिजै कहियो मदनै रै वासतै कुवरजी नू तो जोखै नही घाता । ताहरा कुवरजी वाहुडिया । मदनो कुवरजी रा हुकम पखो ही ज भूजाई रा चरू, थाळी, भूजाई री भिणकार, घोडो चहुवाण रामदास

में बहुत ही भयभीत हुआ । जब डेरे पधारे तो मदना ने कहलवाया कि मुझे विदा दिलवाइये मैं जाऊगा । मुझे ये ठाकुर कुवरजी के साथ रहते ही मार डालेंगे । कुवरजी ने उसे बहुत ही कहा लेकिन वह रहा नहीं । जो भय उसके दिल मे बैठ गया वह मिट न पाया । उसने कहा कि कुवरजी मुझे साथ चल कर पहुँचाये । इस पर सभी राजपूत उसके साथ हुये और कुवरजी भी साथ हुये । मदना ने कहा कि मुझे "मूसे की ढाक" तक पहुँचादो । जब पाच सात कोस आये तो बीजा ने कुवरजी के घोड़े की लगाम हाथ मे ले ली । बीजा ने कहा कि मदना के लिये कुवरजी को जोखिम मे नहीं डाल सकते । इस पर कुवरजी वापस आ गये । मदना कुवरजी के हुक्म बिना ही रसोई के 'चरू', थाली

री पेस रो, परणिया तदि पेसकस कियो हुतो, वीजो ही भूंजाई रो समदाव मह मदनो ले गयो। कुंवरजी पाछा पधारिया। रजपूत थोड़ा सा कुंवरजी रै साथि घिरिया। घणाखरा हेक मदनो साथि ले गयो। करमचन्द भांनीदासोत, मदनै कन्हां मरोडाइ अर पाछो विरियो। मदनै नू कहियो म्हे तो थारा चाकर नहीं छां। म्हां तो कुंवरजी रा जतन करणा। थारा जतन नहीं करणा। सु इम कहि अर कुंवरजी रै साथि घिरियो। वीजा घणाखरा हेक रजपूत ले अर मदनो नाठो। जिसड़ै देस माहे आयो पूनूसर अर वाइलै विचाळै मंडलो टेहुआं हुतो दूदै ईदै री सांढि ले अर जावै हुतो। ओथि पूनूसर वाइलै विचाळै धको मदनै नूं हुयो। उठा मदनो नाठो।

और भिणकार, विवाह के समय रामदास चौहान द्वारा नजर किया गया घोड़ा तथा रसोई का अन्य वहुत सा सामान ले गया। कुंवरजी वापस पधारे। थोड़े से राजपूत कुंवरजी के साथ लौटे। वहुतसों को मदना अपने साथ ले गया। करमचन्द भानीदासोत मदना के पास से रूठ कर लौट आया। उसने मदना को कहा कि हम तो तुम्हारे चाकर नहीं है। हम तो अब कुंवरजी की सेवा करेंगे। तुम्हारी सेवा नहीं करेंगे। ऐसा कह कर वह कुंवरजी के साथ आ मिला। अन्य वहुत से राजपूतों को लेकर मदना चला गया। जव देश में आया तो "पूनूसर" और "वाइला" के वीच में मंडला "टेहुआं" से दूदा ईदा की सांढ लेकर जा रहा था। वहां पूनूसर और वाइला के वीच में उसकी मुठभेड़

राजाजी भोपतजी थका कुवर दळपतजी नू ऊचो करि झालियो हुतो । अर भोपतजी विश्रामियं पछै ज्यू भोपति नू कमता तिम दळपतजी नू कमणी माहे कियो । पातिसाहजी उठा कूच कियो । आइ चदणोट रै घाटि ऊतरिया । उठा हजारै पधारिया । हजारै हुता भेहरै पधारिया । भेहरै घरै रो सिकार कराडियो । सिकार रमण लागा । हाको कराडियो । हेकै पासै टिलै हुता रुहतास हुता पहाड रा जिनावर मैदान रा जिनावर बीजै पासै सोवन रै पहाड हुता कुसाव बाहिरा सहि करि कोस ८० हेक रा योजन २० रो घेरो कियो । गिरभाक नदणं रै गोठि आणि भेळा किया । हेकै दिसा नदी । हेकै दिसा उमराव लोक । तियं

हुई जिसमें मदना भाग निकला ।

राजाजी भोपतजी के रहते समय कुंवर दलपतजी पर विशेष कृपा रखते थे पर भोपतजी के स्वर्गवास के बाद जिस प्रकार उन पर बड़ाई रखते थे उसी प्रकार दलपतजी पर भी रखने लगे । उधर बादशाह ने यहां से कूच किया और "चन्दनोट" के घाट पर आकर उतरे । यहां से "हजारे" और हजारा से "भेहरा" गये । भेहरा में शिकार के लिये घेरा डलवाया, शिकार खेलने लगे और शोरगुल करवाया । एक तरफ "टीला" और "रोहतास" की तरफ से पहाड़ों और मैदान के जानवर तथा दूसरी तरफ "सोवन" के पहाड़ से, "कुसाब के बाहिर से सब मिलाकर अस्सी कोस अर्थात् बीस योजन का घेरा किया । पहाड़ों के जानवर "नदणा" के पास लाकर इकट्ठे किये गये ।

सोलंकणी रै घरे हुंतो सु नायो। ताहरां साहिजादा नूं श्रीजी वांहां गरहि गरहि अर पांणी मांहे गोतो दियो। पांणी रै भय पैसै न हुता। तिण वास्तै गोता दिया सात-आठ दे अर नाव मंगाई। ताहरां नाव वैसि अर सेख जमाल रै डेरै पधारिया। पधारि अर वागो पहिरियो। पछै घोड़ो मंगायो। घोड़ो मंगाइ अर असवार हुया। अस-वार हुइ अर कुंवर श्री दळपतजी रै डेरै अर माधव-सिघजी रै डेरै हुंता नेंडा पधारिया। ताहरां माधवसिघ घोड़ो पेसकसि कियो। घोड़ो माधवसिंघ ही ज नू वगसियो। कुंवर श्री दळपतजी घोड़ो नीलकंठ पेसिकस कियो। सु पिण कुंवरजी नूं वगसियो। उठा श्री जी दरवार नूं पधारण लागा। जेथि हिरण खूंटिया ऊभा हुता, हिरणां

पीरमोहम्मद और मीठखान इतने खवास थे। दाणजी सोलंकनी के घर था सो नहीं आया। तब श्रीजी ने शाहजादे को बाहों में भर भर कर पानी में गोते दिये। वे पानी के भय से अन्दर नहीं जा रहे थे, इसलिये गोते दिये। सात आठ गोते देने के बाद नाव मंगवाई और नाव में बैठकर सेख जमाल के डेरे पधारे। वहां वागा पहनने के बाद घोड़ा मंगवाया और उस पर सवार हुये। सवार होकर कुंवर दलपतजी और माधवसिंहजी के डेरों के समीप होकर निकले। तब माधवसिंह ने घोड़ा पेश किया जो उसी को बख्श दिया। कुंवर दलपतजी ने भी नीलकंठ घोड़ा पेश किया जो उन्हें ही बख्श दिया। उधर श्रीजी दर-बार पधारने लगे तो जहां हरिण खूंटों से बंधे हुये थे और उनके पिछले

री पाइगह बाधी हुती तेथि पधारिया । ओथि पधारि अर हिरण जोवण लागा । ताहरा सूरिजसिंघ, अखयराज, सलहदी, कुवर श्री दळपतजी हुता । अर तुरका महा जैनखान, सेख जमाल, दोलति खोजो, अर रामदास तरवार भालियै ऊभो हुतो । बीजा नान्हा मोटा खिजमतिया हीज थोडो सो लोक ऊभो हुतो । ओथि तितरै दाणजी आया । ताहरा पातिसाहजी पूछियो—तू अब ताई कहा हुतो, क्यू ना आयो । ताहरा कहियो—जी अदब कै वासतै कपडा पहिरै था सु त्यै खता पडि ढील हुई । ताहरा पातिसाहजी खिजिया अर चावक ४।५ लगाया । तिसडै सें पृथीदीप आयो । तिण सेती ही कहियो—तू केथि हुतो । ताहरा तिण कहियो-पातिसाहजी सलामति म्हारा महसल आवण दियै नही ।

पैर भी बधे हुये थे, वहा पधारे और उन्हें देखने लगे । उस समय वहा सूरजसिंह, अखैराज, सलहदी और कुवर दलपतजी थे तथा तुर्कों में जैनखान, सेख जमाल और दौलत खोजा थे । रामदास तलवार लिये खडा था । दूसरे छोटे मोटे थोडे से सेवक ही खडे थे । इतने में वहा दाणजी आये । तब बादशाह ने पूछा कि तुम अब तक कहा थे ? क्यो नहीं आये ? इस पर उसने कहा कि अदब के लिये कपडा पहनने में देरी हुई सो गलती हुई । इस पर बादशाह क्रोधित हुये और चार पाच चाबुक लगाये । इतने में ही प्रिथीदीप आया और उससे भी बादशाह ने पूछा कि तुम कहा थे ? इस पर उसने जवाब दिया-बादशाह सलामत मेरे महमलों (सलाहकारों) ने मुझे नहीं आने दिया । यह

ताहरां कोरज ७–८ लगाया। अर महसल तेड़ि अर महसल मराड़िया। तियां नूं कहियो–थे इण नूं क्युं न ले आवो। ताहरां उवां कहियो मामू आवण दिये नहीं। इण नूं ज्यूं कपड़ा पहिरावां त्यूं चहवचै माहे गिरि गिरि पड़ै। ताहरां इण रो मामू कहै रमण दियौ इण नूं। हमारा दोस नहीं। पातिसाहजी सलामति मामू आवण दियै नहीं। अर कुंवर श्री दळपतजी नूं तिस लागी सु गंगाजळ अरोगण रै वासतै लोक माहे छागळियै नै देखण लागा। तिसड़ै कुंवरजी रो छागळियो आयो न हुतो, डेरा निजीक रै वासतै, अर कन्है को आदमी न था। ताहरां पृथीदीप रो छागळियो दीठो, देखि अर बुलायो। पूछियो कुंवरजी-किण री छागळी छै। ताहरां तिण कहियो जु प्रिथीदीप री

सुनकर बादशाह ने सात आठ कोड़े लगाये और महसलों को बुलवा कर मरवा डाला। उनको कहा कि तुम इसको क्यों नहीं लेकर आते, तो उन्होंने जवाब दिया कि मामू इसको नहीं आने देते। इसको ज्यों कपड़े पहनाये त्यों ही चहवचे (पानी का छोटा हौज) में गिर गिर कर पड़े। इस पर इसके मामू ने कहा कि इसे खेलने दो। इसलिये बादशाह सलामत हमारा दोष नहीं है। मामू ने इसको नहीं आने दिया। इधर कुंवर श्री दलपतजी को प्यास लगी तो गंगाजल पीने के लिये जल-धारी को देखने लगे। उस समय कुंवरजी का जलधारी आया न था। क्योंकि डेरा नजदीक ही था। पास में कोई आदमी नहीं था इसलिये उन्होंने प्रिथीदीप के जलधारी को देखकर उसे बुलाया और पूछा कि

छागळी छै। हू प्रिथीदीप रो छागळियो छू। ताहरा कु वरजी कहिगो–हू गगाजळ नही श्रारोगू। ताहरा तिरिसया होज श्री जी रै पासि पधारि ऊभा रहिया। तितरै प्रिथीदीप रो मामो श्री जी कन्है तेडायो। सु श्रो होज मामो जिए रै हाथ छागळि प्रिथीदीप री हुती सु तेडायो। श्री जी श्राथुए साम्हो फिरि ऊभा रहिया। सु डावै पासै सूरिजसिंघ श्रर अखयराज, जीवर्णे पासै कु वर श्री दळपतिजी ऊभा। पूठि वांसै सलहदीजी ऊभा। सेख फरीद, सेख जमाल हिरणा रै कूदलै हुता पर श्री जी हुता श्रळगेरा ऊभा। ताहरा प्रिथीदीप रो मामू तेडाइ श्रर श्री जी खिजिया–तू इरण नू वयू श्रावरण न दियै। ताहरा, तिरिण

यह किसकी छागली है ? उसने जवाब दिया कि यह प्रिथीदीप की छागली है और मै उन्ही का छागलिया हूँ। तब कुवरजी ने कहा कि मे गगाजल नही पीऊगा और प्यासे ही श्रीजी के पास आकर खड़े रहे। इतने मे श्रीजी ने प्रिथीदीप के मामा को बुलाया, सो मामा वही था जिसके हाथ मे प्रिथीदीप की छागली थी। श्रीजी पश्चिम की तरफ मुड़कर खडे रहे। उनके बाये ओर सूरजसिंह और अखैराज तथा दाई ओर कुवर दलपतजी खडे थे। पीछे की तरफ सलहदीजी खडे थे। सेख फरीद और सेख जमाल हरिणो के दगल मे ही थे लेकिन श्रीजी से अलग ही खडे थे। इसके बाद श्रीजी ने प्रिथीदीप के मामा को बुलाया और उस पर क्रोधित होकर कहा कि तुम इसको क्यों नहीं आने देते हो ? इस पर उसने कहा कि बादशाह सलामत मेरी क्या औकात है जो

कहियो—पातिसाहजी सलामति मिरी हद्द है जु हूं हजरत रै पाए आवतै नूं पालूं। ताहरां कोरड़ा रो हुकम कियो। जिसड़ै सै गोपालियै कोरड़ो हेक वाह्यो अर वीजो ऊभा रहियो तिसड़ै सै रणधीरोत कटारो काढि अर यदि वाह्यो। हेको वीजो तीजो उपाड़ियो तिसड़ै पातिसाहजी खिजिया जु मारो मारो हरामजादै नूं। अर हाथी मंगायो। सु हाथी करोडिए पेसकस कियो हुंतो सु हाथी मंगायो। सु हाथी तो ढूकै नहीं। ताहरां पातिसाहजी खिजि अर महल मांहि सिधाया। अै ठाकुर सहु कोई डेरै आया। वात विचारण लागा जु वुरा हुया छै जु पातिसाहजी खिजिया छै, न जांणूं क्यूं कहिसी। तिसड़ै तीजै पहुर सांभळियो जु मानसिंघ कुंवर पधारै छै। ताहरां माधवसिंघ

में आपके पास आते हुये को रोकूं! इस पर वादशाह ने कोड़े लगाने का हुक्म दिया। जिस समय गोपालिया ने एक कोड़ा मारा और दूसरे के लिये खड़ा रहा उतने में रणधीरोत ने कटार काढ कर वाही। एक, दो और तीन वार किये तो वादशाह क्रोधित हुये और कहा कि हरामजादे को मारो। करोड़ी ने जो हाथी पेश किया था वह मंगवाया गया, लेकिन हाथी मारने के लिये आगे वढा नहीं। इस पर वादशाह क्रोधित होकर महलों में चले गये। दूसरे सभी ठाकुर डेरों में चले आये और विचार करने लगे कि वादशाह का क्रोधित होना वहुत वुरा हुआ, न जाने क्या कहेंगे? इसके वाद तीसरे पहर खवर हुई कि कुंवर मानसिंह पधार रहे हैं। तव माधवसिंह ने कुंवरजी को कहा कि आप पधारो तो उनकी

कहियो कुवर श्री दळपतिजी नू थे पधारो तो आपा साम्हा जावा। ताहरा कुवर श्री जी कहियो होवै पधारो ज्यू साम्हा जावा। ताहरा माधवसिंघ अर कुवर श्री दळपतिजी साम्हा पधारिया। पणि पहिलो विचार करि अर अखैराज सलहदी नू श्री जी कन्है मेल्हि अर पूछाडियो। जे श्री जी रो हुकम हुवै तो मानसिंघजी आवै छै सु माधवसिंघ अर कुवर श्री दळपतिजी साम्हा जावै, जे श्री जी रो हुकम हुवै तो। तिसडै सै ए दरबारि गया। तिसडै सै माधवसिंघ अर कुवरजी साम्हा पधारिया। जेथि घेरै रा लोक आइ भेळा हुया छै, जेथि उमराव डेरा भेळा हुआ हुता तेथि खबरि हुई जु मानसिंघजी आथुणि सै पातिसाही डेरा दिसा खडिया। ताहरा ए ठाकुर बेवे पाछा पधारिया। ता पहिलो मानसिंघजी पातिसाहजी रै पाए लागा। पूनम री

अगवानी मे चले। तब कुवरजी ने कहा कि पधारिये चलें। तब माधवसिंह और कुवर दलपतजी उनकी अगवानी मे पधारे। लेकिन पहले विचार करके अखैराज और सलहदी को श्रीजी के पास भेजकर पुछ गाया कि आपका हुक्म हो तो माधवसिंह और कुवर दलपतजी मानसिंहजी की अगवानी को जाय। उस समय ये दरबार मे गये और माधवसिंहजी तथा कुवरजी अगवानी के लिये पधारे। जिधर घेरे के लोग आकर एकत्रित हुवे और उमराव लोग डेरो मे इकट्ठे हुये उधर यह खबर पडी कि मानसिंहजी पश्चिम की तरफ से बादशाह के डेरों की तरफ चले गये। तब ये दोनों ठाकुर लौट आये। तब पहले मानसिंहजी

राति छिटकी छै चांदिणी । जाहरां मानसिंघ कुंवर पाए लागो ताहरां मानसिंघ नूं कहियो—तुम्ह देख्या जु हरामजादै रजपूत काम किया सु पेट मारी, जे जीवता होइ तो घाव बंधाड़ो । जे मूंया होइ तो लकड़ी खफण दिराड़ो । इसड़ै हुकम कियै मांनसिंघजी पातिसाहजी रै हुकम लावो उण नूं जोवण आयो । अर पतिसाहजी वांसै वजरिया । इसड़ै समइयै माधवसिंघ अर कुंवर दळपतजी पणि मानसिंघजी नूं मिलिया । मिल्यां पछै मानसिंघजी कहियो—हालो नै जो रिणधीरोत रजपूत नू जोवां । ताहरां कुंवर श्री दळपतजी रै साथ रायसल वीजावत अर सांखळो महेस हुता । तियां नूं मानसिंघजी कहियो—आओ जु इण नूं जोवां । जे घावे वांधे साजो हुवै तो घाव वांधो । ताहरां

बादशाह के पांव पड़े । उस समय पूनम की रात की चांदनी छिटकी हुई थी । तब बादशाह ने मानसिंह को कहा कि तुमने देखा उस हरामजादे राजपूत ने पेट में वार किया । यदि जीता हो तो उसके घावों पर पट्टी बंधवावो और यदि मर गया हो तो उसे दाग दिलवाओ । बादशाह का ऐसा हुक्म पाकर मानसिंहजी उसकी खोज में निकले । पीछे से बादशाह और भी क्रोधित हुये । इसी समय माधवसिंह और कुंवर दलपतजी भी मानसिंहजी से मिले । मिलने पर उन्होंने कहा कि चलिये रणधीरोत राजपूत को देखें । उस समय कुंवर दलपतजी के साथ रायसल वीजावत और सांखला महेस थे । उनको मानसिंहजी ने कहा—आओ उसे देखें और मरहम पट्टी करने से ठीक हो सके तो ठीक करें । तब रायसल

रायसल अर महेस दीठो। देखि उवै नू अर कहियो-ए जीवे नही। तिसइ सै उवै जीव दियो। ताहरा कुंवर श्री दळपतजी रै साथ रणधीरोत हुतो तिया दाग दियण नू ले गया। अर कुंवरजी मानसिंघजी, माधवसिंघ, कुं दळपतजी पातिसाह कन्है पधारिया। आगै पातिसाह औरू रूप हुया बकै छै। गाइ है सु हिंदू खावो। और मुसळमान सूअर खावो। नाजे हुडियार नाजे अैन खावो तो हुडियार कडाहि विचि वाहो अर राधो, जे हुडियार हुता सूअर होइ तो हिंदू मुसळमान रळि खावो। जे गाइ होइ तो हिंदू मुसळमान रळ खावो। जे सूअर होइ तो मुसळमान खावो जे गाइ होइ तो हिंदू खावो। क्यु ऊ देवीमिश्र होइगा। इऊ, बकि अर बीजो ही बकण लागा। आप

और महेस ने उसे देखा और कहा कि यह नहीं जियेगा। इतने में उसने प्राण दिये। तब कुंवर दलपतजी के साथ जो रणधीरोत थे वे उसे दाग देने ले गये। कुंवर मानसिंहजी, माधवसिंह और कुंवर दलपतजी बादशाह के पास पधारे। आगे देखा तो बादशाह पागल की तरह चिल्ला रहे हैं—हिन्दू गाय खायें और मुसलमान सूअर खायें, जो नहीं खायें तो हुडियार (नर भेड) को कढाई में राधो और जो हुडियार से सूअर हो जाय तो हिन्दू मुसलमान मिल कर खाओ, जो गाय हो जाये तो हिन्दू मुसलमान मिल कर खाओ। जो सूअर हो तो मुसलमान खाओ और जो गाय हो तो हिन्दू खाओ। कुछ दैवी चमत्कार होगा। इस प्रकार तथा और भी बकने लगे। उन्होंने पगड़ी उतारी और कहा नाई को बुलाओ और मेरे

पाघड़ी उतारी, नाई वुलाइ अर भुआळ उतारो। इसड़ै कहियै ऊपरि ताहरां नाई सहि नसाड़िया। ताहरां कटारो काढि अर भुआळ आपरा आफे वाडण लागा। ताहरां साह फतलह पातिसाहजी रा हाथ झालिया। जईनखांन, अर सेख फरीद पातिसाहजी रा हाथां कटारो झालियो। ताहरां साह फतलह कहियो जे पातिसाहजी भुआळ उतरावणा हीज तो भुआळ उतराडीजैं। सगळां उमरावां नूं कहियो पाघड़ी उतराड़ो। ताहरां पाघड़ो सगळे उतारी। उतारि उतारि हिंदू मुसळमांण पाघड़ी काख माहे घाती। मानसिंघ पणि उतारि अर काख माहे घाती। भुआळ पातिसाहजी उतराड़िया। अर ताहरां मानसिंघजी कुंवर श्री दळपतजी रां रजपूतां नूं कहियो– रायसल थे कंवर दळपतजी नूं काढो। राजाजी रै हेक हीज छै। अर वाळक छै,

---

वाल साफ कर डालो। ऐसा कहने पर सभी नाई छिप गये। इस पर कटार निकाल कर खुद अपने हाथ से वाल काटने लगे। तव साह फतलह ने वादशाह के हाथ पकड़ लिये और जैनखान तथा सेख फरीद ने उनके हाथ से कटार ले ली। तव साह फतलह ने कहा कि आपको वाल कटवाने ही हो तो कटवाइये। ऐसा कहकर सव उमरावों को आदेश दिया कि पगड़ी उतारो। इस पर सभी हिन्दू मुसलमानों ने पगड़ियां उतार कर वगल में दाव ली। मानसिंह ने भी पगड़ी उतार कर वगल में दवाई। वादशाह ने अपने वाल साफ करवाये। तव मानसिंहजी ने कुंवर दलपतजी के आदमियों को कहा कि तुम दलपतजी को यहां से ले जाओ।

वरस ११।१२, माहि छै; पातिसाह न जाणा क्यू करिसी । भोपतजी रो ओ ढग हूओ । अर एथि आ वात्र मडी छै । थे परहा कु वरजी नू वीकानेर नू काढो । ताहरा कु वरजी कहियो–राजि हू कठै जाऊ । हिवै जावता नू वीकानेर अळगो रहियो । पाचा ठाकुरा हुता टळि अर हू नही जाऊ । पाच ठाकुर ज्यू थे तिम हू पणि रावळै पासै छू । ताहरा कु वरजी पणि ऊभा होज रहिया । ताहरा पातिसाहजी हिंदुवा कानी देखि अर कहियो जु राठोड छै सु तो रज रा धणी छै । राजा छै । अर जु ए राजावत छै सु ए भी इन्हके भाणेज छै सु भी भला छै, पणि ए सेखावत मेरे जटडे छै । जटडे है–वार पाच सात वकि वकि कहियो । इसी जनसि वकण लागा पातिसाहजी । जाहरा

ये राजाजी के एक ही हैं और ११–१२ वर्ष के बालक हैं । बादशाह न जाने क्या करेंगे ? भोपतजी का तो यह ढग हुआ और इधर यह बात मन रही है । इसलिये तुम कु वरजी को दूर बीकानेर ले जाओ । तब कु वरजी ने कहा कि मै कहा जाऊ ? बीकानेर तो बहुत दूर रह गया । पाच ठाकुरो से टलकर मै नही जाऊगा । जिस प्रकार आप पाच ठाकुर हो उसी प्रकार मै भी आपके पास हूँ, ऐसा कहकर कु वरजी भी वहीं पर खडे रह गये । तब बादशाह ने हिन्दुओ की तरफ देखकर कहा कि जो राठोड हैं वे तो रज के धनी हैं, राजा है और जो ये राजावत हैं वे भी इनके भानजे हैं सो अच्छे हैं । लेकिन यह सेखावत मेरे जटडे है । जटडे ? कहकर पाच सात बार बके । इस प्रकार बकते ? जब आगी

आधी राति गई ताहरां साह फतल्लह जु हलावतां जु हलावतां महलां भीतरि ले सिधाया पातिसाहजी नूं । वीचावसू किया । सहु को ताहरां आपपाएगौं डेरै गयो । हिंदू मुसळमांन सहु को डेरै गयो । मानसिंघजी पणि माधवसिंघजी रै डेरै आइ ऊतरिया । सहु कोई राति सुइ रहिया । परभात हूयो ताहरां हिंदू ठाकुर सहु को सेवा करि करि अर चक्र संख दे अर मरणे सू होइ होइ अर डेरै वैठा छै । जाणियो परभाति पातिसाहजी कीसू करिसी, कहिसी । ताहरां परभात हुओ । पातिसाहजी राति हीज वागौ पहिरियै हीज घोड़ै असवार होइ अर कुंवर श्री दळपतजी रै डेरै हुंता निजीक हुइ पधारिया । पधारि अर डाढी हजामति कराड़ी । हजामति कराड़ि अर सहु कहीं ठाकुरां नै कहियो जु डाढी रखावो । अर फिरंग कूं हम

रात हो गई तो साह फतलह उन्हें धीरे २ करके महलों में ले गये । इस प्रकार बादशाह के चले जाने पर हिन्दू मुसलमान सभी अपने २ डेरे गये । मानसिंहजी भी माधवसिंह के डेरे आकर उतरे और सभी लोग रात भर सोये । जब सुबह हुआ तो सब हिन्दू ठाकर पूजा-पाठ करके और शंख-चक्र लगा कर मरने के लिये उद्यत हुये अपने २ डेरों में बैठ गये । वे सोचने लगे कि बादशाह न जाने क्या कहेंगे और क्या करेंगे ? जब सुबह हुआ तो बादशाह रात से ही बागा पहने हुये घोड़े पर सवार होकर कुंवर दलपतजी के डेरों के समीप से निकले । पधार कर उन्होंने दाढ़ी की हजामत करवाई और सभी ठाकुरों से कहा कि

कटकी करंगे । सहु को ठाकुर फिरग कू तइयार हुवो। ताहरा पाघडो आप री उतारि उतारि अर चीरा वि किया। एकं चीरं रा आंगुळ ४ चहु रा टुकडा किया। टुकडा करि करि अर हिंदुवा नू हेक हेक पाघडी रो टुकडो अर गगोदक हथाळी माहे दिया। हम जव फिरग सिधावहिगे नब आ निसाणी माग लियंगे। जाहरा कुवरजी ही पधारिया। ताहरा श्रीजी कहियो। तु तो लहुडो छै, अजी दाढी ही वरस १०S११ कु आइसी। तू फिरग आइ सथंगा। ताहरा कुवरजी श्रीजी सेती अरज की श्रीजी सलामति श्रीजी रै साथि हू परिण आइसी। ताहरा पातिसाहजी रजू हुया। अर कुवरजो नु परिण पाघडी रो छेहडो अर गगोदक दियो, घणु रळियाइत हुआ। रळियाइत होइ अर

आप लोग दाढी रखवाओ, हम फिरग पर चढाई करेंगे। सभी ठाकुर विदेश के लिये तय्यार हो जाओ। इसके बाद अपनी पगडी उतारी और उसके दो टुकड़े किये। एक टुकडे के चार २ अगुल के छोटे टुकड़े किये और हिन्दुओं को पगडी का एक टुकडा और गगाजल हाथ में दिया और कहा कि हम जब विदेश चलेगे तब यह निशानी माग लेगें। उस समय कुवरजी भी पधारे। तब श्रीजी ने कहा कि तुम तो छोटे से हो। अभी दाढी भी दस ग्यारह वर्ष बाद आयेगी। तुम क्या विदेश चल सकोगे? तब कुवरजी ने श्रीजी से अर्ज की कि मै भी आपके साथ चलूगा। इस पर बादशाह राजी हुये और कुवरजी को भी पगड़ी का टुकड़ा तथा गंगाजल दिया और बहुत प्रसन्न होकर कहा कि यह निशानी

कहियो —आ नीसांणी फिरंग मांहि मांगिस्यां । मानसिंघजी री दाढी रखाई । रखाइ अर पाछा पधारिया । अर हुकम कियो । घेरै सिकार मांहि ससा, लुंकड़ी, सीह, रोझ, स्याळ, रींछ अनेक हिरण आदि देअर भेळा हुया छै । नान्हां जीवां पडेरा मांहे आइ आइ पड़ै छै । अर सीह, सावज, रोझ कोसां ३ तिहुं रै आंतरै हुंता । हुकम सेती सहि वगसिया । सहि जिनावर छूटा । पातिसाहजी नाव वैस अर डेरै पधारिया । दिन ५ महलां मांहे अवळजिया रहिया । पांचां दिनां पछै महलां महां दाढी समराइ अर वाहिर पधारिया । ताहरां लोके सगळां दाढी समराई । उठा कूच करि अर सीकरी फतेहपुर महां होइ आगै नू पधारै छै । मारगि हेला माहे, गूंदळा मांहे, पहाड़तळी माहे, रामगढ हेठ करि अर चहनाळ लंघी । ओथि चहनाळ

हम विदेश में मांगेगे । मानसिंहजी की दाढ़ी रखवाई और रखवा कर वापिस पधारे । उन्होंने हुक्म दिया कि शिकार के घेरे में खरगोस, लोमड़ी, सिंह, रोज, स्याल, रींछ और हरिण आदि इकट्ठे हुये हैं और डेरों में छोटे २ जीवों पर आ आकर पड़ रहे हैं, इसलिये उनके हुक्म से सिंह, सावज और रोज आदि जो तीन २ कोस की दूरी पर थे ऐसे सभी जानवरों को छोड़ दिया गया । बादशाह नाव में बैठ कर डेरे पधारे और पांच दिन तक महलों में रह, दाढ़ी संवरा कर बाहर पधारे । तब सभी लोगों ने दाढियां संवराई । वहां से कूच कर सीकरी–फतेहपुर होते हुये आगे की ओर पधारे । मार्ग में हेला, गूंदला और पहाड़तली

ऊतरिया। ऊतरि अर डेरा किया। वासै महेला रै डेरै राजा भगवानदास आइ मिलियो। ओथि पातिसाहजी राजा भगवानदास अर मानसिंघ ऊपरि खिजिया। कहियो थे कू भळमेर किटो करि क्यू आया। सु कू भळमेर इया माहे हेल हुई। उठा धरमदुवार मागि नीसरिया हुता। मरि, छडि, तूटि, घणो वेखरच हुइ, तूटि मरि, भूखा मरि अर नीसरिया हुता। तियै वासतै पातिसाहजी खिजिया। उठै चहनाळ ऊपरि राजा भगवानदास नू अर मानसिंघजी नू भगति की असैराज वीकै। ओथि बीजा ठाकुर भगति रै ख्याल छै। काम काज करै छै। अर कु वर मानसिंघजी, कु वर श्री दळपतजी, राव दुरगो एकठा वैठा छै। तिसडै एकै रजपूत कसू भो पीयो हुतो अर कु वरजी मानसिंघजी

होते हुये रामगढ के नीचे से निकल कर चहनाल पार की। उतर कर वहा डेरा किया। पीछे महेला के डेरे पर राजा भगवानदास आकर मिले। उस समय बादशाह राजा भगवानदास और मानसिंह पर क्रोधित हुये और कहा कि कुम्भलभेर से भागकर क्यो आये? कुम्भलमेर में इन लोगों मे बहुत बुरी बीती। वहा ये धरमद्वार माग कर निकल कर आये थे। बहुत खर्च करके, हार कर और भूखो मरते भाग-कर आये थे इसलिये बादशाह बहुत क्रोधित हुये। वहा चहनाल पर राजा भगवानदास और मानसिंहजी की आवभगत असैराज बीका ने की। अब दूसरे ठाकुर काम काज कर रहे थे और कुवर मानसिंहजी, दलपतजी तथा राव दुरगा एक जगह बैठे हुये थे, उनमे से कसूम्भा पिये

रै वास्तै ग्राइ ग्रर होठ डसि ग्रर कटारो काढि ग्रर जिसड़ो मांनसिघजी नू वाहणहारो हुयो, वाहै वाहै तिसड़ो हुग्रौ, ताहरां कुंवर श्री दळपतिजी री दृष्टि पड़ियो। दळपत कुंवर देखि ग्रर राव दुरगै नूं कहियो जु ग्रौ कटारौ वाहै मानसिंघजी नूं। देखो कासूं झालो। ताहरा राव दुरगै हाथां झालियौ।

हुए एक राजपूत कुंवर मानसिंहजी को मारने के खयाल से आया। जब वह होठ डस कर कटार निकाले, मानसिंहजी पर वार करने को उद्यत हुआ तो कुंवर दलपतजी की नजर पड़ी। तब कुंवर दलपतजी ने उसे देखकर राव दुरगा को कहा कि यह मानसिंहजी पर कटार मार रहा है सो देखते क्या हो ? इसे पकड़ो ! तब राव दुरगा ने उसे हाथों से पकड़ लिया।

दलपत विलास

[ऐतिहासिक व्यक्तियों की अक्षरादिक्रम – सूचि]

दळपत विलास

[भौगोलिक स्थानों की अकारादिक्रम सूचि]

र

व

स

ह

दळपतविलास

शब्दकोष

अ

अजाजती=ज्यादती-३३
अजी=अभी-१०७
अजे=अभी-७७
अटकळें=चतुराई से उपाय करते-३६
अठै=यहां-३३
अणकहियै=बिना कहे-५८
अणी=फौज-६४
अणहु ती=न होती हुई-३७
अदब=शिष्टता-६७
अनै=और-७
अफीण=अफीम-६५
अर=और-६८
अरज=निवेदन-८५
अरदास=निवेदन-३१
अलाहिदा=अलग-८४
अळगो=दूर-८६
अळगेरा=अलग, दूर-७६
अवलि=अव्वल (श्रेष्ठ)-१८
अवळजिया=उलमे-१०८
असमाधि=व्याधि, अस्वस्थता-२२
अहचो=शीघ्रता-६५
अनफड=चोट, मार-५३

आ

आइ=आकर-६६
आइसी=आयेगी-१०७
आकरो=तेज-५३
आगळि=सामने-७५
आगिलै=अगले-८२
आगैकोर=आगे से-८७
आयो=आगे-२१
आडो=मार्ग रोके हुए-१६
आणि=लाकर-८४
आथुणि=सध्या-४०
आधान=गर्भ-१६
आपडिया=पकडा, पहुँचे-२१
आपणो=अपना-६६
आपपाणरो=अपने अपने-१०६
आपरा ही ज=अपने ही-७२
आपमर=मस्त (?)-८६
आपे=स्वय-५६
आरासि=आरास्तगी, सज्ना, शृंगार-५६

ए

एकठा=एकत्र-३७
एकणि प्रस्तार=एक समय-४
एथि=यहां-७४
एदल=एदलशाह

ओ

ओछै=कम-१६
ओथ=वहां-२५
ओळखै=पहिचानते-३०
ओळ भा=उलहना-७६

क

कटकी=सेना की चढाई-१०७
कठै=कहां-१०४
कन्है=पास-६७
करह=ऊंट-१२
कराडिया=करवाए-७०
करिया=करना-२५
कमणी=कड़ाई-६३
कसतो=तंग करता,
कड़ाई करता-२७, ६३
कसू भो=अफीम का घोल-११०
कहाडियो=कहलवाया-२५
कहीजिसी=कहा जायगा-३०
का=या-४०
कान=बगल-१०४
कागळ=पत्र-५१
काढि=निकाल कर-१००
काती=कार्तिक-४१
कारी=इलाज-३६
काम=क्या-११०
काठै=किनारे-१६
कानी=तरफ-१०५
किण=किसी-२७
कितरा=कितने-२३
कियै=के कारण, लिए-५
किराड=करार, आगे की ओर निकला हुआ भाग [नदी किनारे के ऊंचे टीले जो तनिक किनारे की ओर निकले रहते हैं, करार कहलाते हैं। किराड से भी यही तात्पर्य है]-२६
किरोडी=आलिम, लगान वसूल करने वाले कर्मचारी-२२
कीमू=क्या-१०६
कुमखि=अतिरिक्त सहायता-२४
कुमया=अकृपा, वैमनस्य-२७
कु वरपदै थको=कुमार पद धारण करते हुए-१८
कु वारी=जिसका वर पक्ष से सम्पर्क न हुआ हो, अनिश्चित-.०
कूच=रवाना-२६
कूटणा=कुट्टिनी-३०

कूड़ी=झूठी–२८
कूदलै=दंगल में (?)–६६
केकाण = घोड़े–१२
केथ=कहां–५३
कोट=गढ़–२६
कोठियां=अनाज रखने के स्थानों, कुओं–७१
कोतल=उद्धत, कठिनाई से नियंत्रण में आने योग्य–१८
कोरज=कोड़े–६८
कोहर–कुआ–६६
क्याल=दायमा ब्राह्मणों की एक उपजाति–३७

ख

खजीनूं=खजाना–२८
खड़िया=चले–१०१
खता=कुसूर–८६
खता खवाड़िस्या=दुःख देंगे, मजा चखायेंगे–३६
खफण=कफन–१०२
खळक=देवता की मनौती के लिए प्रसाद बोलना–४१
खलल=विघ्न–५०
खाधी=खाई–३४
खिजमतिया=सेवक–६६
खिजिया=क्रोधित हुए–६६
खीहाळां=जलते हुए उपले–३६
खुणसै=तीख–६५
खुधा=भूख–३६
खूंटिया=खूंटों से बंधे–६६
खूंदो=उजाड़ो–५६
खेजड़ी = शमी वृक्ष–५१
खेड़ो=खेटक, ढाल, ओट–५३
खेळि=कुए की खेली–६७
खोळै = गोद–३५
खोसाखूंदी = लूटपाट–५१
खोसाड़ी=छिनवाई–१६
ख्याल=ध्यान में–१०६

ग

गडा=ओले–५७
गढरोहा=गढ़ों पर घेरा डालना, आक्रमण करना–४७
गरहियो=पकड़ लिया–१०
गहिलो=पागल–६
गहे=सम्मिलित–१६
गाईजता=गाये जाते हुए–१३
गाडा=गाड़ियां–७२
गाळी=गलाया–२६
गिटक=छोटा गोल फल–३६
गुढो=रक्षकों से घिरा हुआ आत्म रक्षा का स्थान, परिग्रह–४
गुनह=अपराध–४७
गुमांन=विचार–८८
गोठि=पास–६३
गोडां=समीप–१८

आसीपणो=आसियों का धन्धा (लूटपाट)-५६

घ

घटकाळे जो=कम हिम्मत-४५
घटि=शरीर में-२२
घणासरा=बहुत से-६२
घणौ=बहुत-१६
घरवार हु ती रहै=गृहस्थाश्रम के अयोग्य हो जाय-४०
घाए=घावों में-७०
घात=चुगली-२७
घातकू=घात करने वाले-४६
घाता=डालें-६१
घातिया=रेखा-४१
घातेज्या=पहुँचाना-४६
घालो=डालो-८
घाव=प्रहार-६६
घाटि कर=गला घोट कर-१०
घिरि=घिर कर, मुड कर-३०
घेराण=वापिस करवाना-५०
घेरियो=वापस बुलाया-४७
घेरिया=घेरा-२२

च

चत्र=पहिचान के लिए लगाया जाने वाला चिन्ह, धार्मिक चिन्ह जो लडकर प्राण देने वाले राजपूत अपने शरीर पर लगाते थे। -६८
चरू=टोकना (एक बडा वर्तन)-६१
चहबचो=पानी का छोटा हौज-६८
चाकरी=नौकरी-५
चीक=कीचड (?)-८६
चीरा=लम्बे टुकडे-१०७
चुकाइ=चुका कर-३१
चुणिदा=चुने हुए-१८
चुहिया=छोटे छोटे डाभ-३६
चोखा=चावल-६६
चोपडि=चुपड कर-३६
चौगान=खेल विशेष-४४
चौफेर=चारों ओर-३७
चगा=अच्छा, तदुरस्त-८५
चप=मार-६
चीतवि=सोच कर-४०
चौधडिया=छोटे राजपूत सिपाही [वे राजपूत जो अन्न, वस्त्र और अफीम लेकर ही चाकरी करते और समय आने पर लडते थे]-३०

छ

छाकिया=छके हुए-३४
छागळियो=पानी की छागली लेकर उपस्थित रहने वाला व्यक्ति-६८

छागळी=धातु से बना जल-पात्र जो प्रायः यात्रादि के अवसर पर कंधे पर लटका लिया जाता है-६८
छाडां=छोड़ें-५२
छाल=कच-६५
छूडणहारा=छूटने वाले-६०
छूती=दूरी-३७
छहड़ो=टुकड़ा-१०७
छे=है-१०७
छोरू=छोकरों-३७
छांणा=उपले-३८

ज

जका=जो-२६
जटड़े=गांवों में रहने वाली 'जाट' जाति के लोगों के लिए प्रयुक्त अपमानजनक शब्द, गंवार-१०५
जतन=सुरक्षा, यत्न-३८
जनखि=प्रकार-१०६
जळजळाकार=जल ही जल-१
जवड़ी=जितनी-३६
जात=देवदर्शन यात्रा-४७
जाह=जा-६७
जाहरां=जब-२२
जां=जब तक-२६
जीपि=जीत कर-२२
जीमी=खाई-६७
जीवणै=दाहिने-६६
जीवदियो=प्राण त्यागे-१०३
जु=जो-६७
जुदी=अलग-६४
जूई जूई=पृथक् पृथक्-८५
जेथि=जहां-१०१
जोईजती=चाही जाती-३२
जोखैं=जोखिम-४०
जोड़ो = जोड़ी-७४
जोत्राड़ि=जुतवा कर-२५
जोरू=स्त्री-६०
जोवण=देखने-६७
जोसणियो=कवचयुक्त-६६

झ

झलाड़=पकड़वा कर-५१
झलाड़िया=पकड़वाया-५१
झालियै=पकड़े हुए-६७
झालै=ग्रहण करे-२२
झांक=आंधी-६४
झूंबिस्यो=लड़ोगे-६२
झोकि=झुका कर-६६

ट

टवके=टपकता हुआ-३६
टळि=पृथक होकर-१०५
टीको=राजतिलक-२४
टांणै=समय

ठ

ठकुराई=अधिकार, स्वत्व-२७
ठरडि=स्थान-५२
ठरडि रहिया=खेत रहे-५२
ठेलि=आगे सरका कर-८१
ठामिया=ठहराने-६४

ड

डारै=दायें-७६
डील=शरीर-१५
डोरो=धागा, तिनका-५५
डडोरा=डंडा-३४
डाम=दाग-३७

ढ

ढालियो=ढल गया-८३
ढिग=ढेर-८८
ढील=देरी-६७
ढूकै=आगे बढ़े-१००
ढाढा=पशु-६५
ढाहर=झाड़ी, की काटेदार सूखी पतली डालियों का एकत्रित समूह-५१

त

तठै=वहां-३०
तपाराम=कृपा-१७
तर=तो-५२
तरगसवधे=धनुर्धारी-२०
तळ्डी=छोटी तलाई, बावड़ी-८१
तसलीम=नमस्कार-८८
तहमल=धैर्य-१६
ताई =लिए-८५
ता पछै=उसके बाद-१५
तार=तेजी-६६
ताहरा=तब-६७
तिणि=उसने-६८
तितरै=इतने में-६७
तिम=उसी प्रकार-१०५
तिया=उन-१७
तियै=उसने-११
तिवारै=उस समय-४
तिहा=वहा-७
तिस=प्यास-६८
तिसडै मै=ऐसे समय-८
तिसडो=वैसा-२७
तीजो=तीसरा-२
तूटै=टूटे-३०
तेडि=बुलवा कर-६८
तेथ=वहा-५७
तैरा=उसके-६५
तैहू =इसलिए-६७
तोनै=तुमको-११
तोपची=छोटी तोप-६८
त्रापतो=कूदता हुआ-६६

तिरसियां=प्यासे-८६
तां=तब तक-२६
तांह्=वहां-६३
तैं=से-२

थ

थकी=से-२६
थको=हुए-५३
थानकि=स्थान-१३
थापी=स्थापित की-३७
थी=से-५०
थेई=तुम भी-६२
थोक=समूह-१
थां = आपको-६६
थांह्रो=आपका-६६
थैं=से-२

द

दखल=कब्जा, अधिकार-४२
दड़बड़ाया=धमकाया-३३
दमामो=नक्कारा-८
दरसाव=दर्शन, प्राकट्य-७८
दरीखानो=दरबारियों के बैठने का स्थान-७६
दाइ आवै=अच्छा लगे-६६
दाग दियण=दाहक्रिया के लिए-१०३
दारू=बारूद-६
दारू=शराब-३३
दिनें=उम्र-९०
दियण=देने-१५
दिराड़ी=दिलवाई-७४
दिलगीराई=कमहिम्मत-९०
दिलासा=धीरज-९०
दिसा=तरफ-१०१
दिहाड़ा=दिन-८६
दीकरो=लड़का, पुत्र-६५
दीठो=देखा-१०३
दीसां=दिखाई दें-७२
दूणा=दुगुने-१३
दूहविसि=दुःख देगा-६५
देज लेज=देने लेने-२७
देस मारियो=देश को लूटा-७२
देही=शरीर-२६
दोघणो=बुरा-२६
दोह्रा=कष्ट प्राप्त-२८
दोह्रो=कष्टप्रद-३५
दोहीत=दौहित्र-७०
दौड़=आक्रमण-४३
दोढ=डेढ-२६

ध

धको=हमला, भय-९२
धणी=स्वामी, अधिकारी-८६
धारोळा=झड़ी-५७
धावड़=धाय का पुत्र (?)-२७
धू=ध्रुव-१३

न

नव्वाडियो=दौड़ाया-४६
नगारो करवायो=युद्ध के लिए कूच का नक्कारा बजनाया -६३
नटि गया=इनकार कर गया-१०
नदर=नजर-६५
नसाडिया=गायब हो गए, भग गये-१०४
नाठौ=भगा-६६
नान्हा=छोटे-६७
नाळा=पानी का नाला-८
नाळि=तोप की नाल-५
निजीक=समीप-८८
निबळो=मामूली-६६
निरवहियो=निकल भागा-३०
निरवाहता=वहन करते हुए-१३
नीपना=उत्पन्न हुए-१
नीसरण=निकलने-५६
नू=को-२६
नैं=और-४६
नै=को-४६
नै=कर-५
नेड़ा=समीप-६४
नाखो=डालो-६८

प

पखै=बिना-४६
पगा=कारण-३२
पगे लागण=पालागन के लिए-२५
पड़ै=नाद-२२
पडगना=परगने-४
पडींगाया=सभाले(?)-७०
पणखो=छाल से बनाया हुआ पदार्थ विशेष-२६
पणि=भी-२४
पनाह=रक्षा-७८
परणि=विवाह कर-१२
परणीजण=विवाह करने के लिए-१२
परहा=दूर-२८
परहेरो=अलग-८७
परि=भांति-७८
परिया=उधर से-८३
पर=लेकिन-१६
पहनो=चौडाई का नाप-३७
पहुता=पहुँचे-७५
पहोड=एक जाति विशेष-२७
पाण=पास-३१
पाखती=पास में-३६
पाखेडी=पास में-३८
पाघडी=पगडी-१०४
पाछो=वापिस-३८
पाट=सिंहासन-६
पाटा=मरहमपट्टी-३०

पाणीलंघणो=गमी के बाद कराई जाने वाली विशेष रस्म जिसके अनुसार मृतक के परिवार वालों को अन्न-जल ग्रहण करवाया जाता है–८९
पातळ=पत्तल, भोजन–६७
पार घाति=पार पटक कर–८२
पाळनां=पालन करते हुए–१३
पाळा=पैदल–८६
पाल=रोकू–१००
पासै=तरफ, अलग, समीप–६६, ५०, ६७
पिण=परन्तु–६६
पिण=भी–६६
पीड़ावै=दुखना–७६
पीड़ी=संकुचित–६१
पीलवान=महावत–१०
पुकारिया=पुकार की–७३
पूठि=पीठ, पीछे–३४, ६६
पूठाताणि=नितंबों के बल–५३
पूर=वेग–८
पेस=पेश, भेंट, समर्पण–६२
पेसकसि=नजर, भेंट–६६
पैंठो = घुस गया–५
पैसारो=प्रवेश–१२
पोत्यां=धोती के स्थान पर लपेटा हुआ कपड़ा (बिना सिला कपड़ा)–६४
पोसं=प्रकार, पोशाक–८६
पौळि=द्वार–१३
पांभड़ियां=जूतियां–७८

फ

फतै–विजय–२१
फरमाइसैं=फरमायेंगे–८०
फरासखानो=फराश का काम–८१
फाटि=फट कर–५
फिटा करो=छोड़ो–३६
फिरवाज=धातु या कपड़े के घेरे के अंदर की ओर लगाई जाने वाली पतली वस्तु [लहंगे या घघरे के नीचे के छोरों के भीतर की तरफ लगाया जाने वाला पतला वस्त्र जिसके बोझ से घघरे के छोर तनिक भारी होकर लटकते रहते हैं।]–३७
फिरिस=फिरंगी–२६
फिरंग=विदेश (विलायत)–१०७
फूको=नशा न लाने वाली एक शराब (जौ की शराब)–४६
फोग=मरुस्थलीय झाड़ विशेष–६६

व

वकसाया=माफ करवाया-५१
वकमी=वख्शी (एक पदाधिकारी)-४८
वकसीस=रीझ कर दान देना-३३
वकै छै=वक रहे हैं-१०३
वजरिया=क्रोधित हुए-१०२
वठे=वहां-१३
वधिया=वध गई, टूट गई-३४
वाई=लड़की-१४
वाग=लगाम-६१
वायरी=पत्नी-१७
वालि=जला कर-६
वाह्यो=मारा, वार किया-१००
वि=दो-१७
विछावणा=विछायत-८८
विसरै=दूसरे-३८
विहुँ=दोनों-७४
वीजा=दूसरे-६७
वीजीए=दूसरी (बहुवचन)-८६
वीहो=डरते-४५
वुलावण=बीमारी के समय तबियत पूछने के लिए आने का शिष्टाचार-४०
वुहारण=साफ करने-८८
वूकिया=भुजायें-५३
वूडि=डूब कर-६
वेऊ=दोनों-१८
वेवे=दोनों-१०१
वैसाणि=वैठा कर-३५
वैसिस=वैठूंगी-२६
वाहिण=वाहन, सवारी-७६

भ

भगति=सेवा, मनुहार-८४
भळाओ=सम्भलाओ, भेजो-४५
भागो=भग गया-२१
भाजि=भाग कर-७
भाणेज=भानजे-१०५
भानै=भले ही-६६
भिळो=भिड़ो-६६
भीतरवाडिया=अन्दर रहने वाले, अधीनवर्ती-५६
भुआळ=सिर के बाल-१०४
भुग्गी=भक्ष लेने वाली-७६
भूमिया=भूमिपति-१४
भेळा=एकत्र-१०१
भेळी=छिन्न भिन्न की-७०
भोळै=भुलावे में-४७
भौ=भय-७७
भूंजाई=खसोटी-६१

म

मढी=झोंपड़ी, छोटी कोठरी-५७
मया=कृपा

मरणै सू =मरने को उद्यत, मरण प्राय:–६७
सराड़ि=आक्रमण करवा कर–१६
सरोड़ाइ=रूठ कर, छुड़वा कर–६२
मवजूद=उद्यत–३६
मसलत=परामर्श–३१
मसलि=योग्यता के आधार पर विभाजित किया गया विभाग–८२
महल=दूरी का एक नाप–८१
महलो=''दागे मोहल्ली'' की प्रथा के अनुसार घोड़ों का निरीक्षण–(?)४८
महसल=परामर्शद, प्रमुख कारिन्दे(?)–७६
माणस=आदमी–५२
माथै=ऊपर–७
माथै हुंता=सिर पर से–६४
मार=चोट, घाव–५१
मारि=लूट कर–३१
मारिया=पीटा–४४
मिहरवाणी=दया–१०
मुकाम=स्थान, टिकाव, पड़ाव–८८
मुजरो=जुहार–७७
मुणारै=मीनार पर, मुंडेर पर–७
मुणिसांह=कहेंगे–६३
मुहकम=दृढ़–५१
मुहत=मुहूर्त–१५
मूळ उपाड़ण=जड़ उखाड़ने वाले-१३
मेल्हाण=डेरा–३५
मेल्हि=भेज कर–१०१
मेल्ह्यो=रखा–७५
मो=मेरे–८०
मोकळी=पर्याप्त–५७
मोजड़ी=जूती–४०
मोटा=बड़े -११
मोनूं=मुझे–६६
मगित जणां=याचक जनों–१२
मंडता=सजते–८८
मंडी=बनी–१०५
मांहे=में–१७
मींचि=मौत–६
मुंहडै करि=सामने कर–६८
मूंकिया=भेजे (प्रदान किये जाने का संदेश भेजा)–४
मूंडो=बिना सींग वाला–६६
मूंआ=मरे–१०२
म्हांहरै कियै=हमारे द्वारा–११

र

रज=स्वत्व–१०५
रजू=राजी, मंजूर–१०७
रमतां=खेलते समय–२६
रळि=मिल कर–१०३
रळियाइत=प्रसन्न–१०८

वधावणा = मांगलिक अवसर पर गाये जाने वाले गीत, नाच आदि–१४
वळिया = मुड़े–३१
वळे = फिर–२२
वस=वस्तु, सामान–४४
वसतवानो=वस्तुएं, सामान–३२
वसि=वश में–२७
वहिल = बेली–२५
वाखर=आंते–४०
वागो=वागा–मुगलकालीन वस्त्र जो घुटनों तक लटका है–४०
वाटळा = कटोरे, पात्र–५८
वाढण=काटने–१०४
वाणियें=बनिए–७
वादित्र=बाजे–१२
वाय करतो=वायुजन्य–३७
वारो=चेचक के चढ़ने उतरने का क्रम–८३
वाळण=लौटाने–५
वास=निवास–५०
वासिया=रख दिए–२९
वाहणहारो=वार करने को उद्यत–११०
वाहळो=पानी का नाला–१९
वाहुड़िया=लौटे–४६
विखो=देश-निर्वासन-जन्य विपत्ति–४
विगर=बिना–५३
विचळिया=विचलित हुए–६
विचाळा=बीच में से–१८
विणासियो=विनाश किया–२८
विरस=नाराज–५६
विरागिया=उदासीन हुए–५६
विसायो=क्रोधयुक्त–७२
विसेखि=विशेष कारण–६
विश्रामी=शांत हुई, मरी–६७
वीच की=बीच बिचाव किया–३४
वीचि=बीच में–८
वीनमियो=विनय की–२८
वुगचो=वस्त्र रखने का कपड़े का बस्ता या झोला–८०
वूही=हुई–५६
वेथी=अंतर–२४
वेदन=वेदना–३८
वेळा=अवसर–६२
वेगो=शीघ्र–३७
वांसै=पीछे–६९
वींटियो=घेर लिया–२०

स

सकळात=बचाव, सुरक्षा–५८
सजोसणिया=कवच व शस्त्रास्त्र से युक्त–२०
सदके=न्यौछावर–८
सधैगा=सकेगा, समर्थ होगा–१०७

सबळ=तकडी, घमासान–५२
समइयै=समय में–५
समदान=सामान–८२
समराइ=सवरा कर–१०८
समाधिया=स्वस्थ हुए–२६
समियाणो=शामियाना–८६
सरणै=शरण में–१०
सरे=तीर–५१
सलामति=चिरस्थायी–६०
सहु=सब–१०६
साढुडा=समीप–४१
साजी=स्वस्थ, ठीक–१०३
साथरवाडो=मृतक के घर शोक प्रदर्शन हेतु आने वाले व्यक्तियों के बैठने के लिए बिछाया गया वस्त्र जो १२ दिनों तक बिछा ही रहता है–८८
साधण=साधने–२१
सामधरमी=स्वामिभक्त–२८
सारा=यत्न–७०
सारा=मन–८७
साळौ=माला–२६
साहो=विवाह का दिन–६१
सिधाया=चले गये (सम्मान सूचक क्रिया)–१०६
सिर=से, पर–७०
सिरजिया=बनाया–८६
सिरपाव=सिरोपाव [सम्मान निमित्त बड़ों द्वारा दी जाने वाली भेंट विशेष]–७४
सिरै=श्रेष्ठ–८२
सिलह=शस्त्र–६३
सीख=विदा, जाने की आज्ञा–५६
सीतळा=चेचक, शीतला माता–७८
सीधो=खाने का सामान (आटा, दाल आदि)–१८
सीमफळीस=सेम फली–२६
सीरख=रुई से बनी रजाई–८४
सुकन=शकुन–२५
सुखपाल=पालकी विशेष–८४
सेई=ऐसे ही–६०
सेती=से–६६
सेवा=पूजा–१०६
सेहति=स्वास्थ्य–८७
सोहला=वैवाहिक गीत–१३
सकळि=साकल, संधि–८८
सचीत=चिन्तित–६०
सजोह=कवच–६४
सदल=चंदन–८४
सबाह्या=सभाला–४०
साजति=सामग्री, सजावट–८८
सापिनै=सौंप कर–२१
साभळियो=सुना–१००
सामहा=सामने–५०
सामु=सामने–१६

सिंगारी=सजाई-१३
सुंवार=प्रात:काल-८६
सूंटी=नाभि-३८
सेहथि=अपने हाथ से-८
सैमुखि=सन्मुख-१५

ह

हक हुया=मर गए-७
हजूर=सामने-१०
हथाळी=हथेली-१०७
हद=सीमा, औक़ात-१००
हळवो=हलका-५४
हलावतां=धीरे धीरे चलाते हुए-१०६
हवालै=सुपूर्द=८५
हाथड़=हाथों-५३
हालो=चलो-१०२
हिवड़ां=अब-५०
हिवै=अब-३१
हुजदार = पदाधिकारी-२८
हुता=थे-२३
हुवण=होने-१६
हुवाल=हवाल, हालत-३०
हुवंत=होता-१६
हेक=एक-१०५
हेकरसो=एक वार-३८
हेकलो=अकेला-६२
हेठ=नीचे-१०६
हेल=आक्रमण(?)-१०६
हेल हुई=बुरी बीती-१०६
हिंदुग देस=हिंदु राजाओं का देश (राजस्थान)-२०
हुंता=से-१०३
हूं=मैं, से-६७, ६५